इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

BPAG-174

सतत विकास

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. सी. वी. राघावुलु,
नागार्जुन विश्वविद्यालय
के पूर्व कुलपति,
गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

प्रो. रमेश के. अरोड़ा
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

प्रो. ओ. पी. मिनोचा
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर,
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान,
नई दिल्ली।

प्रो. अरविन्द के. शर्मा
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर,
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान,
नई दिल्ली।

प्रो. आर. के. सप्रू
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

प्रो. साहिब सिंह भयाना
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

प्रो. बी. बी. गोयल
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

प्रो. रवीन्द्र कौर
लोक प्रशासन विभाग
उसमानिया विश्वविद्यालय
हैदराबाद।

प्रो. सी. वैंकटैया
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
मुक्त विश्वविद्यालय
हैदराबाद।

प्रो. जी. पलनीथुराई
राजनीति विज्ञान और विकास
प्रशासन विभाग, घंधीग्राम ग्रामीण
विश्वविद्यालय, घंधीग्राम

प्रो. रमनजीत कौर जोहल
यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग,
पजांब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

प्रो. राजबंस सिंह गिल
लोक प्रशासन विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

प्रो. मंजूशा शर्मा
लोक प्रशासन विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।

प्रो. लालनिहज़ोवी
लोक प्रशासन विभाग
मिज़ोरम केद्रींय विश्वविद्यालय

प्रो. निलिमा देशमुख
लोक प्रशासन की पूर्व प्रोफेसर
राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर
विश्वविद्यालय नागपुर।

प्रो. राजवीर शर्मा
महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ
मैनजमेंट स्टडीज, दिल्ली।

प्रो. संजीव कुमार महाजन
लोक प्रशासन विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला।

प्रो. मनोज दीक्षित
लोक प्रशासन विभाग, लखनऊ
विश्वविद्यालय लखनऊ।

प्रो. सुधा मोहन
नागरिकशास्त्र और राजनीति
विभाग, मुबंई विश्वविद्यायलय,
मुबंई।

इग्नू संकाय

प्रो. प्रदीप साहनी
प्रो. ई वायुनदंन
प्रो. उमा मेडूरी
प्रो. अलका धमेजा
प्रो. डॉली मैथ्यू
प्रो. दुर्गेश नंदिनी

सलाहकार

डॉ. संध्या चोपड़ा
डॉ. ए. सेंथमीज़ कनल

संयोजक

प्रो. डॉली मैथ्यू
प्रो. दुर्गेश नंदिनी

पाठ्यक्रम समन्वयकः प्रो. अलका धमेजा, सामाजिक विज्ञान विध्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संपादकः (सामग्री, प्रारूप और भाषा). प्रो. अलका धमेजा, सामाजिक विज्ञान विध्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री वाई. एन. शर्मा
सहायक कुलसचिव
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

सितंबर, 2021

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN:_____

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साधन द्वारा, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली–110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://www.ignou.ac.in देखें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुलसचिव, सा. नि. वि. प्र. द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

मुद्रित : ऐजुकेशनल स्टोर्स, एस–5 बुलन्दशहर रोड इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट–1 गाजियाबाद (उ.प्र.)–201009

पाठ्यक्रम तैयारी दल

इकाई	खंड	इकाई लेखक	इकाई अनुवादक
खंड 1 सतत विकास की अवधारणा			
इकाई 1	सतत विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र	डॉ. आर. के. सप्रू, लोक प्रशासन के प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।	प्रतिभा रानी
इकाई 2	सतत विकास के प्रमुख घटक	डॉ. अनुपमा पूरी महाजन, पूर्व उत्तर–डॉक्टोरल शोधकर्ता, लोक प्रशासन विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (इकाइयां 2, 3 और 4)	ज्योती मलिक
इकाई 3	सतत विकास के दृष्टिकोण		प्रतिभा रानी
इकाई 4	सतत विकास के लक्ष्य		पुष्पा मिश्रा
खंड 2 विकास, सततता और जलवायु परिवर्तन			
इकाई 5	वैश्विक सामूहिक धरोहर और जलवायु परिवर्तन की अवधारणाएं	डॉ. सुस्मिता मित्रा, सहायक प्रोफेसर, सामाजिक विभाग परिषद, नई दिल्ली (इकाइयां 5 और 6)	प्रतिभा रानी
इकाई 6	सतत विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन		प्रतिभा रानी
इकाई 7	विकास सततता और जलवायु परिवर्तन के बीच परस्पर संबंधः विभेदित जिम्मेदारियों का केस	डॉ. कन्नन अंबालम, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख, लोक प्रशासन और विकास प्रबंधन विभाग, वोलेगा विश्वविद्यालय, नेकेमटे, इथियोपिया	प्रतिभा रानी
खंड 3 स्वास्थ्य, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा			
इकाई 8	सतत विकास और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंध	डॉ. कन्नन अंबालम, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख, लोक प्रशासन और विकास प्रबंधन विभाग, वोलेगा विश्वविद्यालय, नेकेमटे, इथियोपिया (इकाइयां 8 और 9)	प्रतिभा रानी
इकाई 9	स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा में हरित और अभिसरण प्रौद्योगिकियों की भूमिका		प्रतिभा रानी
इकाई 10	सतत विकास में शिक्षा की भूमिका	डॉ. आर. के. सप्रू, लोक प्रशासन के प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।	प्रतिभा रानी
खंड 4 सतत विकासः भविष्य पथ			
इकाई 11	सतत विकास में नवाचारी नीतियों की भूमिका	डॉ. निवेदिता शर्मा, सहायक प्रोफेसर, सामाजिक विकास परिषद, नई दिल्ली (इकाइयां 11, 12, 13 और 14)	प्रतिभा रानी
इकाई 12	निष्पक्षता और न्याय की पारिस्थितिक सीमाओं की पहचान		प्रतिभा रानी
इकाई 13	संसाधन उत्पति और क्षमता वृद्धि के वैकल्पिक तरीके		प्रतिभा रानी
इकाई 14	सतत विकास मे गैर–राज्य हितधारकों की भूमिका		प्रतिभा रानी

मुद्रण उत्पादन

आवरण रचना

पाठ्यक्रम विषय–सूची

पाठ्यक्रम परिचय		पृष्ठ
खंड 1	**सतत विकास की अवधारणा**	**9**
इकाई 1	सतत विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र	11
इकाई 2	सतत विकास के प्रमुख घटक	24
इकाई 3	सतत विकास के दृष्टिकोण	40
इकाई 4	सतत विकास के लक्ष्य	59
खंड 2	**विकास, सततता और जलवायु परिवर्तन**	**83**
इकाई 5	वैश्विक सामूहिक धरोहर और जलवायु परिवर्तन की अवधारणाएं	85
इकाई 6	सतत विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन	98
इकाई 7	विकास सततता और जलवायु परिवर्तन के बीच परस्पर संबंधः विभेदित जिम्मेदारियों का केस	113
खंड 3	**स्वास्थ्य, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा**	**127**
इकाई 8	सतत विकास और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंध	129
इकाई 9	स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा में हरित और अभिसरण प्रौद्योगिकियों की भूमिका	143
इकाई 10	सतत विकास में शिक्षा की भूमिका	158
खंड 4	**सतत विकासः भविष्य पथ**	**169**
इकाई 11	सतत विकास में नवाचारी नीतियों की भूमिका	171
इकाई 12	निष्पक्षता और न्याय की पारिस्थितिक सीमाओं की पहचान	184
इकाई 13	संसाधन उत्पत्ति और क्षमता वृद्धि के वैकल्पिक तरीके	191
इकाई 14	सतत् विकास में गैर–राज्य हितधारकों की भूमिका	198
उपयोगी लेख		

पाठ्यक्रम प्रस्तावना

सतत विकास सिद्धांत और व्यवहार में सबसे अधिक विवादित शब्द है। प्रारंभ में, सततता के विचार पर चर्चा की गई और पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में इसका उपयोग किया गया, लेकिन धीरे–धीरे यह विभिन्न विकास क्षेत्रों में समग्र और व्यापक बन गया; यह एक बहू–विषयक अवधारणा है, जो सततता के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय आयामों में संतुलन के बारे में बात करती है। 1987 में, पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट ने इसे 'हमारा सामुहिक भविष्य' शीर्षक दिया; 'सतत विकास' शब्द को विकास के रूप में परिभाषित किया, 'जो भविष्य की पीढ़ियों की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है'। इस परिभाषा में विकास की अवधारणा, जरूरतों और सततता की अवधारणा को शामिल किया गया है।

सतत विकास सामाजिक उन्नति की एक प्रक्रिया को संदर्भित करता है, जो विकास का अधिक न्यायसंगत और पर्यावरणीय रूप से जागरूक स्वरूप प्रस्तुत करता है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय उद्देश्यों को सावधानीपूर्वक एकीकृत करने की आवश्यकता होती है। पर्यावरणीय सततता, आर्थिक सततता और सामाजिक सततता सतत विकास के तीन स्तंभ है। कोविड 19 महामारी ने, जिसका सामना हम 2019 से कर रहे हैं, असतत विकास प्रक्रिया के कुरुप परिणामों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया है।

यह पाठ्यक्रम विकास और पर्यावरण के बीच अति प्रभावशाली संतुलन बनाने की चुनौतियों की जांच करने का प्रयास करता है। यह पाठ्यक्रम 4 खंडों और 14 इकाइयों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक खंड सतत विकास के कुछ प्रमुख पहलुओं या अन्य के बारे में विस्तार से बताता है।

खंड 1 सतत विकास की अवधारणा

पाठ्यक्रम के प्रथम खंड में 4 इकाइयां शामिल है। **इकाई 1** का शीर्षक 'सतत विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र' है। यह अवधारणा की विभिन्न परिभाषाओं को रेखांकित करते हुए सतत विकास के वैचारिक पहलुओं पर चर्चा करती है। इस अवधारणा के क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय आयामों का विश्लेषण भी किया गया है। इकाई सतत विकास के सिद्धांतों और विशेषताओं की व्याख्या भी करती है।

इकाई 2 का शीर्षक 'सतत विकास के प्रमुख घटक' है। सतत विकास के प्रमुख घटक समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण हैं। सततता की अवधारणा को समझने के लिए इन तीन घटकों का प्रभावी अंतरसंबंध बहुत महत्वपूर्ण है। यह इकाई इन विभिन्न घटकों और उनके अंतरसंबंधों की विस्तृत तरीके से व्याख्या करती है।

खंड की **इकाई 3** 'सतत विकास के दृष्टिकोण' है। सतत विकास की अवधारणा न केवल सततता के पारिस्थितिक परिप्रेक्ष्य, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण पर भी चर्चा करती है। विभिन्न घटकों और इसमें शामिल कारकों को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण सतत विकास के दृष्टिकोणों का अध्ययन करना है। यह इकाई विभिन्न दृष्टिकोणों जैसे यथास्थिति दृष्टिकोण, सामुदायिक क्षमता निर्माण दृष्टिकोण, औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण, एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण, मानव विकास दृष्टिकोण और हरित लेखा दृष्टिकोण का सतत विकास के संदर्भ में एक चित्रण प्रस्तुत करती है।

खंड की **इकाई 4** 'सतत विकास के लक्ष्य' है। 2015 में संयुक्त राष्ट्र (यू एन) ने एजेंडा 2030 प्रस्तुत किया, जिसमें 17 एस डी जी और 169 लक्ष्य निर्धारित किए गए थे। जिसके

लिए 193 सदस्य राष्ट्रों ने अपनी प्रतिबद्धता की प्रतिज्ञा की थी, और इन लक्ष्यों को 2016 में लागू किया गया था। लक्ष्य और उद्देश्य समय–विशिष्ट हैं और विश्व की जनसंख्या की विभिन्न समस्याओं के विरुद्ध लड़ाई के लिए एक वैश्विक रिपोर्ट कार्ड के रूप में माना जाता है, और यह 2015 से 2030 तक की अवधि में निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंचने का विचार करते हैं। यह इकाई भारत के लिए विशेष संदर्भ के साथ सभी एस डी जी का भी वर्णन करती है।

खंड 2 विकास, सततता और जलवायु परिवर्तन

इकाई 5 'वैश्विक सामूहिक धरोहर और जलवायु परिवर्तन की अवधारणाएं' है। यह इकाई दो महत्वपूर्ण अवधारणाओं अर्थात वैश्विक जन और वैश्विक सामुहिक धरोहर पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर चर्चा करती है। इसके अतिरिक्त, यह विस्तार से उल्लेख करती है कि जलवायु परिवर्तन को प्रायः जन की वैश्विक समस्या के रूप में क्यों जाना जाता है। यह जन की त्रासदी की अवधारणा पर भी चर्चा करती हैं और मानव जाति की विरासत का वर्णन करती है। अंत में, यह जलवायु परिवर्तन के लिए वैश्विक शासन की प्रासंगिकता की जांच करती है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन विभिन्न देशों के बीच एक समझौता या संधि है, जो सामान्य रूप से, संयुक्त राष्ट्र (यू एन) के नाम पर होता है। **इकाई 6** 'सतत विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन' के विषय में है। यह इकाई पृथ्वी शिखर सम्मेलन 1992, एजेंडा 21, यू एन फ्रेमवर्क जलवायु परिवर्तन पर सम्मेलन और जैविक विविधता पर सम्मेलन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके अतिरिक्त, यह सतत विकास पर विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का महत्वपूर्ण मूल्यांकन करती है।

इकाई 7 'विकास सततता और जलवायु परिवर्तन के बीच परस्पर संबंधः विभेदित जिम्मेदारियों का केस' की जांच करती है। यही इकाई का शीर्षक भी है। यह विकास और सततता की अवधारणाओं की व्याख्या करती है। यह जलवायु परिवर्तन के अर्थ और प्रभाव को भी समझाती है। इसके अतिरिक्त, यह विकास, सततता और जलवायु परिवर्तन के बीच अंतरसंबंध पर भी चर्चा करती है।

खंड 3 स्वास्थ्य, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा

पाठ्यक्रम का तृतीय खंड सतत विकास के संदर्भ में 'स्वास्थ्य, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा के विभिन्न विषयों पर चर्चा करता है। इस खंड में, **इकाई 8** 'सतत विकास और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंध' पर है। यह सततता के संबंध में खाद्य सुरक्षा के प्रमुख आयामों को सामने लाती है। इसके अतिरिक्त यह विभिन्न कारकों पर प्रकाश डालती है, जो खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करते हैं जैसे हरित क्रांति, जैव–विविधता की हानि, पशुधन और मत्सय पालन की कमी, मरुस्थलीकरण और जलवायु परिवर्तन।

हरित प्रौद्योगिकियां पर्यावरण विज्ञान का अनुप्रयोग भाग है, जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरण पर मानव गतिविधि के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने का प्रयास करती है। हरित प्रौद्योगिकियां या सततता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण साधनों में से एक बनकर उभरी है। इस पाठ्यक्रम की **इकाई 9** 'स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा में हरित और अभिसरण प्रौद्योगिकियों की भूमिका' के विषय में है। यह इकाई हरित और अभिसरण प्रौद्योगिकियों के अर्थ और विशेषताओं पर चर्चा करती है। अंत में, इकाई स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा में हरित प्रौद्योगिकियों की भूमिका पर बल देती है।

इकाई 10 'सतत विकास में शिक्षा की भूमिका' पर प्रकाश डालती है, जो इकाई का शीर्षक भी है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय सततता प्राप्त करने के लिए शिक्षा एक प्रमुख साधन है। मूल रूप से, शिक्षा का उपयोग आर्थिक कल्याण, सामाजिक निष्पक्षता और लोगों के लोकतांत्रिक मूल्यों को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता है। यह इकाई सततता प्राप्त करने में शिक्षा के महत्व को सामने लाती है। सतत विकास के लिए शिक्षा, पर्यावरण को हानि पहुंचाए बिना, लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती है। इकाई सतत विकास को प्राप्त करने में शिक्षा के दृष्टिकोण पर चर्चा करती है।

खंड 4 सतत विकासः भविष्य पथ

इकाई 11 'सतत विकास में नवाचारी नीतियों की भूमिका' पर है। बढ़ती असमानताएं और असतत उत्पादन और उपभोग स्वरूप सतत विकास को प्राप्त करने में प्रमुख बाधाएं हैं। यह इकाई सतत विकास और इसके घटकों की मूल अवधारणाओं पर चर्चा करती है। यह उन तरीकों को रेखांकित करती है जिससे नीतिगत नवाचार, इन बाधाओं को सतत विकास से दूर करने का प्रयास करते हैं। यह सतत विकास के लिए नीतियों के लक्ष्यों और सुविधाओं को भी दर्शाती है। इस संदर्भ में, इकाई सततता को प्राप्त करने के लिए नीतिगत नवाचारों के विभिन्न कारकों पर चर्चा करती है। पाठ्यक्रम की **इकाई 12** 'निष्पक्षता और न्याय की पारिस्थितिक सीमाओं की पहचान' पर है। यह इकाई पर्यावरण के संबंध में न्याय की अवधारणा को समझाती है और पर्यावरणीय न्याय और आदिवासियों के अधिकारों के बीच अंतरसंबंध को सामने लाती है।

इकाई 13 का शीर्षक 'संसाधन उत्पत्ति और क्षमता वृद्धि के वैकल्पिक तरीके' हैं। उपभोग पैटर्न और संसाधन उपयोग ने पर्यावरण और सततता के स्तर पर अत्यधिक प्रभाव डाला है। सततता प्राप्त करने के लिए, हमें सतत प्रौद्योगिकी का पता लगाने की आवश्यकता है और सतत विकल्पों का निर्माण करने की भी आवश्यकता है। इस संदर्भ में, यह इकाई सतत विकल्प बनाने की प्रासंगिकता पर चर्चा करती है। इसके अतिरिक्त यह पर्यावरणीय लाभ प्राप्त करने के लिए वैकल्पिक संसाधन उपयोग के लाभों को सामने लाती है। सभ्य सामाजिक संगठन अंतरराष्ट्रीय जागरूकता बढ़ाने, वैश्विक नीति एजेंडा को आकार देने, सरकारों, नागरिकों और उद्योगों को शिक्षित करने में सक्षम है, और घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण शासन को मजबूत करते हैं।

इकाई 14 का शीर्षक 'सतत विकास में गैर–राज्य हितधारकों की भूमिका' है। यह सतत विकास में विभिन्न हितधारकों की प्रासंगिक भूमिका की चर्चा करती है। यह इकाई सतत विकास की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताती है, और सतत विकास में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका के बारे में भी चर्चा करती है। सतत विकास में श्रमिक संघो, निगमों और विश्वविद्यालयों जैसे विभिन्न हितधारकों के योगदानों की जांच भी यह इकाई करती है।

खंड

1

सतत विकास की अवधारणा

इकाई 1

सतत विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र 11

इकाई 2

सतत विकास के प्रमुख घटक 24

इकाई 3

सतत विकास के दृष्टिकोण 40

इकाई 4

सतत विकास के लक्ष्य 59

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 सतत विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र*

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 सतत विकास का अर्थ

1.3 सतत विकास का स्वरूप

1.4 सतत विकास के क्षेत्र

1.5 सतत विकास के महत्वपूर्ण सिद्धांत और विशेषताएं

1.6 निष्कर्ष

1.7 शब्दावली

1.8 संदर्भ लेख

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बाते समझ सकेंगे :

- सतत विकास का अर्थ और स्वरूप;
- सतत विकास के क्षेत्र की व्याख्या; तथा
- सतत विकास के सिद्धांत और विशेषताएं।

1.1 प्रस्तावना

विकास के साहित्य में सतत विकास की महत्वपूर्ण भूमिका और स्थान है। सतत विकास विकसित और विकासशील दोनों देशों के विकास विशेषज्ञों, पर्यावरणवादियों और राष्ट्रीय नेताओं के बीच तर्क–वितर्क और बातचीत का केंद्र है। संयुक्त राष्ट्र और उसकी एजेंसियों, और कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान और आयोग और विश्व नेता सतत विकास के महत्व को समझते हैं। वे निर्णायक दृष्टिकोण के हैं, जो वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के लिए पृथ्वी के संसाधनों का मूल्य घटा रहे हैं, जोकि भावी पीढ़ियों के लिए संभातन विनाशकारी हैं। क्या भविष्य की पीढ़ियों को और न केवल वर्तमान पीढ़ियों को, उन पृथ्वी संसाधनों की आवश्यकता है ? और वे क्या उत्पादन करेंगे। अत्यधिक खेती, जंगलों का विनाश, आर्द्रभूमि को भरना, सभी कुछ जनसंख्या विस्फोट से चालित हो रहा है। यह अंततः उन्हें स्वयं नवीनीकृत करने के लिए तथाकथित नवीकरणीय संसाधनों की क्षमता को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वे निरंतर आगे उत्पादन नहीं कर सकते। एक निश्चित स्तर से परे, वर्तमान में केवल अधिक प्राप्त करने की आकांक्षा भविष्य के लिए उत्पादन को कम कर देगी।

जिन मूलभूत प्रश्नों पर ध्यान देने की आवश्यकता है, वे हैं "क्या आर्थिक निर्णयो से उत्पन्न पर्यावरणीय अवनति के परिणामस्वरूप आने वाली पीढ़ियों की स्थिति आज से और भी खराब होगी? और क्या प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव के कारण विकास

---

* योगदानः डॉ. आर के सप्रू, लोक प्रशासन के प्रोफेसर (सेवानिवृत), पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

गतिविधि के पैमाने में वृद्धि सतत होगी ? सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन के विषय में यह कहा जा सकता है कि हमारे बच्चे और आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसी पृथ्वी विरासत में मिलेगी जो केवल न्यूनतम है– और हमारे आज से खराब नही। यह शायद महान और उच्चतम आकांक्षाओं में से एक है, जो हमें स्वयं को मनुष्यों के रूप में तैयार कर सकते हैं। विश्व भर में हो रहे परिवर्तनों को देखते हुए, यह व्यापक रूप से अनुभव किया जा रहा है कि जिस तरह की दुनिया हम अपने बच्चों और पोतों के लिए वसीयत करेंगे, पर्यावरणीय गिरावट के परिणामस्वरुप बेहतर नहीं हो सकती हैं, जो कि आज किए गए राजनीतिक और आर्थिक फैसलों के परिणामस्वरूप होता है। गंभीर चिंता का विषय यह है कि जो लोग आज आर्थिक विकास का लाभ ले रहे हैं, वे भविष्य की पीढ़ियों को अत्यधिक नुकसान पहुंचा सकते हैं और प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचा सकते हैं और नष्ट कर सकते हैं और पृथ्वी के पर्यावरण को प्रदूषित कर सकते हैं।

सतत विकास, जून 1992 में ब्राजील (Brazil) में आयोजित पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (United Nations Conference on Environment and Development -UNCED) का एक प्रमुख केंद्रित विषय था। वैश्विक स्तर पर सतत विकास की उपलब्धि जनसंख्या वृद्धि और प्रति व्यक्ति उपभोग के बढ़ते स्तर को ध्यान में रखते हुए विश्व समुदाय की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक सिद्ध होने की संभावना रखती है। जैसाकि विश्व पर्यावरण और विकास पर आयोग (World Commission on Environment and Development) ने देखा, "जलवायु परिवर्तन, ओजोन रिक्तीकरण और प्रजातियों की हानि" (Climate Change, Ozone Depletion, and Species Loss) जैसी वैश्विक कठिनाइयों के अतिरिक्त दबाव के बीच, सतत विकास को प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रीन हाउस गैसों में निरंतर निर्माण, क्लोरोफ्लोरोकार्बन (Chlorofluorocarbons -CFCs- सी एफ सी) द्वारा ओजोन रिक्तीकरण, और निवास स्थान की अधोगति के माध्यम से प्रजातियों के नुकसान की निरंतरता विकासशील देशों को कम प्रभावित नहीं करती है, जो कि पश्चिमी औद्योगिकृत राज्य हैं।

ऊर्जा के चले रहे अतिरिक्त उपयोग इन कठिनाइयों को और बढ़ाते हैं, और साथ ही वैश्विक जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। ये समस्याएँ इतनी बढ़ गई है कि पर्यावरण के संकट के कारण अपनी भूमि से निस्कासित लागों को 'पर्यावरणीय शरणार्थी' (Environmental Refugees) कहा गया है। इस शब्द को वास्तव में मातृभूमि से वंचित लोगों का वर्णन करने के लिए तैयार किया गया है। स्थिति के अधिक निराशावादी पर्यवेक्षकों में से कुछ ने गर्मजोशी से कहा कि पर्यावरणीय गिरावट से सामाजिक अव्यवस्था (Social Dislocations from Environmental Degradation) 21वीं सदी की प्रथम तिमाही में 60 मिलियन से अधिक पर्यावरणीय शरणार्थियों के अनुमानों के साथ सबसे खतरनाक घटनाओं में से एक हो सकती है।

सतत विकास के समर्थकों का तर्क है कि यह समग्र सततता में सुधार के लिए एक संदर्भ प्रदान करते हैं, जहां अग्रणी 'हरित विकास' प्राप्त करने योग्य है। समावेशी हरित विकास सतत विकास का मार्ग है। यह विकासशील देशों को समृद्धि के स्तर पर लाने के लिए आवश्यक तीव्र विकास का समाधान करने का एकमात्र ढंग है, जिसकी वे आकांक्षा करते हैं, अभी भी गरीबी में जी रहे लगभग 1 बिलियन से अधिक लोगों की आवश्यकतओं को पूरा करते हैं, और वैश्विक पर्यावरण की अनिवार्य आवश्यकताओं को भी पूरा करते हैं।

1.2 सतत विकास का अर्थ

1970 के दशक के आरंभ में सतत विकास शब्द संभवतः बारबरा वार्ड. लेडी जैक्सन (Barbara Ward -Lady Jackson) द्वारा अंकित किया गया था, जो पर्यावरण और विकास के अंतरराष्ट्रीय संस्थान (International Institute for Environment and Development) की संस्थापक थी। सतत विकास व्यापक रूप से लोगों, उनकी आर्थिक और सामाजिक भलाई और एक दूसरे के साथ अपने रिश्तो में समानता के विषय में है, उस संदर्भ में, जहां पर्यावरण–समाज के असंतुलन से आर्थिक और सामाजिक सततता को खतरा हो सकता है।

सतत विकास की अवधारणा की विरासत का शीर्षक 'हमारा सामुहिक भविष्य' के लिए पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की रिर्पोट (Report of the World Commission on Environment and Development entitled Our Common Future) को जिम्मेदार ठहराया गया है, जो इसे विकास के रूप में परिभाषित करते हुए कहता है कि ''भविष्य की पीढ़ियों की योग्यता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना आवश्यक है''। इस प्रकार, यह मानव की पीढ़ियों के भीतर न्याय संगतता और अंतर पीढ़ीगत न्याय संगतता की अनिवार्यता को भी पूरा करने का प्रयास करता है।

सतत विकास वह विकास है, जो वर्तमान और भावी पीढ़ी के कल्याण की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह सततता के मुद्दों और विशेष रूप से संरचनात्मक परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करते हुए लंबी अवधि में विकास के साथ संबंधित है, जो राज्यों के गुणात्मक रूप से अलग–अलग विशेषताओं या विचार के अंतर्गत प्रणाली के व्यवहार के परिणामस्वरूप परिवर्तित होता है।

पर्यावरणीय हानि के वैश्विक और स्थानीय प्रभावों को देखते हुए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि सतत विकास, विकास योजना और संसाधन प्रबंधन में एक 'पसंदीदा शब्द' बन गया है। हालांकि इस अवधारणा की व्याख्या अभी भी अस्पष्ट है। ब्रंटलैंड रिपोर्ट (Brundtland Report) के अनुसार, सतत विकास का विचार पर्यावरण संरक्षण से कहीं आगे तक पहुंचता है, क्योंकि इसका अर्थ है परिवर्तन की प्रक्रिया, जिसमें संसाधनों का दोहन, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास का उन्मुखीकारण और संस्थागत परिवर्तन भविष्य में साथ ही साथ वर्तमान की आवश्यकताओं के साथ तर्कयुक्त बनाए जाते हैं। यह सामंजस्य की निश्चित स्थिति नहीं है, बल्कि परिवर्तन की एक संतुलित और अनुकूल प्रक्रिया है।

सततता के लिए ''आर्थिक विकास के बीच संतुलन''–अर्थव्यवस्था में सभी मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन सम्मिलित है, जो कल्याण में सकारात्मक योगदान प्रदान करते हैं –और परिस्थितिक सततता –सभी मात्रात्मक और गुणात्मक पर्यावरणीय कार्यनीतियां हैं, जो परिस्थितिकी तंत्र की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए कार्य करती है और अंततः कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव भी डालते हैं। दोनों आर्थिक और पर्यावरणीय प्रणालियों को जीवित रहने के लिए निश्चित न्यूनतम शुरुआत की आवश्यकता होती है।

''संक्षेप में, सतत विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जिसमें संसाधनों का दोहन, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास का उन्मुखीकारण, और संस्थागत परिवर्तन, सभी सामंजस्य में है और मानव की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए वर्तमान और भविष्य की क्षमता दोनों को बढ़ाते हैं''।

ब्रंटलैंड कमीशन की परिभाषा के अर्थ – ''भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने'' का विश्व विकास रिपोर्ट (World Development Report ,1992) द्वारा दृढता से समर्थन किया गया है।

सतत विकास की अवधारणा पारंपरिक दृष्टिकोण को अस्वीकार करती है, जो आर्थिक विकास को आवश्यकता, लेकिन पर्यावरण संरक्षण को विलास का साधन मानता है। पार्थ दासगुप्ता और कार्ल–गोरान मेलर (Partha Dasgupta and Karl-Goran Maler, 1990) लिखते हैं कि ''पर्यावरणीय संसाधन गरीब देशों के लिए छोटे महत्व के है ... वे आर्थिक विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ... इस तरह के संसाधन विलासिता की वस्तुएं हैं, और वे सार्वजनिक चेतना में ही बड़े स्पष्ट दिखाई देते हैं, जब आय उच्च होती है ...पर्यावरणीय संसाधन केवल समृद्ध देशों की अतिव्यस्तता है...ये अर्थशास्त्रियों द्वारा मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए हैं, जो गरीब देशों में गरीबों की वास्तविक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील नहीं हैं...''

हालांकि, पिछले एक दशक में, पर्यावरणीय क्षय के वैश्विक प्रभावों पर आंशिक पर्यावरणीय विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए परिवर्तन किया गया है–खतरनाक घटनाएं जैसे बाढ़, अम्लीय वर्षा, मिट्टी स्थलन और मरुस्थलीकरण, ओजोन रिक्तिकरण, समुद्र प्रदूषण और संसाधन निष्कर्षण (Flooding, Acid Rain, Soil Erosion and Desertification, Destruction of the Ozone Layer, Ocean Pollution, and Resource Extraction) विनाश के अन्य चीजों के बीच परिलक्षित होती है। इस प्रकार, संसाधन संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण, कभी सोची हुई विलासिता की वस्तुएं हैं, जो अब जीवन रक्षक प्रकृतिक प्रणालियों की रक्षा और जीवन स्तर में सुधार करने के लिए आवश्यक रूप में पहचाने जाते हैं। नेता अब निरंतर समझ रहे हैं कि सामाजिक–आर्थिक विकास सतत होने चाहिए, जो न केवल वर्तमान जरूरतों को बल्कि भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को भी पूरा करने में सक्षम हों।

इस संदर्भ में, प्रश्न ये हैं कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की भलाई का आकलन कैसे किया जाए। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए क्या छोड़ना चाहिए कि वे स्वयं को हम से बुरी स्थिति मे न पाएँ। यह मुद्दा और अधिक जटिल हो जाता है, क्योंकि हमारे बच्चे न केवल हमारे कृषि रहित खेत, नष्ट हुए पहाड़, प्रदूषित पानी और हवा, घास के मैदान, और रिक्त ओजोन को पूर्वजों से प्राप्त करते हैं, बल्कि हमारे श्रम के रूप में शिक्षा, कौशल और ज्ञान व भौतिक पूंजी का फल भी प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, वे प्राकृतिक संसाधनों में मिट्टी की उर्वरता में सुधार और पुनःवितरण में निवेश से लाभ प्राप्त करने के अधिकारी हैं।

आशीष कोठारी (Ashish Kothari, 1993) का कथन है कि वर्तमान में परिभाषित ''सतत विकास की परिभाषा आंतर–पीढ़ीगत आंतर–जीवी असमानता (Intragenerational Inter-species Inequity) की सततता को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करती है, और इसलिए खुशी, समानता, न्याय और शांति के विशाल मानवीय लक्ष्यों के दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं है''।

1.3 सतत विकास का स्वरूप

इस बात पर विचार करते हुए कि हम अपने बच्चों और पोते–पोतियो के लिए विरासत में क्या छोड़ते हैं और क्या करते हैं, हमें भौतिक और मानव पूंजी की पूरी–श्रृंखला और प्राकृतिक संसाधनों के बारे में सोचना चाहिए, जो उनके कल्याण का निर्धारण करेगी। सतत विकास के सिद्धांत को अपनाने के लिए सोच में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता होगी। निर्णय–निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले डेटा में संसाधनों की कमी और प्रदूषण की सही लागतों को प्रतिबंधित करना चाहिए, क्योंकि वे आय–उत्पादक के कम होते संसाधनों की अब अल्पकालिक लाभों की अपेक्षा भावी पीढ़ियों को प्रभावित करता हैं। डेटा को वर्तमान आवश्यकताओं के साथ भविष्य की जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए, न कि उन्हें कम करना चाहिए, जो अल्पकालिक प्रभावो के पक्ष में निर्णय लेते हैं।

सिरिकेसी–वौर्न्टेप (Ciricacy-Wantrup, 1952) ने मानवीय गतिविधियों को सीमित करके पर्यावरण के महत्वपूर्ण क्षेत्रों के अधिक शोषण से बचने के कारण संरक्षण के लिए सुरक्षित न्यूनतम मानको के उपयोग पर जोर दिया, जो इसे पर्यावरण निम्नकरण को विराम देने या रद्द करने के लिए असंवैधानिक बनाते हैं। इस प्रकार, सतत विकास के विचार के लिए आर्थिक और पर्यावरणीय, दोनों प्रणालियों के लिए स्थानीय सीमा स्तरों पर सावधानी–पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, ब्राजील जैसे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि विकास के लिए वनों की कटाई आवश्यक हो सकती है, लेकिन यह वैश्विक पारिस्थितिक सततता के लिए घातक और हानिकारक सिद्ध हो सकती है, जब एक देश तेजी से जनसंख्या वृद्धि या आकस्मिक शहरीकरण का अनुभव करता है, तब सकल राष्ट्रीय उत्पाद या जी एन पी (Gross National Product) वृद्धि, प्रमुख विकास समस्याएं छिपा सकती हैं। वही कठिनाई उत्पन्न होती हैं, जहां विश्व किसी देश या क्षेत्र से कच्चे संसाधनों की मांग करता है, जो वैश्विक जरूरतों को पूरा करते हैं। संक्षेप में, जब तक हम सततता को परिभाषित करने के लिए तैयार होते हैं जिसमें उत्तर में खाद्य् नीतियों से बाहरी खतरों और दक्षिण में जनसंख्यकीय दबाव से आंतरिक खतरों दोनों का अध्ययन शामिल हो, तब तक यह भ्रम बना रहेगा।

इसी प्रकार, भारत में भूमि दबाव (Land Pressure) की बढ़ती समस्याओं से निपटने के लिए,

i) जनसंख्या वृद्धि दर की जांच करना और नियंत्रित करना;

ii) संतुलित पशुधन विकास को सुनिश्चित करना; और

iii) भूमि हस्तांतरण पर नियंत्रण करना आवश्यक है।

दूसरी ओर, जब विश्व आयोग यह कहता है कि : ''सतत विकास के लिए आवश्यक है कि वायु, जल और अन्य प्राकृतिक तत्वों की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव कम से कम पड़े, ताकि पारिस्थितिकी तंत्र की समग्र अखंडता को बनाए रखा जा सके'', सफलता को आकंना कोई आसान कार्य नहीं है।

इन कठिनाइयों को स्वीकार करते हुए, विश्व आयोग (World Commission) ने उल्लेख किया कि सतत विकास में सफलता के उपायों को संदर्भ और सामाजिक चुनौतियों को पूरा करने की आवश्यकता का ध्यान रखना चाहिए। सततता के पहलू पर्यावरणीय प्रशासकों से यह मांग करता है कि सततता के लक्ष्य हों:

i) जैवमंडल के कार्य के लिए आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र और संबंधित पारिस्थितिकी प्रतिक्रियाओं को बनाए रखना;

ii) वनस्पतियों और जीवो की सभी प्रजातियों के उनके प्राकृतिक आवासों में अतिजीवन और संरक्षण को सुनिश्चित करके जैविक विविधता को बनाए रखना ;

iii) जीवित प्राकृतिक संसाधनों और परिस्थितिक तंत्र के दोहन में सर्वोत्तम सतत उपज के सिद्धांत का पालन करना ;

iv) महत्वपूर्ण पर्यावरण प्रदूषण या नुकसान को रोकना या कम करना ;

v) पर्याप्त पर्यावरणीय संरक्षण मानकों की स्थापना करना ;

vi) प्रमुख कानून नीतियों, परियोजनाओं, और प्रौद्योगिकियों को, सुनिश्चित करने के लिए पूर्ण मूल्यांकन आरंभ करना है, जो सतत विकास में योगदान देती है; और

vii) प्रदूषण के हानिकारक या संभावित रूप से हानिकारक निवारण के सभी मामलों में देरी किए बिना सभी प्रसांगिक जानकारी सार्वजनिक करना, विशेष रूप से रेडियोधर्मी निवारण (Radioactive Release) की।

रियो शिखर सम्मेलन (Rio Summit) में यह माना जाता था कि ब्रंटलैंड रिपोर्ट में सततता की स्पष्ट परिभाषा का अभाव है। विश्व बैंक के पर्यावरण विभाग ने अब एक नई परिभाषा तैयार की है। यह दो भागों में है ;

- आउटपुट गाइड (Output Guide) : औद्योगति के बिना स्थानीय वातावरण की समावेश क्षमता के भीतर अपशिष्ट उत्सर्जन होना चाहिए; और
- इनपुट गाइड (Input Guide) : नवीकरणीय संसाधनों की पैदावर दरें प्राकृतिक सुधार क्षमता के भीतर होनी चाहिए; गैर–नवीकरणीय संसाधनों की कमी दर उस दर के समान होनी चाहिए, जिस पर नवीकरणीय विकल्प विकसित किए गए हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. सतत विकास शब्द का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

2. सतत विकास का स्वरूप क्या है ?

.....

.....

.....

1.4 सतत विकास का क्षेत्र

सतत विकास के अर्थ और स्वरूप के हमारे खंड में पहले से की गई चर्चा में सतत विकास के क्षेत्र पर बहुत अधिक विचार–विमर्श किया गया है। सतत विकास महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह राष्ट्रीय बजट को बचाता है, लोगों की आवश्यकता को पूरा करता है, प्राकृतिक संसाधनों और लोगों के बीच समन्वय में सहायता करता है, और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करता है। सतत विकास का लक्ष्य कल की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना आज की आवश्यकताओं को पूरा करना है। इसका अर्थ है कि हम संसाधनों के वर्तमान स्तर का उपयोग जारी नहीं रख सकते, क्योंकि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

कार्बन उत्सर्जन को स्थिर करना और कम करना पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर रहने की कुंजी है। सतत विकास की श्रेणीयों का विश्वास है कि सही आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर काम करने से वास्तव में सतत स्वास्थ्य प्रणाली का निर्माण होगा, जो भविष्य के लिए उपयुक्त है। सतत विकास का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, क्योंकि यह सामाजिक आर्थिक, पर्यावरणीय और संस्थागत आयामों जैसे क्षेत्रों से संबंधित है।

सामाजिक आयाम (Social Dimension)

सतत विकास के सामाजिक आयामों में ''शून्य भूख'', ''अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण'', ''उत्तम शिक्षा'', ''जनसंख्या नियंत्रण'' और ''जेन्डर समानता'' (Zero Hunger, Good

Health and Well-being, Quality Education, Population Control, and Gender Equality) पर जोर देने के साथ एक मजबूत, स्वास्थ्य और न्यायपूर्ण समाज सुनिश्चित करना सम्मिलित है।

आर्थिक आयाम (Economic Dimension)

सतत विकास के आर्थिक आयामों में ''गरीबी नहीं'', ''स्थायी अर्थव्यवस्था'', ''रोजगार के अवसर'', विशेष रूप से महिलाओं के लिए, सभ्य काम और आर्थिक विकास'', ''प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन'', ''जिम्मेदार खपत और उत्पादन'' (No Poverty, Sustainable Economy", Employment Opportunities, Decent Work and Economic Growth, Managing Natural Resources, and Responsible Consumption and Production) पर जोर देने के साथ जनता की आर्थिक भलाई सम्मिलित है।

पर्यावरणीय आयाम (Environmental Dimension)

सतत विकास के पर्यावरणीय आयामों में अनुकूल पर्यावरण को बढ़ावा देने के साथ ''स्वच्छ जल और स्वच्छता'', ''सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा'', ''उद्योग, परिवहन और ऊर्जा से उत्सर्जन को कम करना'' (Clean Water and Sanitation, Affordable and Clean Energy", Reducing Emissions from Industry, Transport and Energy) (ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने जो ग्लोबल वार्मिंग और वायु प्रदूषण में योगदान देते हैं) पर जोर दिया गया है। ''नवीकरणीय स्रोतों के उपयोग को प्रोत्साहित करना'' (जैसे सौर या सूर्य, पवन और जल ऊर्जा), ''जलवायु कार्रवाई'' और ''प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण''(Climate Action and Preservation of Natural Resources), जबकि प्राकृतिक आवासों के जीवन रूपों का (जल के नीचे जीवन और पृथ्वी पर जीवन) का सम्मान करना और उनकी रक्षा करना सम्मिलित है।

संस्थागत आयाम (Institutional Dimension)

सतत विकास के संस्थागत आयामों में ''उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा'', ''मजबूत वित्तीय संसाधन'', ''शांति, न्याय और मजबूत संस्थान'', ''सतत शहर और समुदाय'', ''सतत विकास लक्ष्यों के लिए भागीदारी/साझेदारी (एस डी जी)'' और अंतरराष्ट्रीय सहयोग'' (Industry, Innovation and Infrastructure, Sound Financial Resources, Peace, Justice and Strong Institutions, Sustainable Cities and Communities, Partnerships for the Sustainable Development Goals and International Cooperation) सम्मिलित हैं।

संयुक्त राष्ट्र के एस डी जी (SDGs) (सतत विकास लक्ष्य)

संयुक्त राष्ट्र ने 2015 और 2030 के बीच वैश्विक विकास का मार्गदर्शन करने के लिए 17 अलग–अलग लेकिन परस्पर संबंधित लक्ष्यों का एक समूह बनाया। प्रत्येक उद्देश्य में कार्यों का लक्ष्य होता है– कुल मिलाकर 169 लक्ष्य हैं, जिनमे कुल 232 उपसंकेतक हैं। एस डी जी को वैश्विक लक्ष्यों के रूप में भी जाना जाता है, जो 2015 में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों देशों द्वारा गरीबी को समाप्त करने, ग्रह की रक्षा करने हेतु कार्रवाई की मांग करता है, ताकि लोग 2030 तक शांति और समृद्धि का आनंद ले सकें।

17 सतत विकास लक्ष्य (एस डी जी) हैः

1) कोई गरीबी नहीं,

2) शून्य भूख,

3) अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण,

4) उत्तम शिक्षा,

5) जेन्डर समानता,

6) स्वच्छ जल और स्वच्छता,

7) सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा,

8) उचित कार्य और आर्थिक विकास,

9) उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचे,

10) असमानता को कम करना,

11) सतत शहर और समुदाय,

12) जिम्मेदार उपभोग का उत्पादन,

13) जलवायु कार्यवाही,

14) जल के नीचे जीवन,

15) भूमि पर जीवन,

16) शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएं, और

17) लक्ष्य के लिए साझेदारी।

6 जुलाई 2017 को संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव को महासभा द्वारा अपनाया गया था। प्रस्ताव में संकेतको के साथ प्रत्येक लक्ष्य के लिए विशेष कार्य की पहचान की जाती है, जो प्रत्येक कार्य के प्रति विकास के मापक के लिए उपयोग किए जा रहे हैं। एस डी जी को प्राप्त करने के लिए सरकार, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और नागरिकों की साझेदारी की आवश्यकता है, ताकि हम यह सुनिश्चित कर सकें कि हम भावी पीढ़ी की लिए बेहतर ग्रह छोड़ सकेंगे।

एस डी जी कई निकट मुद्दों पर ध्यान देते हैं, जैसे जेन्डर समानता, शिक्षा और संस्कृति सभी एस डी जी को तय करती है। सतत विकास प्राप्त करने के लिए, 3 क्षेत्रों को एक साथ आने की आवश्यकता है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय क्षेत्र सभी गंभीर रूप से महत्वपूर्ण हैं और एक दूसरे पर परस्पर निर्भर करते हैं। प्रगति के लिए सभी तीन क्षेत्रों में बहु–विषयक और बहूज्ञानी विषयक (Multidisciplinary and Transdisciplinary) अनुसंधान की आवश्यकता होगी। यह कठिनता से सिद्ध होता है, जब प्रमुख सरकारें इसका समर्थन करने में विफल रहती हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार समुदाय के बहुत दूर पीछे तक पहुंचने के लक्ष्य हैं। हालांकि डेटा या जानकारी को कमजोर समूहों जैसे कि बच्चों, बुजुर्गों, विकलांग व्यक्तियों, स्वदेशी लोगों, प्रवासियों और आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्ति के लिए समायोजित करना चाहिए।

वर्ष 2020 में सभी 17 लक्ष्यों पर कोविड–19 महामारी के गंभीर प्रभाव और निहितार्थ रहे। हम अपनी अगली इकाइयों में विस्तार से उन लक्ष्यों के बारे पढ़ेगें।

1.5 सतत विकास के महत्वपूर्ण सिद्धांत और विशेषताएं

सिद्धांत

सतत विकास के कुछ सिद्धांत, जो महत्वपूर्ण है, वे इस प्रकार हैंः

पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण (Conservation of Ecosystem)

सतत विकास का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी संसाधनों का संरक्षण करना हैः इसका लक्ष्य पारिस्थितिक तंत्र को सतत बनाना है। इस उद्देश्य और लक्ष्य के लिए जलीय पारिस्थितिकी तंत्र सहित पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण आवश्यक है।

समाज का सतत विकास (Sustainable Development of Society)

जनसंख्या वृद्धि से वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ जाती है। समाज की सततता स्वस्थ निवास, संतुलित आहार, पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता पर निर्भर करती है। समाज में लोगों के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा महत्वपूर्ण है।

जैव विविधता का संरक्षण (Conservation of Biodiversity)

विश्व में सभी जीवित प्राणियों के संरक्षण को सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। जीवो की रक्षा के लिए लोगों को प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना सीखना चाहिए। सितंबर 2020 में वैश्विक जैव विविधता दृष्टिकोण और विश्व वनजीवन कोष (World Wildlife Fund- WWF) और वर्तमान ग्रह सूची (Living Planet Index), दोनों ने सितंबर 2020 में जैव विविधता की हानि के विश्लेषण को रोकने और पृथ्वी ग्रह पारिस्थितिकी को मानव गतिविधि के परिणामों का खतरा होने से पूर्व पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बहाल करने के लिए कठोर और तत्काल कार्यवाही की मांग की।

जनसंख्या नियंत्रण (Population Control)

जनसंख्या वृद्धि से वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ जाती है, और यदि कार्य अपरिवर्तित रहते हैं, तो इसका अर्थ पर्यावरणीय क्षति में वृद्धि है। विश्व की जनसंख्या लगभग 1.7 प्रतिशत वार्षिक लगभग एक सौ मिलियन 1 वर्ष में बढ़ रही है। यह तेजी से जनसंख्या वृद्धि गरीबी और पर्यावरण निम्नीकरण के पारस्परिक रूप से मजबूत प्रभावों को बढ़ाती है। फिर भी पर्यावरणीय निम्नीकरण भी जनसंख्या वृद्धि को बढ़ा सकता है। दासगुप्ता (Dasgupta,1990) का विचार है कि बच्चों को न केवल पैसा और भोजन कमाने के लिए और सेवानिवृत्ति और बीमा उद्देश्यों के लिए, बल्कि कार्यबल बढ़ाने के लिए भी पैदा किया जाता है। इसलिए, सतत विकास के लिए जनसंख्या नियंत्रण और प्रबंधन आवश्यक है।

मानव संसाधन का संरक्षण (Conservation of Human Resources)

सतत विकास के लिए मानव संसाधन संरक्षण एक बड़ी क्षमता है। इसलिए मानव संसाधन का विकास शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और प्रशिक्षण प्रदान करके किया जाता है। सतत विकास के सिद्धांत को अपनाने में मानव संसाधन का योगदान होता है। पृथ्वी की देखभाल पर ज्ञान और कौशल विकसित किया जाना चाहिए। वैसे भी मानव संसाधन का संरक्षण एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना (Encouraging Citizens' Participation)

सतत विकास प्रक्रिया एक पूर्ण अर्थ प्राप्त करेगी यदि नागरिक सतत विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में पूरी तरह से भाग लेते हैं। कोविड–19 महामारी ने यह प्रकाश डाला है कि कैसे पर्यावर्नीय संतुलन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम अधिक लचीले अर्थशास्त्र और समुदायों के निर्माण का प्रयास कर रहे हैं। कोविड–19 ने कठोर और दर्दनाक अनुस्मारक प्रदान किया है कि सतत विकास की अवधारणा इतनी महत्वपूर्ण क्यों है।

अंतर्राष्ट्रीय समन्वय और सहयोग को बढ़ावा देना (Promotion of International Coordination and Cooperation)

जैविक विविधता की रक्षा के लिए अधिक कार्यनीतिक अंतरराष्ट्रीय कार्यवाही की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण के मामलों का समाधान सामान्य सिद्धांतों व प्रोत्साहन और बातचीत द्वारा समर्थित स्वतंत्र देशों के बीच सहयोग के नियमों पर आधारित होना चाहिए। जैविक संसाधनों के लिए समान अंतरराष्ट्रीय चिंता के कारण,

विकासशील देशों को वित्त पोषण और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रयासों का एक मजबूत केस है। 31 जुलाई 2020 को केंद्रीय पर्यावरण मंत्री (भारत) ने सतत विकास लक्ष्यों के लिए BRICS (Brazil, Russia, India, China, South Africa) राष्ट्रों के बीच सर्वोत्तम कार्यों को साझा करने की मांग की गई।

विशेषताएं

सतत विकास के क्षेत्र और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आर्थिक विकास की योजना बनाते समय इन सुविधाओं को लागू करने की आवश्यकता हैः

i) ग्रीनहाउस गैसों के उत्पाद को कम करना, जो प्रत्यक्ष रुप से ग्लोबल वार्मिंग और वायु प्रदूषण में योगदान देते हैं;

ii) हरित वास्तुकला (Green Architecture) के निर्माण जैसे पर्यावरण हितैषी कार्यों पर जोर देना।

iii) नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सूरज, हवा, पानी आदि को प्रमुखता और कार्यान्वयन;

iv) जीवन रूपों और जीवो के प्राकृतिक आवासों का सम्मान और सुरक्षा करते हुए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण; तथा

v) नवीकरणीय स्रोतों के उत्पादन को पार करने से उपभोग की दर को नियंत्रित करना।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. सतत विकास के क्षेत्र की जांच कीजिए।

.....

.....

.....

2. सतत विकास के सिद्धांत और विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

1.6 निष्कर्ष

सारांश में, यह कहा जा सकता है कि पारंपरिक आर्थिक और औद्योगिक दृष्टिकोण सतत विकास के साथ प्रायः असंगत होते हैं। आज एक मौलिक प्रश्न यह नहीं है कि औद्योगीकरण और पर्यावरण के बीच चयन करना है या नहीं। यह प्रश्न अब विकास के स्वरूप का चयन करने के इर्द–गिर्द घूमता है, जो पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार करता है। इस संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय आर्थिक निगम महत्वपूर्ण है। हालांकि, यह वांछनीय परिणाम तब तक प्राप्त नहीं होगा, जब तक कि राष्ट्र मजबूत पर्यावरण प्रबंधन और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक विकास के बीच महत्वपूर्ण संबंध को नहीं पहचानते। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण प्रणाली विकसित करने की दिशा में एक अधिक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो बढ़ते पर्यावरणीय लूट के संदर्भ में विकासशील देशों की विकास आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त रूप से प्रतिक्रिया देता है।

समृद्धि के लिए विकास और आर्थिक कल्याण अनिवार्य रूप से पूर्व आवश्यकताएं हैं और यह बदले में उन नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन पर निर्भर करता हैं, जो सतत विकास (बेहतर पर्यावरण) की परीकल्पना करते है। लगभग सौ वर्ष पूर्व महात्मा गांधी ने कहा था कि मानव की आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रकृति में पर्याप्त साधन है, लेकिन मानव के लालच को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है और ऐसा ठीक भी है। सतत विकास ही वास्तव में बढ़ती पर्यावरणीय समस्याओं के संदर्भ में मानव की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है।

1.7 शब्दावली

जैव–विविधता (Bio-diversity): इसका अर्थ है पृथ्वी पर जीवन की विशाल विविधता, इसमें सब कुछ शामिल है, जैसे पौधे, बैक्टीरिया, जानवर और मानव।

वनोन्मूलन (Deforestation): विकासात्मक गतिविधियों व कृषि के लिए वृक्षों का निष्कासन।

विकास (Development): यह लोगों के कल्याण में सुधार की प्रक्रिया है, यह लोगों के जीवन स्तर को बढ़ाने, उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार लाने के बारे में है, साथ ही उनके लिए यह एक समृद्ध और अधिक विविध जीवन पर्यावरण के लिए नए और समान अवसर प्रारंभ करना है।

सततता (Sustainability): इसका अर्थ है कि भविष्य की पीढ़ी की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना।

1.8 संदर्भ लेख

World Commission on Environment and Development, Our Common Future (New York ; Oxford University Press, 1987), p.35.

World Bank, World Development Report 1992, Development and the Environmental (New York ; Oxford University Press, 1992), p.8.

World Commission on Environment, Our Common Future (Second Impression) (Oxford: Oxford University Press, 1987).

William J. Baumol and J. Benhabile, “Chaos: Significance, Mechanism, and Economic applications”, Journal of Economic Perspective, Vol.3, 1984,pp.77-106.

World Commission on Environment and Development, Our Common Future, (New York : Oxford University Press, 1987).

See World Bank, World Development Report 1992 (New York : Oxford University Press 1992), p.8.

Partha Dasgupta and Karl-Goran Maler, ”The Environment and Emerging Development Issues”, Proceedings of the world bank, annual conference on development economics, 1990 (Washington; World Bank, 1990), p.101.

Ashish Kothari, ”Is sustainable development desirable and possible?” The Indian Journal of Public Administration, vol. XXXIX, no.3, July-September, 1993.

World bank , world development report 1992 (New York: Oxford University Press , 1992).pp. 34-35.

S.V. Ciriacy-Wantrup, Resource Conservation (Berkeley: Oxford University of California Press, 1952).

Michael Redclift , Sustainable Development (London: Methuen, 1987), p.32.

WCED Report (1987),p.331.

Partha Dasgupta, An Enquiry into Well being and Destitution (Oxford: Clarendon Press, 1993).

The Tribune (Chandigarh), 1 August 2020.

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहिये:**
   - 'सतत विकास' शब्द का उदभव 'हमारा सामुहिक भविष्य' शीर्षक वाली रिपोर्ट से हुआ।
   - इसका अर्थ है विकास जो भविष्य की जरूरतों से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।
   - सतत विकास का विचार पर्यावरण संरक्षण से अधिक दूर जाता है।
   - यह अर्थव्यवस्था में गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तन को ध्यान में रखता है।
   - यह पर्यावरण विश्लेषण और पर्यावरण क्षय पर केंद्रित है।
   - यह समानता, न्याय और शांति के प्रश्नों को संबोधित करता है।
2. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहिये:**
   - सतत विकास के सिद्धांत को अपनाने के लिए सोच में परिवर्तन की आवश्यकता होगी।
   - महत्वपूर्ण पर्यावरण क्षेत्रों के अत्यधिक दोहन से बचना है।
   - जनसंख्या की वृद्धि की जांच करने की आवश्यकता है।
   - पशुधन की जनसंख्या को बनाए रखने की आवश्यकता है।
   - नियंत्रण भूमि अलगाव।
   - पारिस्थितिकी तंत्र बनाए रखना।
   - सतत जैव–विविधता।

बोध प्रश्न 2

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहिये:**
   - सामाजिक आयाम
   - आर्थिक आयाम
   - पर्यावरणीय आयाम
   - संस्थागत आयाम
2. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहिये:**
   - पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण।
   - सतत विकास समाज।
   - जैव–विविधता का संरक्षण।

- जनसंख्या नियंत्रण।
- मानव संसाधनों का संरक्षण।
- नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
- अंतरराष्ट्रीय समन्वय को बढ़ावा देना।
- ग्रीनहाउस गैसों के उतर्सजन को कम करना।
- पर्यावरण के अनुकूल निर्माण कार्य।
- उपभोग की दर को कम करना।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 सतत विकास के प्रमुख घटक*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सतत् विकास के घटक

2.3 सतत् विकास के सामाजिक घटक

2.4 सतत् विकास के आर्थिक घटक

2.5 सतत् विकास के पर्यावरणीय घटक

2.6 निष्कर्ष

2.7 शब्दावली

2.8 संदर्भ लेख

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बाते समझ सकेंगे :

- सतत् विकास के घटकों का वर्णन;
- सतत् विकास के सामाजिक घटक;
- सतत् विकास के आर्थिक घटक; और
- सतत् विकास के पर्यावरणीय घटक।

2.1 प्रस्तावना

विकास–प्रशासन द्वारा बदलते आर्थिक और सामाजिक वातावरण (परिस्थिति) के अनुरूप अपने दायित्व को पूरा करने में विफलता के फलस्वरूप सतत् विकास प्रवर्तन में आया। सतत् विकास कभी भी वहां तक नहीं पहुंच पाता जहाँ अब यह है अगर विकास–प्रशासन नही होता। इसको सतत् विकास का मददकर्ता माना जाता है। 'सतत् उपयोग' शब्द का इस्तेमाल सबसे पहले हेंस कार्ल वॉन कार्लोविट्ज़ (Hanns Carl Von Carlowitz) ने सतत् वानिकी पर अपने प्रकाशन 'Nachhaltendenutzung' में किया था। बाद में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण आयोग द्वारा ब्रंटलैंड रिपोर्ट में सतत् विकास की अवधारणा को नॉर्वे (Norway) के प्रधानमंत्री, ग्रो हार्लेम ब्रंटलैंड (Gro Harlem Brundtland) की अध्यक्षता में प्रस्तुत किया गया था। इस अवधारणा की शुरुआत पर्यावरण से हुई जो इसका मूल आधार था। सतत् विकास को उस विकास के रूप में परिभाषित किया गया था,जो भावी पीढ़ियों की अपनी ज़रूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की ज़रूरतों को पूरा करता है। हम अब तक यह जान चुके हैं कि यह ब्रन्टलैंड रिपोर्ट के रूप में लोकप्रिय था, जिसमें से दो मुख्य अवधारणाएं मूल रूप से पृथ्वी के संसाधनों के सतत् प्रबंधन की प्रक्रिया से जुड़ी हैं:

---

* योगदानः डॉ अनुपमा पुरी महाजन, पूर्व उतर–डॉक्टोरल शोधकरता, लोक प्रशासन विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविध्यालय, शिमला

i) **मानवता की बुनियादी ज़रूरतें (Basic Needs of Humanity):** भोजन, वस्त्र, आश्रय और नौकरियों की बुनियादी ज़रूरतें पूरी होनी चाहिए। इसमें शामिल है, सबसे पहले, दुनिया के गरीबों की बड़े पैमाने पर ज़रूरतों पर ध्यान देना, जिन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

ii) **विकास की सीमाएँ (Limits to Development):** विकास की सीमाएं पूर्ण नहीं हैं, प्रत्युत् वर्तमान प्रौद्योगिकी स्थितियों और सामाजिक संगठन द्वारा और पर्यावरणीय संसाधनों पर उनके प्रभाव से और मानव गतिविधियों के प्रभाव को अवशोषित करने के जैवमंडल की क्षमता पर आरोपित की गई हैं, लेकिन आर्थिक विकास के नए युग के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लिए तकनीकी और सामाजिक संगठन दोनों को व्यवस्थित व बेहतर बनाया जा सकता है।

ब्राजील के रियो डी. जिनेरो में 1992 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (United Nations Conference on Environment and Development-UNCED) ने दुनिया भर की सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों और गैर–सरकारी संगठनों का ध्यान आकर्षित किया। सम्मेलन में अपनाया गया एजेंडा 21 सामाजिक व आर्थिक विकास और पर्यावरण सहयोग पर उच्चतम स्तर पर वैश्विक सहमति और राजनीतिक प्रतिबद्ध ता को निरूपित करता है। सतत् विकास के घटक आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय हैं। शब्द, ''सतत्ता'' विकास और पर्यावरण के बीच की खाई को पाटने का उल्लेख करता है। इस इकाई में सतत् विकास के तीन घटकों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

2.2 सतत विकास के घटक

सतत् विकास के घटकों को इसके तीन स्तंभ भी कहा जाता है, जिन पर एक साथ विचार किया जाना चाहिए। ये स्तंभ हैं: समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण। इसमें निहित मूल विचार लोगों, निवास और आर्थिक प्रणालियों के बीच अंतःसंबंध है। हम अपने अस्तित्व के लिए पर्यावरण पर निर्भर हैं। यह हमें मिट्टी, भोजन, पानी, ऑक्सीजन आदि प्रदान करता है। हम नहीं जानते कि जीवन के इन मूल तत्वों के बिना कैसे जीवित रहना है। एक स्वस्थ जीवमंडल एक सतत् समाज का निर्माण करता है, जिसके बिना अशांति, गरीबी और बीमारी होगी। सामाजिक भलाई और आर्थिक कल्याण एक–दूसरे पर सतत्ता के लिये आश्रित होगे। एजेंडा 21,900 पृष्ठ का एक दस्तावेज है, जो सतत् विकास के तीन स्तंभों को मज़बूत करने के लिए निम्नलिखित चार क्षेत्रों पर केंद्रित है:

i) **सामाजिक और आर्थिक आयाम (Social and Economic Dimension):** गरीबी से लड़ना और सतत शहरी नियोजन को बढ़ावा देना।

ii) **संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन (Conservation and Management of Resources):** महासागरों के मत्स्य क्षेत्र की रक्षा करना और वनों की कटाई (Deforestation) का विरोध करना।

iii) **प्रमुख समूह (Major Groups):** महिलाओं, स्थानीय सरकारों और गैर–सरकारी संगठनों जैसे प्रमुख समूहों की भूमिका को मजबूत करना; तथा

iv) **कार्यान्वयन के साधन (Means of Implementation):** पर्यावरण की दृष्टि से ठोस प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण।

इसलिए, सतत् विकास समाधानों का पता लगाने के लिए परस्पर संबंधों के अध्ययन और विश्लेषण के एक साधन के बजाय परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। साथ ही साथ यह एक वैचारिक ढांचा, एक प्रक्रिया और एक अंतिम लक्ष्य भी है।

2.3 सतत विकास के सामाजिक घटक

सामाजिक घटक में सततता को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित सामाजिक और मानव घटक शामिल हैं। हमने पहली इकाई में इसके बारे मे पढ़ चुके है। इस इकाई मे हम इसके बारे मे और चर्चा करेगें। सामाजिक घटक में सततता का उद्देश्य सामाजिक. व सांस्कृतिक सततता का निर्माण करना है और लोगों की अलगाव जैसी सामाजिक बीमारियों को रोकना है। आम जनता, बड़े–बड़े व्यवसायों में कार्यरत् है, लेकिन अपने काम के बारे में पूरी जानकारी व समझ न होने के कारण वे अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं है, अतः वे निराश हैं। सापेक्षतावाद (Relativism) के युग में कोई संपूर्ण मूल्य नहीं है और बीमारियों के कारण भविष्य का पूर्वानुमान भी नहीं लगाया जा सकता है ।विश्व ने इबोला, जीका, सार्स, स्वाइन फ्लू और अब कोविड–19 जैसे कई वायरसों का सामना किया है। सामाजिक सततता में सामाजिक समता, स्वास्थ्य समता, सामुदायिक विकास, मानवाधिकार, सामाजिक जिम्मेदारी और श्रम अधिकारों जैसे मुद्दे शामिल हैं। एक तरह से, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के सभी क्षेत्र भी सामाजिक हैं,क्योंकि वे समाज को प्रभावित करते हैं। सामाजिक रूप से सतत समाज न्यायसंगत, विविध, संयोजित और लोकतांत्रिक हैं और इनका उद्देश्य अच्छा गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान करना है।

सामाजिक सतत् विकास के आयाम (Dimensions of Social Sustainable Development)

जब से सतत् विकास के तीन स्तंभों को परिभाषित किया गया है, बहुत उप्लब्धियां रही हैं।संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में 17 सतत् विकास लक्ष्यों (एस डी जी) को तैयार किया, जिसमें अधिकांश उस संगत क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें 193 सदस्य देशों ने अपना समर्थन प्रदान किया। संयुक्त राष्ट्र सामाजिक विकास अनुसंधान संस्थान (United Nations Research Institute for Social Development-UNRISD) ने सतत् विकास के सामाजिक आयामों पर एक कार्यक्रम विकसित किया, जो नीतिगत बदलावों की उन प्रक्रियाओं को समझने, विश्लेषण और संलग्न करने पर केंद्रित है, जो अस्थायी प्रचलनों, जलवायु परिवर्तन और असमानताओं से निपट सकें। इसमें सतत् विकास के 2030 एजेंडा के समर्थन में विभिन्न स्तरों पर सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक मुद्दों के पारिस्पारिक सबधों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन (Amartya Sen) ने सामाजिक सततता के चार आयामों को निर्दिष्ट किया :

i) **जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life):** इसमें किफायती आवास यानी की सस्ते घर, शारीरिक और मानसिक चिकित्सा सहायता, शिक्षा प्रशिक्षण के अवसर, रोज़गार के अवसर, समर्थन और सुरक्षा जैसे विभिन्न तत्व शामिल हैं। जीवन की गुणवत्ता प्रत्यक्षतः एक समाज में व्यक्तियों के कल्याण का उल्लेख करती है। विकास को स्वतंत्रता का रूप माना जाता है, क्योंकि जीवन की बुनियादी सुविधाओं का अधिकार किसी को स्वतंत्रता की ओर ले जाता है, चाहे वह गरीबी, बीमारी या अशिक्षा से स्वतंत्रता हो। समूहों या राष्ट्रों के बीच तीव्र विरोधाभास के बिना व्यक्तियों को लंबा और अच्छा जीवन जीने का अधिकार है। विकास मूल सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता के विस्तार की एक एकीकृत प्रक्रिया है,जो एक–दूसरे को जोड़ती है। जीवन की गुणवत्ता के कुछ पहलुओं, जिन पर विचार किया जाना चाहिए, उनका उल्लेख नीचे दिया गया है :

- **व्यक्तिगत विषमताएँ–भिन्नताएं (Personal Heterogeneities-Differences):** प्रत्येक व्यक्ति की विशेषताएं भिन्न होती है– चाहे वे उम्र

हो, जेंडर हो, बीमारी हो या दिव्यांगता हो। व्यक्तियों की यही भिन्नताएं उनकी आवश्यकताओं को अद्वितीय बनाती हैं। बनाई गई योजना का अनुसरण करके, कुछ समस्याओं पर समान रूप से विचार कर पाना संभव है।

- **पर्यावरणीय विविधता (Environmental Diversity):** व्यक्तियों की आवश्यकताएं पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण भिन्न–भिन्न होती हैं, अर्थात् व्यक्ति की आवश्यकताएँ ठंड के मौसम, गर्म परिस्थितियों या वर्षा, प्रदूषण से प्रभावित होती हैं। पर्यावरणीय स्थिति लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बदल देती है।
- **सामाजिक जलवायु (Social Climate):** अपराध, हिंसा, शैक्षिक सुविधाएँ, सामुदायिक संबंध और सार्वजनिक या लोक सुविधाएँ सामाजिक पूंजी का स्तर निर्मित करती हैं, जो कि जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।
- **संबंधपरक पहलु (Relational Aspect):** जीवन की गुणवत्ता समुदाय में प्रचलित रिश्तों से प्रभावित होती है, जो संस्कृति, रीति–रिवाजों और मानदंडों पर आधारित होती है। वस्त्र, व्यवहार, स्वाभिमान कुछ ऐसे सूचक हैं, जो यह निर्धारित करते हैं कि कोई व्यक्ति किसी समुदाय में कैसे रहता है।
- **आय वितरण (Income Distribution):** एक परिवार के भीतर आय वितरण परिवार के सदस्यों की भलाई या स्वतंत्रताओं को प्रभावित करता है।

ऐसे कई कारक हैं,जो एक समाज में जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं, लेकिन इसे बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयास करना बहुत महत्त्वपूर्ण है,ताकि मानव विकास हो सके। ऐसा करने में जिन मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है, वे हैं वित्तीय रूढ़िवादिता, यानी सामाजिक लाभ के लिए धन मुहैया कराने कि इच्छा शक्ति। सरकारी बजट में अधिकांश हिस्सा साक्षरता या स्वास्थ्य पर अधिक खर्च करने के बजाय सैन्य खर्च की सुविधा प्रदान करने के लिए आवंटित किया जाता है।

i) **समानता और विविधता (Equality and Diversity):** सतत् विकास ने संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा प्रत्येक देश के क्षेत्रवार सतत् विकास को मापने के लिए तैयार किए गए सूचना–स्तरों को उन्नत किया गया है, लेकिन इसने अमीर और गरीबों के बीच असमानताओं के स्तर को भी बढ़ा दिया है। पूरी दुनिया में वंचितों और गरीबों की संख्या में वृद्धि हुई है। एजेंडा 21 में विकसित देशों को अपने सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product-GDP) का 0.15% विकासशील और अल्पविकसित (कम विकसित अर्थव्यवस्थाओं) को देने का प्रावधान किया गया है। हालाँकि, वे जो अधिकतम दे रहे हैं वह उनके सकल घरेलू उत्पाद का 0.7% है। यदि सहायता का प्रतिशत बढ़ाया जाता है, तो यह माना जाता है कि यह विश्व स्तर पर गरीबी को काफी कम कर देगा।

समानता आयाम विविधता के अगले सामाजिक आयाम की ओर ले जाता है, क्योंकि समाज के वंचित वर्ग आबादी के विभिन्न समूहों से संबंधित हैं। राष्ट्रों को कमजोर लोगों की सहायता के लिए विभिन्न समूहों के बीच असंतुलन को कम करने के लिए समाधानों का निर्धारण करना चाहिए। उदाहरण के लिए, भारत में आरक्षण कोटा प्रणाली है, जो सभी को शिक्षित करने और रोजगार प्रदान करने में मदद करता है।

ii) **सामाजिक सामंजस्य (Social Cohesion):** एक समाज में सामाजिक सामंजस्य का अर्थ है कि समाज लोगों की भलाई के लिए काम करता है। लाभ प्राप्त करने के लिए लोक संस्थानों तक लोगों की पहुंच को सुगम बनाकर उनका हित किया जा सकता है, ताकि वे भी समाज में योगदान कर सकें। उदाहरण के लिए, लोग सरकार के रोजगार केंद्र में पंजीकरण कराके रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सकते हैं। किसी भी समूह में सामाजिक सामंजस्य स्थापित करने के लिए कुछ आवश्यक महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं:

- व्यापक समुदाय में एक समूह से संबद्धता की भावना;
- सामाजिक गतिविधियों में समूह की भागीदारी का स्तर;
- लोक और नागरिक संस्थानों के बारे में जानकारी और उन तक पहुंच; और
- समुदाय के प्रति समाज को समूह का योगदान।

iii) **लोकतंत्र और शासन (Democracy and Governance):** लोकतांत्रिक शासन का अनुसरण करने वाले राष्ट्र में सामाजिक स्थिरता बेहतर ढंग से हासिल की जा सकती है। सरकार द्वारा बनाए गए कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त बजट और ऐसे संसाधनों की आवश्यकता होती है,जो लोकतांत्रिक समाज में उपलब्ध हो सकें।

अमर्त्य सेन (Amartya Sen) व्यक्तियों की ज़रूरतों के बारे में सुस्पष्ट रहे, लेकिन इस तथ्य को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है कि वे भी महत्त्व रखते हैं। ऐसा नहीं माना जा सकता कि सतत् विकास की परिभाषा में वर्णित पीढ़ियों की रुचियों व पसंद एक समान थी। हालाँकि, सामाजिक मुद्दों को आर्थिक या पर्यावरणीय चिंताओं से अलग नहीं किया जा सकता। देशों के बीच व्यापार पर समझौता और बौद्धिक संपदा अधिकारों में व्यापार (General Agreement on Trade and Services and the Trade in Intellectual Property Rights) जैसे व्यापारिक समझौतों से वर्तमान विश्व अधिकारात्मक व्यक्तिवाद (Possessive Individualism) बन गया है। अंतर्राष्ट्रीय संगठन विकास के लिए काम कर रहे हैं, लेकिन व्यापार के उदारीकरण के नाम पर, समुदाय विघटित हो रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप योग्यता और क्षमता का नुकसान हो रहा है। इस चिंता से कई अवधारणाएँ उभर कर सामने आई हैं,जैसे सामुहिक संसाधनों, उदहारण के तौर पर जल वितरण व वनस्पति पर सार्वजनिक अधिकार।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. सतत् विकास के घटकों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

.....

.....

.....

2. सामाजिक सतत् विकास के आयाम पर एक नोट लिखिये।

.....

.....

.....

2.4 सतत विकास के आर्थिक घटक

विकास बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बाद अपेक्षाकृत विकसित अमीर देशों की एक बड़ी चिंता का विषय बन गया, जबकि अधिकांश राष्ट्रों ने यू के, जापान, स्पेन और जर्मनी जैसी शाही ताकतों से आजादी हासिल कर ली थी। आर्थिक विकास दुनिया भर में एक लोकप्रिय नीति एजेंडा था और विकास अर्थशास्त्र विषय की शाखा के रूप में उभरा। यह सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के साथ–साथ आर्थिक साधनों पर भी व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित करता है। विश्व स्तर पर, अधिकांश देशों ने जी डी पी (Gross Domestic Product-GDP) और मानव विकास सूचकांक उपायों में प्रगति की है, हालांकि अफ्रीका में कुछ नकारात्मक वृद्धि भी हुई है। कुछ समस्याओं में निम्नलिखित निहित हैं:

- बढ़ती आय असमानताएँ और पर्यावरण पर विकास का नकारात्मक प्रभाव; तथा
- मौजूदा सामाजिक संरचनाएँ।

विकास की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी और यह है पर्यावरणीय निम्नीकरण, लोगो का विस्थापन, संस्कृति और पारंपरिक स्थानों का नुकसान व क्षति। अधिकतम पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों (लागतों) ने आर्थिक लाभ को नकार दिया है। अब, लोग विकास के इन प्रतिकूल प्रभावों से अवगत हो रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप दुनिया भर में कई विरोध प्रदर्शन हुए हैं। उद्योग और सरकारों पर दबाव ने उन्हें ऐसी नीति और कार्यनीति पर फिर से विचार करने के लिए प्रेरित किया है, जिससे सतत विकास संभव हो सकता है।

- **घातीय युग (Exponential Era)**

21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन ही एक मात्र पर्यावरणीय चिंता का विषय नहीं है। अगले 30–40 वर्षों में दुनिया भर में आबादी को बड़े पैमाने पर तेज़ी से वृद्धि के कारण इससे भी बदतर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पानी और भोजन की कमी और गरीबी के कारण दुनिया के पारिस्थितिक तंत्र, प्रजातियाँ और महासागरों की स्थिति का नुकसान होगा। 21वीं सदी विशेष रूप से वित्तीय क्षेत्र में तेज़ी से बदलाव की दुनिया है। दुनिया के एक कोने में होने वाली छोटी–सी भी घटना वैश्विक अर्थव्यवस्था में निर्बाध गिरावट (Freefall) या अप्रत्याशित उछाल (Unexpected Boom) का कारण बन जाती है। तेल की कीमतों में लगातार उतार–चढ़ाव अर्थव्यवस्थाओं को गड़बड़ा देते हैं। इससे समाज पर भी प्रभाव पड़ता है। गरीब लोगों के आंकड़े, जो एक दिन में एक समय का भोजन नहीं जुटा पाते, वे हमें चौकाने वाले हैं और इस दिशा में किए जाने वाले प्रयास निष्फल रहे हैं। अमीरों और गरीबों के बीच चौंकाने वाली और बढ़ती असमानता गरीबी उन्मूलन की स्थिति को बदतर बना रही है। गरीबी सामाजिक और पर्यावरणी घटकों को समान रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि गरीबों को सतत आजीविका नहीं मिल पाती है। वे प्राकृतिक संसाधनों– जैसे कि ईंधन के लिए लकड़ी, जीवित रहने के लिए मछली, आदि पर अधिक आश्रित होते हैं और पृथ्वी पर बोझ या दबाव डालते हैं। इसके अतिरिक्त, इस सदी में घातीयता के अन्य क्षेत्र हैं, आतंकवाद, हिंसा, महामारी, एड्स, खाद्य सुरक्षा और परमाणु प्रसार।

- **उद्योग की भूमिका (Role of Industry)**

बड़े निजी उद्योगों में प्रौद्योगिकी, ज्ञान, वित्त और राजनीति के क्षेत्रों से सुविधा व सेवाएँ प्राप्त करने का सामर्थ्य होता है, अतः ये सतत् विकास प्राप्त करने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। उनके पास ऐसे मानव संसाधनों को तैनात करने की गुंजाइश होती है, जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए सतत समाधान के बारे में सोच–विचार कर सकते हैं। लोगों को जितने अधिक सतत विकल्प मिलेंगे, वे उतने ही जागरूक

होंगे और उन्हें ही चुनेंगे। वे अपने संगठनों को मुनाफा प्रदान करने के लिए समाधान तलाश सकते हैं और पारिस्थितिकी प्रणालियों को व्यवहार्य बनाए रखने में योगदान दे सकते हैं।

- **आर्थिक सततता (Economic Sustainability)**

सरकार और बाहरी ऋण के संचालनीय स्तर को बनाए रखने के लिए और कृषि या औद्योगिक उत्पादन को नुकसान पहुंचाने वाले चरम क्षेत्रीय असंतुलन से बचने के लिए किसी भी आर्थिक रूप से सतत प्रणाली को नियमित आधार पर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने में सक्षम होना चाहिए।मोटे तौर पर, सततता को आर्थिक दृष्टिकोण से समय के साथ अधिकतम कल्याण करने' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। मानव कल्याण में भोजन, वस्त्र, आवास, परिवहन, स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाएँ आदि शामिल हैं। यह परिभाषा आर्थिक स्थिरता की अवधारणा को एक औसत दर्जे के एकल–आयामी सूचक के रूप में स्पष्ट करती है, हालांकि न्यूनतावादी (सरलीकृत) दृष्टिकोण से इसमें कई जटिलताएँ हैं। नीचे दिए गए नवीकरणीय और गैर–नवीकरणीय संसाधनों के संबंध में प्राकृतिक पूँजी के संरक्षण के संदर्भ में एस डी का संचालन किया जा सकता है।

i) **नवीकरणीय संसाधन (Renewable Resources):** उपज (पैदावार) के स्तर को बनाए रखने के लिए संसाधन की खपत को सीमित किया जा सकता है। गैर–नवीकरणीय संसाधनों के दोहन से प्राप्त लाभ (आय)को फिर से नवीकरणीय प्राकृतिक पूंजी में निवेश किया जाना चाहिए। ये तरीके प्राकृतिक पूंजी के सतत् भंडार को बनाए रखने में मदद करते हैं। एक अन्य दृष्टिकोण है प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास पर आर्थिक विकास करना है। यह दृष्टिकोण संरक्षण के बारे में बात नहीं करता है, लेकिन इस तथ्य पर ज़ोर देता है जैसे कि उदाहरण के लिए, यदि आर्थिक प्रगति का आर्थिक मूल्य, जंगलों को काटकर कारखानों का निर्माण करने से होने वाली क्षति यदि वन भूमि को खोने की क्षति से अधिक है, तो यह आर्थिक रूप से सतत है। हालांकि, यह दृष्टिकोण उस सतत् विकास के साथ औचित्य नहीं रखता है, जिसकी इस ग्रह को आवश्यकता है। इस तरह, एक सुरक्षित न्यूनतम मानक का अनुप्रयोग प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद कर सकता है। समाज प्राकृतिक संसाधनों के प्रभाव की जटिलता के बारे में नियम बना सकता है, जो क्षति और अपरिवर्तनीयता की सीमा से बाहर हो।

ii) **सरकार को आर्थिक सिद्धांत और नीति (Economy Theory and Policy)** में रखने के लिए निम्नलिखित तीन अनिवार्यताओं पर विचार करना चाहिए :

- नैतिक अनिवार्यताएँ;
- लोक निर्णयन; तथा
- सामाजिक मूल्यों का निर्माण।

आर्थिक सिद्धांत के अंतर्गत, बाज़ार और मूल्य निर्धारण की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन सामाजिक निर्णय लेने की प्रक्रिया द्वारा अंतिम लक्ष्य अर्जित करने की योजना बनाई जा सकती है। वर्तमान बाजारों में सतत और चक्रीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि देखी जा रही है।

iii) **चक्रीय अर्थव्यवस्था (Circular Economy):** एक चक्रीय अर्थव्यवस्था में, डिजाइन, उत्पादों और सामग्रियों द्वारा अपशिष्ट और प्रदूषण नहीं होता है। माल के उत्पादन के लिए प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है, जो प्राकृतिक प्रणालियों द्वारा पुनःउत्पादित होते हैं। इसमें हरित वित्तपोषण का उपयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है कि सरकारें नवाचार का उपयोग करती

हैं; महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का पुनर्गठन करती है; मौजूदा पर्यावरणी योजनाओं में तेजी लाती है; आदि। चक्रीय अर्थव्यवस्था और सततता में यह भिन्नता है कि चक्रीय अर्थव्यवस्था तीन घटकों – सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण पर समग्र रूप से विचार करने की बजाय पर्यावरणीय निष्पादन में सुधार पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि सततता सभी तीन पहलुओं को ध्यान में रखती है।

प्रत्येक साझेदार के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था की अपनी–अपनी सौ से अधिक परिभाषाएं हैं, जिनके अर्थ भी भिन्न–भिन्न हैं, लेकिन उन सभी परिभाषाओं में सामान्य कारक तीन आर (3Rs) है। चक्रीय अर्थव्यवस्था आर के तीन सिद्धांतों को नियोजित करती है, जो हैं : कम करना (Reduce), पुनः उपयोग करना (Reuse) और पुनः चक्रण (Recycle)करना। 'कम करना' प्लास्टिक का कम उपयोग करने को निर्दिष्ट करता है; पुनः उपयोग उत्पादों को पुनः इस्तेमाल करना और उन्हें पुनः चक्रित करना है। 3 Rs की कार्यनीति के विभिन्न उदाहरण हैं जैसे कि अपने कपड़ों को निर्दिष्ट स्थानों में फेंकना, ताकि वहाँ उनको धोने, उनको कतरने–कटाने की प्रक्रिया द्वारा उन्हें नए कपड़ों का रूप देकर उनको पुनः चक्रित किया जा सके। यहीं बात मोबाइल फोनों के मामले में भी लागू की जा सकती है। मोबाइल के काम करने योग्य पुर्जों को सुरक्षित रखकर उनका इस्तेमाल नए फोन बनाने में किया जा सकता है। इसे नीचे दिए गए चित्र द्वारा अच्छे से समझाया जा सकता है:

चक्रीय अर्थव्यवस्था

स्रोतः इकाई योगदानकर्ता का सचंयन

ऊपर दिया गया चित्र दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था कैसे पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार हो सकती है और समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। मानव जाति के निरंतर अस्तित्व और कल्याण के लिए तीनों घटक परस्पर संबद्ध हैं। हर कोई विजयी होता है, अगर प्राकृतिक संसाधन संरक्षित हैं; अर्थव्यवस्था लचीली हो जाती है और शांति और मानव अधिकारों के रखरखाव के कारण सामाजिक जीवन में सुधार होता है। जब समाज आर्थिक रूप से जीने व करने योग्य होते हैं, तो लोग पर्यावरण संबंधी चिंताओं, सरोकारों और सामाजिक कल्याण जैसे अन्य मुद्दों को बेहतर ढंग से समझते हैं। इसलिए, आर्थिक सततता के निर्णय सबसे न्यायसंगत और यथासंभव वित्तीय रूप से ठोस रूप से लिए जाते हैं।

सतत् आजीविका के मूल सिद्धांत (Core Principles of Sustainable Livelihood)

एक आजीविका तभी सतत होती है, जब वह प्राकृतिक संसाधनों के आधार को क्षति पहुंचाएं बिना दबाव और झटके का सामना कर सकती है और पुनः उत्थान कर सकती है और वर्तमान व भविष्य दोनों के लिए अपनी क्षमताओं और परिसंपत्तियों को बढ़ा सकती है। माल और सेवाओं को वितरित करने वाले प्रभावी स्थानीय संस्थानों को विकसित करना महत्त्वपूर्ण है, जिसमें सरकारी एजेंसियाँ, नागरिक संगठन और निजी क्षेत्र शामिल हों। सामुदायिक क्षमता–निर्माण और संस्थागत मज़बूती सतत आजीविका सृजित करने के दो प्रमुख प्रयास हैं। सतत् विकास के लक्षय या एस डी जी की उपलब्धि के कार्यक्रम के तहत यह सिफारिश की गई है कि एक सतत आजीविका ढांचे के लिए हर सरकार द्वारा समग्र रूप से योजना तैयार की जानी चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय सतत आजीविका विकास विभाग द्वारा एक गरीबी–केंद्रित विकास का प्रस्ताव तैयार किया है, जो निम्नलिखित मूल सिद्धांतों पर आधारित है :

- **जन–केंद्रित (People-centred):** निम्नलिखित मुद्दों को ध्यान में रखते हुए अधिकांश लोगों से सरोकार रखने वाले मुद्दों के बारे में जानकारी होनी चाहिए:
  - लोगों के विभिन्न समूहों के बीच भिन्नताएँ;
  - लोगों की संस्कृति के अनुरूप सतत आजीविका के ढांचे का संरेखण; तथा
  - लोगों की अनुकूलन कर पाने की क्षमता।
- **अनुक्रियाशील और सहभागी (Responsive and Participatory):** आजीविका की प्राथमिकताएँ निर्धारित करने की प्रक्रिया में समुदाय को इस कार्य में भागीदार बनाया जाना चाहिए। बाहरी एजेंसियां–जो सतत आजीविका के ढांचे को कार्यान्वित करती हैं, उन्हें गरीबों के प्रति अनुक्रियाशील होने के लिए स्थापित प्रक्रियाओं का उपयोग करना चाहिए।
- **बहु–स्तरीय (Multi-level):** गरीबी उन्मूलन या कम करना एक विशाल कार्य है, जिसे केवल सूक्ष्म और स्थूल स्तरों पर ही किया जा सकता है। सूक्ष्म स्तर में ऐसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जो सतत आजीविका प्रदान करती हैं, जबकि स्थूल स्तर में ऐसी संरचनाएँ और प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं, जो लोगों को तद्नुसार अपनी–अपनी योग्यताओं और क्षमताओं का निर्माण करने में सक्षम बनाती हैं।
- **साझेदारी (Partnership):** सार्वजनिक या लोक क्षेत्र अकेला अपने दम पर सतत आजीविका के लिए योजना तैयार करने में सफल नहीं हो सकता है, बल्कि इसे निजी क्षेत्र और गैर–सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम करना होगा।
- **गतिशील (Dynamic):** यह तेज़ी से बदलती दुनिया का युग है और सरकारी एजेंसियों को ऐसे परिवर्तनों के प्रति अनुक्रिया करने के लिए गतिशील व सक्रिय होना चाहिए। उन्हें लोगों की बदलती ज़रूरतों को ध्यान में रखना होगा और इसके लिए ढाँचे और नीतियों की निरंतर जांच करना व उनमें संशोधन की आवश्यकता है।
- **सतत (Sustainable):** चूंकि अध्ययन का विषय सतत आजीविका है, इसलिए 'सतत' शब्द पर ध्यान केंद्रित होना ज़रूरी है। चार प्रमुख आयाम हैं, जो आजीविका को सतत बनाते हैं, ये आयाम है–आर्थिक, संस्थागत, सामाजिक और पर्यावरणीय आयाम।

सतत आजीविका के लिए रूपरेखा बनाने में उपरोक्त सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाना चाहिए:

सतत निगमीय जिम्मेदारी (Sustainable Corporate Responsibility)

निजी क्षेत्र अपनी सामाजिक कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के एक भाग के रूप में सतत नीतियों को लागू करके सतत् विकास की दिशा में काम करने का एक प्रमुख क्षेत्र हो सकता है। स्थानीय समुदाय को ऐसे कार्यक्रमों और गतिविधियों में संलग्न किया जा सकता है, जिनका सरोकार पृथ्वी ग्रह का स्थायित्व हो, उदाहरण के लिए, अपने क्षेत्रों में झीलों और नदियों की सफाई अभियान या पेड़ों का रोपण करना। वे किसी भी समारोह, प्रदर्शनी, मेलों, इत्यादि को प्रायोजित करके, उस समारोह में अपने बैनर (Banner) लगाकार निजी क्षेत्र प्रचार अभियानों द्वारा अच्छी छवि या सद्भावना का लाभ उठा सकते हैं। जलवायु परिवर्तन और स्थिरता के बारे में कार्यनीतियाँ बनाकर कॉर्पोरेट द्वारा सामाजिक जिम्मेदारी के परोपकारी पहलू का लाभ उठाया जा सकता है।

विनियम और भ्रष्टाचार (Regulations and Corruption)

सरकारें पर्यावरण से संबंधित कानून और नियम तो बनाती हैं, लेकिन अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं के कारण उनमें कानून या नियम के प्रवर्तन की क्षमता नहीं होती है। भ्रष्टाचार भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों में बाधा डालता है, क्योंकि यह उद्योगपतियों को परमिट और लाइसेंस सुलभ कराने में मदद करता है। भ्रष्टाचार वैश्विक सतत आपूर्ति शृंखला में बाधा उत्पन्न करता है, जिसके परिणामस्वरूप नकली डेटा और सतत तैयार उत्पाद की आपूर्ति में व्यवधान होता है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य क्षेत्र में, समाज के गरीब वर्गों से संबंधित रोगियों को मुफ्त में दी जाने वाली दवाएँ काले बाज़ार में बेची जाती हैं, जबकि निर्धन वर्ग के रोगियों को अपनी जेब से दवाएँ खरीदनी पड़ती हैं, जिसे खरीदने का उनमें सामर्थ्य नहीं होता। यदि, सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में भ्रष्टाचार पर तत्काल ध्यान नहीं दिया गया, तो स्वास्थ्य और कल्याण खतरे में है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ यथोचित कार्यवाही न होने के कारण, सतत् विकास के अन्य लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रगति बेहद सीमित होती जा रही है, विशेष रूप से, आर्थिक विकास के क्षेत्रों में। जिन देशों में पारदर्शिता, जवाबदेही और संस्थान कमज़ोर हैं, वहाँ भ्रष्टाचार अधिक पनपता है। यह भ्रष्टाचार सार्वजनिक लोक संस्थानों में लोगों की वैधता और विश्वास को कम करता है, और सार्वजनिक या लोक सेवाओं और वस्तुओं के वितरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। ये स्थितियाँ आर्थिक स्थिरता की उपलब्धि के लिए प्रासंगिक हैं। कई अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों– जैसे एशियाई विकास बैंक (Asian Development Bank-ADB), आर्थिक समन्वय व विकास के लिए संगठन, ओई सी डी, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल और विश्व आर्थिक मंच (Organisation for Economic Coordination and Development–OECD, Transparency International and World Economic Forum) ने भ्रष्टाचार विरोधी कार्यनीति तैयार की है। उन्होंने भ्रष्टाचार के स्तर पर देशों को श्रेणीबद्ध करने के लिए भ्रष्टाचार की जानकारी से संबंधित सूचकांक विकसित किया है, ताकि उनपे अपनी भ्रष्टाचार विरोधी नीतियों और कार्यनीतियों को लागू करने के लिए दबाव डाला जा सके।

2.5 सतत् विकास के पर्यावरणीय घटक

सतत् विकास का तीसरा घटक पर्यावरणीय–संरक्षण है, जो आर्थिक विकास व सामाजिक असमानताओं के प्रतिकूल प्रभावों के कारण क्षतिग्रस्त हो रहा है। तीनों घटक एक–दूसरे में व्याप्त हैं अर्थात् इनमें परस्पर व्याप्ति है,क्योंकि ये घनिष्ठ रूप से अंतःसंबद्ध हैं और हमारे जीवन पर प्रभाव डालते हैं। सस्ती जीवाश्म ऊर्जा (कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस) ने निस्संदेह आर्थिक विकास को तेज गति से आगे बढ़ाया है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप अरबों टन ग्रीनहाउस गैसों (Greenhouse Gases-GHG-जी एच जी)

वाले पर्यावरण को नुकसान हुआ है। आज यह जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से एक है। मूल रूप से, **सतत् विकास के लिए जोहान्सबर्ग योजना के कार्यान्वयन** (Johannesburg Plan of Implementation for Sustainable Development) पर जोर दिया गया :

- बायोमास और ऊर्जा का सतत् उपयोग;
- विशेष रूप से विकसित देशों में खपत और उत्पादन के अस्थिर पैटर्नों को बदलना;
- ज्यादा स्वच्छ उत्पादन और पर्यावरण–दक्षता की ओर अग्रसर होना;
- निजी कंपनियों और प्राधिकरणों को सम्मिलित करना;
- केंद्रीय क्षेत्रों में परिवहन, अपशिष्ट और रसायन शामिल हैं;
- आर्थिक और सामाजिक विकास के प्राकृतिक संसाधन आधार का संरक्षण और प्रबंधन;
- पर्यावरणीय क्षति के प्रतिकूल प्रभाव से निपटने के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र के बुनियादी ढाँचे में सुधार;
- वैश्वीकरण की दुनिया में अर्थव्यवस्थाओं और समाजों का एकीकरण;
- छोटे द्वीप विकसित करने वाले राज्यों को प्रौद्योगिकी, क्षमता–निर्माण, तटीय जैव विविधता, आदि में सहायता प्रदान की जानी चाहिए;
- अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में क्षेत्रीय प्रयास; तथा
- कार्यान्वयन और संस्थागत ढांचे के उन्नयन के साधन।

विकास और पर्यावरण (Growth and Environment)

पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की ब्रंटलैंड रिपोर्ट (1987) में गरीबी और सामाजिक आवश्यकताओं के साथ–साथ सतत् विकास का उल्लेख भी किया गया है। गरीबी को कम करना पर्यावरण संरक्षण के लिए एक अनिवार्यता है और सतत् विकास की दिशा में एक योगदान है। सतत् विकास और पर्यावरण के बीच एक एकीकृत संबंध है, जो पर्यावरण पर मानव गतिविधियों के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के तरीकों (उपायों) को निर्धारित करता है। सतत् पारिस्थितिक परिप्रेक्ष्य पर्यावरण–विकास का उल्लेख करता है,जो जैवमंडल को सुरक्षित करने में मदद करेगा, अर्थात् जैव विविधता; जीवन की गुणवत्ता में सुधार और पर्यावरण की रक्षा करना। पर्यावरण व विकास का मार्गदर्शन करने वाले तीन मूलभूत तथ्य नीचे दिए गए हैं :

- मानव आर्थिक गतिविधि एक बड़े पारिस्थितिकी तंत्र में की जाती है, लेकिन प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधन में कमी इसके दुष्प्रभाव हैं;
- जनसंख्या में घातीय वृद्धि प्राकृतिक कारणों की कमी और अपशिष्ट–आयतन में वृद्धि का दूसरा कारक है; और
- आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप होने वाले पर्यावरणीय परिवर्तन अपरिवर्तनीय हैं।

इसलिए, सतत् विकास के लिए सामाजिक–आर्थिक निर्णयन में पर्यावरणीय सरोकारों व चिंताओं को सम्मिलित करने की आवश्यकता है। सार्वजनिक या लोक क्षेत्र नीति–निर्माण में पर्यावरण के प्रभाव के सूचकों का सहारा ले रहा है, उदाहरण के लिए, राजमार्गों के निर्माण में, निजी हितधारक को सड़क डिवाइडर पर पेड़ या फूल लगाने के लिए कहा जाता है। इसे विकास और पर्यावरण के बीच अदला–बदली (Trade off) कहा जा सकता है।

सतत् विकास लक्ष्यों (एस डी जी) के माध्यम से एकीकरण (Integration through Sustainable Development Goals -SDGs)

सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडा एक संतुलित और एकीकृत तरीके से, इसके तीन आयामों – आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण में सतत् विकास को प्राप्त करने का प्रयास करता है। एशिया और प्रशांत के लिए सयुंक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (UN Economic and Social Commission for Asia and the Pacific -ESCAP) एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए नीति में चार नीतिगत बदलावों की आवश्यकता पर जोर देता है :

1. **मूल नीति (Fundamental Policy):** सामाजिक न्याय और पारिस्थितिक सततता की मूलभूत शर्तें सीमांत उद्देश्य न होकर मूल नीति उद्देश्य होनी चाहिए।
2. **दीर्घकालिक लाभ (Long-term Benefits):** मुख्य रूप से अल्पकालिक नीति के स्थान पर दीर्घकालिक लाभों वाली एक ऐसी नीति को स्थान दिया जाना चाहिए, जिससे सभी लाभान्वित हो सके।
3. **सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिस्थापन (Replacement of GDP):** प्रगति के उपाय के रूप में सकल घरेलू उत्पाद (जी डी पी) पर ध्यान केंद्रित न करके, ऐसे माप सिद्धांत को लाना चाहिए., जो कि सतत विकास के तीन आयामों को सम्मिलित करता है।
4. **सीमित संसाधन (Limited Resources):** लोक नीति को यह स्वीकार करना होगा कि पृथ्वी के संसाधन असीम नहीं हैं और संसाधन की कमी को हमेशा प्रौद्योगिकी द्वारा दूर नहीं किया जा सकता है।

उपर्युक्त नीतिगत बदलाव एस डी जी नीतियों के कार्यान्वयन के बारे में सार्वजनिक निर्णय लेने में मुद्दों पर ध्यान दिलाएंगे। यदि नीतियों में इन बदलावों को स्थान नहीं दिया जाता है, तो नकारात्मक बर्हिमुखताओं का परिणाम प्रदूषण, उत्सर्जन, अपशिष्ट और सामाजिक झड़पें होंगे। हालांकि, यह केवल सरकारी क्षेत्र में संस्थागत ढांचों और क्षमता निर्माण को मज़बूत करके ही किया जा सकता है। राजनीतिक प्रतिबद्धता और भविष्य के लिए एक समावेशी दृष्टिकोण सतत विकास का कारण बन सकता है। सरकारों द्वारा जिन चुनौतियों का सामना किया जा रहा है, वे हैं एजेंडा तैयार करना; नीति निर्धारण; नीति का कार्यान्वयन; और नीति की निगरानी का मूल्यांकन।

निवेश, व्यापार और संबंधित आर्थिक गतिविधियों के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय आयामों को एकीकृत करने के लिए उपयुक्त मात्रात्मक और विश्लेषणात्मक ढांचे के रूप में आगत–निर्गत (Input-output) विश्लेषण का उपयोग किया गया है। आगत (निविष्टि) प्राकृतिक संसाधन और पूंजी हैं, जबकि निर्गत (उत्पत्ति) उत्पादित माल और सेवाएं हैं। दोनों के बीच संतुलन से एकीकरण होगा और इससे एस डी जी को प्राप्त किया जा सकेगा। न्यूजीलैंड जैसे देश एकीकृत दृष्टिकोण का उपयोग कर रहे हैं, जिसमें कई सूचक शामिल हैं।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. सतत् विकास के आर्थिक घटकों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

2. आर्थिक सतत् विकास के चक्रीय अर्थव्यवस्था के महत्त्व की जांच कीजिए।

.....

.....

.....

3. सतत् विकास के पर्यावरणीय घटकों पर विस्तार से चर्चा कीजिए ।

.....

.....

.....

.....

2.6 निष्कर्ष

सतत् विकास के तीन घटकों या आयामों में एकीकरण के माध्यम से सतत् विकास प्राप्त किया जा सकता है। गुणात्मक परिदृश्य चिन्तन सतत् विकास के लिए आवश्यक है,क्योंकि इसमें उन सभी हितधारक शामिल रहते हैं, जो कि भविष्य में विकल्पों की तलाश करने के लिए नीति बनाने में भागीदार होते हैं, चाहे वे वांछित हों या नहीं। कई विकास एजेंसियाँ हरित अर्थव्यवस्था मॉडल को अपना रही हैं, जिसके अंतर्गत सतत् विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया हैं, ताकि मानव अर्थव्यवस्था और समाज परिभाषित पारिस्थितिक सीमाओं के भीतर कार्य कर सकें। गुणात्मक परिदृश्य मात्रात्मक विश्लेषणों को समर्थन और आगत प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, भविष्य के लिए खाद्य उत्पादन और भोजन तक पहुंच की छानबीन करने के लिए सृजित परिदृश्यों में उपज अंतराल को समाप्त करने और सिंचाई जल के उपयोग की दक्षता बढ़ाने, जनसांख्यिकीय संक्रमण के बारे में मान्यताओं, मानव पूंजी विकास (उदाहरण के लिए, शिक्षा तक पहुंच में वृद्धि और विकासशील देशों में आर्थिक वृद्धि दर) और ग्लोबल वार्मिंग के विशेष स्तरों के बारे में प्रौद्योगिकीय रूप से संभव धारणाएँ शामिल हो सकती हैं। शासन प्रक्रियाओं की नीतियों और बजट में सततता को भी शामिल किया जा रहा है। भारत का केंद्रीय बजट, स्थापित 17 एस डी जी के दिशा–निर्देशों के अनुसार अपना बजट तैयार करता है और राज्य भी अपने बजट निर्माण में इसी का पालन करते हैं। इस इकाई में इन सभी मुध्दों का विश्लेषण किया गया।

2.7 शब्दावली

एजेंडा 21 (Agenda 21): एजेंडा 21 एक 900 पेज का दस्तावेज है, जो सतत् विकास के तीन स्तंभों को मजबूत करने के लिए चार क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है। ये हैं : सामाजिक और आर्थिक आयाम; संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन; प्रमुख समूह; और कार्यान्वयन के साधन।

घातीय युग (Exponential Era): यह एक घातीय युग है, क्योंकि दुनिया भर में आबादी में बड़े पैमाने पर घातीय वृद्धि के कारण अगले 30–40 वर्षों में और बदतर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पानी और भोजन की कमी; और गरीबी दुनिया के पारिस्थितिक तंत्र, प्रजातियों और महासागरों की स्थिति के लिए संकट उत्पन्न करेंगे।

व्यापार और सेवाओं पर सामान्य समझौता (General Agreement on Trade and Services): यह विश्व व्यापार संगठन की एक संधि है, जिसे जनवरी 1995 में लागू किया गया था। यह संधि बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली को सेवा क्षेत्र में विस्तारित करने के लिए बनाई गई थी।

व्यक्तिगत विषमताएँ–भिन्नताएं (Personal Heterogeneities -Differences): प्रत्येक व्यक्ति की विशेषताएं भिन्न होती है– चाहे वे उम्र हो, जेंडर हो, बीमारी हो या दिव्यांगता हो। व्यक्तियों की यही भिन्नताएं उनकी आवश्यकताओं को अद्वितीय बनाती हैं।

जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life): इसमें किफायती आवास (सस्ते घर), शारीरिक और मानसिक चिकित्सा सहायता, शिक्षा प्रशिक्षण के अवसर, रोज़गार के अवसर, सहायक और सुरक्षा जैसे विभिन्न तत्व शामिल हैं। जीवन की गुणवत्ता प्रत्यक्ष रूप से एक समाज के व्यक्तियों की भलाई की ओर संकेत करती है।

सामाजिक सामंजस्य (Social Cohesion): एक समाज में सामाजिक सामंजस्य का अर्थ है कि समाज लोगों की भलाई के लिए काम करता है।

सतत् विकास (Sustainable Development): सतत् विकास को उस विकास के रूप में परिभाषित किया गया था, जो भावी पीढ़ियों की ज़रूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की ज़रूरतों को पूरा करता है, यह ब्रंटलैंड रिपोर्ट के नाम से भी विख्यात है।

सतत् विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals): संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में 17 सतत् विकास लक्ष्यों (एस डी जी) का निर्माण किया, जिसमें अधिकांश प्रासंगिक क्षेत्रों को कवर (Cover) किया गया, जिन्हें 193 सदस्य देशों ने हासिल करने का संकल्प लिया।

सतत् आजीविका (Sustainable Livelihoods): एक आजीविका तब सतत होती है, जब वह प्राकृतिक संसाधनों के आधार को कम किए बिना दबावों और झटकों का सामना कर सकती है या अपनी क्षमताओं और परिसंपत्तियों को वर्तमान में और भविष्य दोनों में बढ़ा सकती है।

बौद्धिक संपदा अधिकारों में व्यापार (Trade in Intellectual Property Rights): यह बौद्धिक संपदा के सात रूपों, अर्थात् कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, भौगोलिक संकेत, पेटेंट आदि की उपलब्धता, कार्यक्षेत्र और उपयोग के लिए न्यूनतम मानक स्थापित करता है।

2.8 संदर्भ लेख

Bawa, K.S. & Seidler, R. (2009). *Dimensions of Sustainable Development*. Oxford:EOLSS Publishers.

Corona, B., Shen, L., Reike, D., Carreon, J.R. &Worrel, E. (2019). Towards Sustainable Development through the Circular Economy – A review and critical assessment on current circularity metrics. Retrieved from https://dspace.library.uu.nl/handle/1874/385098

Duran, D.C., Gogan, L.M., Artene, A. & Duran, V. (2015). The Components of Sustainable Development – A Possible Approach. *Procedia Economics and Finance*. 26, 806-811.

Frankenberger, T.R. (n.d.). A Brief Overview of Sustainable Livelihoods Approaches. Retrieved from http://www.fao.org/3/X9371e/x9371e22.htm#:~:text=Sustainable%20livelihood.,base%20(Chambers%20%26%20Conway)

Hardisty, E. P. (2010). *Environmental and Economic Sustainability*. CRC Press.

Higgins, L.K. (2015). *Economic Growth and Sustainability – Systems Thinking for a Complex World*. Elsevier Inc.

https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0921344919304045

Labelle, H. (2009). Anti-Corruption and the Sustainable Development Platform. Retrieved from https://www.oecd.org/site/adboecdanti-corruptioninitiative/meetingsandconferences/44442140.pdf

Mahajan, A.P. (2019). *Development Administration.* New Delhi, India: Sage Publishers.

Meo, B. (2020). How can the Circular Economy Support Sustainable Development? Retrieved from https://plana.earth/academy/how-can-the-circular-economy-support-sustainable-development/

Rogers, P.P., Jalal, K.F. & Boyd, J.A. (2008). *An Introduction to Sustainable Development*. Glen Educational Foundation, Inc.

Rubio, D.F. &Andvig, E. (2019). Serious about Sustainability? Got serious about corruption. Retrieved from https://www.weforum.org/agenda/2019/09/serious-about-sustainability-get-serious-about-corruption/

Sen, A. (1999). *Development as Freedom*. Delhi, India: Oxford University Press.

UNESCAP. (2015). Integrating the Three Dimensions of Sustainable Development. A Framework and Tools. Retrieved from https://www.unescap.org/sites/default/files/Integrating%20the%20three%20dimensions%20of%20sustainable%20development%20A%20framework.pdf

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहिये:**
   - विकास प्रशासन द्वारा बदलते आर्थिक और सामाजिक वातावरण के अनुरूप अपने दायित्व को पूरा करने में विफलता के फलस्वरूप सतत् विकास प्रर्वतन में आया।
   - ब्रटंलैंड रिपोर्ट–जिसमें से दो मुख्य अवधारणाएँ मूल रूप से पृथ्वी के संसाधनों के सतत प्रबंधन की प्रक्रिया से जुड़ी हैं : i) मानवता की बुनियादी ज़रूरतें और ii) विकास की सीमाएँ।
   - शब्द, 'सततता' विकास और पर्यावरण के बीच की खाई को पाटने का उल्लेख करता है।
2. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहिये:**
   - सामाजिक घटक में सततता को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित सामाजिक और मानव घटक शामिल है। इसका उद्देश्य सामाजिक–सांस्कृतिक सततता का निर्माण करना है, और लोगों के अकेलेपन या अलगाव की सामाजिक बीमारियों को रोकना है।
   - सामाजिक सतत् विकास के आयाम:

     i) जीवन की गुणवत्ता ii) समानता और विविधता

     iii) सामाजिक सामंजस्य iv) लोकतंत्र और शासन

बोध प्रश्न 2

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहिये:**
   - उद्योग और सरकारों पर दबाव ने उन्हें नीति और कार्यनीति पर फिर से विचार करने के लिए प्रेरित किया है, जिससे सतत विकास संभव हो सकता है।

- 21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन ही एकमात्र पर्यावरणीय चिंता का विषय नहीं है। अगले 30–40 वर्षों में दुनिया भर में आबादी को बड़े पैमाने पर तेज़ी के साथ बदतर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पानी और भोजन की कमी; और गरीबी के कारण दुनिया के पारिस्थितिक तंत्र, प्रजातियों और महासागरों की स्थिति को नुकसान होगा।
- बड़े निजी उद्योगों में प्रौद्योगिकी ज्ञान, वित्त और राजनीतिक क्षेत्र से सुविधाएँ प्राप्त करने का सामर्थ्य होता है। अतः ये क्षेत्र में क्षमता है, पता है कि कैसे, वित्त, और राजनीति में सतत् विकास प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उनके पास मानव संसाधनों को नियोजित करने की क्षमता होती है, जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए स्थायी समाधान के बारे में सोच–विचार कर सकते हैं।
- एक आर्थिक रूप से स्थायी प्रणाली सरकार और बाहरी ऋण के प्रबंधनीय स्तर को बनाए रखने के लिए और कृषि या औद्योगिक उत्पादन को नुकसान पहुंचाने वाले चरम क्षेत्रीय असंतुलन से बचने के लिए किसी भी आर्थिक रूप से यानी प्रणाली के नियमित आधार पर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने में सक्षम होना चाहिए।
- सरकार को सततता प्राप्त करने के लिए तीन आवश्यकताओं पर विचार करना चाहिए– नैतिक अनिवार्यताएँ, लोक निर्णय; और सामाजिक मूल्यों का निर्माण।

2. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

- एक चक्रीय अर्थव्यवस्था में, अवशेष व प्रदूषण, उत्पाद सामग्री और डिजाइन से मौजूद नहीं होते। प्राकृतिक माल के उत्पादन के लिए प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है, जो प्राकृतिक प्रणालियों द्वारा पुनर्उत्पादित होते हैं। इसमें हरित वित्त पोषण का उपयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है कि सरकारें नवाचार का उपयोग करती हैं; महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का पुनर्गठन; मौजूदा पर्यावरणीय योजनाओं में तेज़ी लाना; आदि।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था तीन आर (3Rs) सिद्धांतों को नियोजित करती है, ये हैं : कम करना, पुनः उपयोग और पुनः चक्रण।'कम करना' प्लास्टिक के उपयोग को कम करने को निर्दिष्ट करता है; पुनः उपयोग उत्पादों का दुबारा इस्तेमाल और पुनः चक्रण उनका दुबारा चक्रण करने का हवाला देता है।

3. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

- सतत् विकास का तीसरा घटक पर्यावरण संरक्षण है, जो आर्थिक विकास और सामाजिक असमानताओं के प्रतिकूल प्रभावों के कारण क्षतिग्रस्त हो रहा है।
- पर्यावरणीय घटक पर सतत् विकास के लिए जोहान्सबर्ग योजना के कार्यान्वयन पर जोर।
- विकास और पर्यावरण।
- सतत् विकास लक्ष्यों के माध्यम से एकीकरण।

इकाई 3 सतत विकास के दृष्टिकोण*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 यथास्थिति दृष्टिकोण

3.3 सामुदायिक क्षमता निर्माण दृष्टिकोण

3.4 औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण

3.5 एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण

3.6 मानव विकास दृष्टिकोण

3.7 हरित लेखा दृष्टिकोण

3.8 निष्कर्ष

3.9 शब्दावली

3.10 संदर्भ लेख

3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बाते समझ सकेंगे :

- यथास्थिति दृष्टिकोण का विवरण;
- सामुदायिक क्षमता निर्माण दृष्टिकोण का उद्वेश्य;
- औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण का स्वरूप;
- एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण का वर्णन;
- मानव विकास दृष्टिकोण की व्याख्या; तथा
- हरित लेखा दृष्टिकोण की प्रासंगिकता।

3.1 प्रस्तावना

यद्यपि 1970 के दशक में सतत विकास (Sustainable Development-SD-एस डी) अवधारणा की कल्पना की गई थी, यह 1987 में पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग (World Commission on Environment and Development WCED या ब्रंटलैंड आयोग-Brundtland Commission) के साथ विकास के प्रबंध का केंद्र बिंदु बन गया और 2015 में 'हमारा सामुहिक भविष्य– Our Common Future' पर इसकी रिपोर्ट, सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals-SDGs-एस डी जी) को साथ में लेते हुए समापन हुई।

1992 में, एस डी जी को संयुक्त राष्ट्र द्वारा परिभाषित किया गया था,लेकिन राष्ट्र अपनी उपलब्धि की ओर अग्रसर होने में अधिकतर असफल रहे थे। विश्व नेता 2012 में एक साथ आए और सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों (Millennium Development Goals-MDGs-

---

* योगदानः डॉ अनुपमा पुरी महाजन, पूर्व उतर–डॉक्टोरल शोधकरता, लोक प्रशासन विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविध्यालय, शिमला

एम डी जी) को प्राप्त करने के लिए रूपरेखा विकसित की, लेकिन वे किसी भी सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक कार्यसूची निर्धारित नहीं कर सके। हम अपनी आगामी इकाई में एस डी जी (सतत विकास लक्ष्यों) पर विस्तार से चर्चा करेंगे, वैश्विक सततता पर उच्च–स्तरीय नामिका ने एस डी के सार्वभौमिक सिद्धांतों की एक रूपरेखा (Framework) विकसित की, जो नीचे दिए गए हैं:

- यह केवल विकासशील देशों की ही नहीं, बल्कि सभी देशों के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करते हुए स्वरूप में सार्वभौमिक होना चाहिए।
- इसे सतत विकास के लिए व्यापक रूप से सहमत वैश्विक कार्यनीति को व्यक्त करना चाहिए।
- इसमें ऐसे प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए, जो एम डी जी में संपूर्ण रूप से सम्मिलित नहीं थे।
- यह व्यापक होना चाहिए, जो एस डी के सभी तीनों आयामों को दर्शाए।
- इसे संभवतः 2030 की समय सीमा के आगे देखते हुए, लंबी अवधि के कार्य–क्षेत्र में होते हुए निकट अवधि के बेंचमार्क को शामिल करना चाहिए।
- इसे संसाधनों को कार्यान्वयन करने और संचालित करने में सभी हितधारकों को शामिल करना चाहिए।
- इसे लक्ष्यों की समीक्षा के लिए विकसित हो रहे वैज्ञानिक साक्ष्य का कार्य–क्षेत्र प्रदान करना चाहिए (यू एन–UN, 2013)

2015 में, संयुक्त राष्ट्र ने 17 एच डी जी स्थापित किए, जिसके तहत 169 संकेतक राष्ट्रों द्वारा पालन करने के लिए विकसित किए गए हैं। 193 राष्ट्र सदस्यों ने इन एस डी जी की छत्रछाया के नीचे काम करने का संकल्प लिया, जिसमें से भारत भी भाग लेने वाला एक सदस्य है। यह इकाई एस डी के दृष्टिकोणों की व्याख्या करती है, जिसके अंतर्गत कई दृष्टिकोण है, लेकिन इस इकाई में केवल प्रमुख दृष्टिकोणों की ही व्याख्या की जाएगी।

3.2 यथास्थिति दृष्टिकोण

यथास्थिति दृष्टिकोण (Status Quo Approach) के समर्थकों का विश्वास है कि किसी भी मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ऐसी कोई समस्या नहीं है, जिसका समाधान असंभव है। हालांकि, परिवर्तनों की आवश्यकता होती है, जिन्हें समायोजन करके किया जा सकता है, निर्णय निर्माण या शक्ति संबंधों के साधनों को बदलना कोई अनिवार्य नही है (होपवुड व अन्य- Hopwood *et al.*, 2005)। यह, जो कुछ वे जानते हैं, उसी से जुडे रहना और सामान्य बदलाव का विरोध करना की मानवीय प्रवृत्ति पर आधारित है। एक अन्य कारक जो यथास्थिति में योगदान देता है, वह लॉक–इन (Lock-in-बंद करना) तंत्र है, जो वर्तमान प्रणाली में स्थिरीकरण के लिए है। जो गतिविधियां चल रही हैं उसके माध्यम से बढ़ते लाभों से उत्पन्न जड़ता के कारण विकल्पों में से चयन करना कठिन हो जाता है। दृष्टिकोण में मूलतत्व है:

- अधिक वृद्धि एस डी को बढ़ावा देगी और कराधान (Taxation) की प्रगतिशील प्रकृति को कम करने के लिए सरकारों के निर्णय का समर्थन करेगी;
- व्यवसाय सततता का चालक है;
- एस डी प्राप्त करने के लिए सबसे अच्छा साधन अधिक जानकारी; बदलते मूल्य, नई प्रौद्योगिकियाँ और नवाचार है;

- बाजार, कराधान और सब्सिडी के परिवर्तन का उपयोग करते हुए वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए सतत प्रक्रियाओं का उपयोग अच्छी जानकारी को आधार बनाकर करेंगे।
- सरकारों की कम भूमिका से उन नए पूँजीपतियों का उदय होगा, जो एस डी को प्राप्त करने के लिए निगमित नागरिकता और नैतिक व्यवसाय में लिप्त होंगे।
- एक ओर सुशासन में वृद्धि, और दूसरी ओर भ्रष्टाचार में कमी से सततता के निकट पहुंचने में सहायता मिलेगी।
- ई आई ए (Environmental Impact Assessment -EIA-पर्यावरण प्रभाव आकलन) जैसी तकनीके, (Eco-Management and Audit System-EMAS-पर्यावरण प्रबंधन और लेखा परीक्षा प्रणाली), बी ए टी एन इ इ सी (Best Available Techniques Not Entailing Excessive Costs-BATNEEC- सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध तकनीक जिसकि अत्यधिक कीमत आवश्यक नहीं) और लागत लाभ विश्लेषण (Cost Benefit Analysis) एस डी प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं।

समर्थकों के यथास्थिति दृष्टिकोण को पर्यावरणीय सततता के लिए मजबूत प्रतिबद्धता के रूप में नहीं जाना जाता है, क्योंकि वे प्रौद्योगिकी को प्रकृति के प्रतिस्थापन के रूप में सोचते हैं। हालांकि इस दृष्टिकोण को विश्व बैंक ने गरीबी को कम करने के दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार किया है, लेकिन यह एस डी के लिए नीतिगत दृष्टिकोण में एक मजबूत बदलाव के बारे में बात नहीं करता है।

3.3 सामुदायिक क्षमता निर्माण दृष्टिकोण

सामुदायिक क्षमता निर्माण दृष्टिकोण (Community Capacity Building or the CCB Approach) गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या में कौशल, विकास और ज्ञान के आधार में वृद्धि का प्रस्ताव रखता है। उन्हें समाज में शामिल कर लाभप्रद होने के लिए कौशल और ज्ञान के साथ सक्षम होने की आवश्यकता है, ताकि वे समाज में योगदान दे सकें। एस डी ग्रामीण आबादी के अधिकांश हिस्से की सेवा करता है और फोर्ड संस्था के ABCD मॉडल (ABCD Model of the Ford Foundation) का उद्देश्य है–सभी पीढ़ियों में अर्जित करना, विकास, सुधार या हस्तांतरण (Acquire, Develop, Improve or Transfer)–परिसंपत्तियों का निर्माण ABCD (ए बी सी डी) दृष्टिकोण में तीन मुख्य क्षेत्र नीचे दिए गए हैं, जहाँ ABCD मॉडल लागू किया जा सकता है:

i) **संसाधन (Resources)**: वित्तीय संपत्ति, प्राकृतिक संसाधन (वन, वन्यजीव-Forests, Wildlife); और पशुपालक स्थायी आजीविका प्रदान करते हैं। हवा और पानी (यू एन-UN, 2013) को साफ करने, पुनरावृति करने और नवीकरण करने में उनका सांस्कृतिक और पर्यावरणीय महत्व है।

ii) **सामाजिक बंधन (Social Bonds)**: सामाजिक बंधन और सामुदायिक संबंध गरीबों को सहायता प्रदान करने में समुदाय के निवेश को प्रोत्साहित करते हैं।

iii) **मानव संपत्ति (Human Assets)**: मानव संपत्ति व्यक्तियों में उस कौशल को संदर्भित करता है, जो उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और मजदूरी प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं।

इस मॉडल के अंतर्गत, कई गतिविधियां और कार्यक्रम सफलतापूर्वक आरंभ किए गए हैं, जिससे सततता अभियान चलाए गए हैं, उदाहरण के लिए गरीब लोगों को सड़क से खाली डिब्बे और प्लास्टिक की बोतलें लाने के लिए एक छोटा सा दान करके सफाई अभियान का आयोजन करना। यह जिन उद्देशों की पूर्ति करता है, वे हैं सततता और

साथ ही गरीबों के लिए सहायता प्रदान करना। इस तरह के सहभागी CCB दृष्टिकोण ने सतत विकास के तीन आयामों–सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण को एकीकृत करते हुए विश्व भर के ग्रामीण गरीब लोगों की सहायता की है।

एस डी जी के बारे में संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकाशित नई कार्यावली (New Agenda) में, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सबसे कमजोर को सशक्त होना चाहिए। कार्यावली में जिनकी आवश्यकताएं परिलक्षित होती हैं, उनमें सभी बच्चे, युवा, विकलांग व्यक्ति (जिनमें 80 प्रतिशत गरीबी में रहते हैं), एच आई वी/एड्स से पीड़ित लोग, वृद्ध व्यक्ति, स्वदेशी लोग, शरणार्थी और आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्ति और प्रवासी शामिल हैं (HIV/AIDS, older persons, indigenous peoples, refugees and internally displaced persons and migrants – UN, 2015)।

एस डी जी के कार्यान्वयन के लिए सरकारों, निजी क्षेत्र, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली और नागरिक समाज को शामिल करके एक वैश्विक भागीदारी की आवश्यकता होगी। नई कार्यावली में यह भी कहा गया कि संयुक्त राष्ट्र स्थानीय प्राधिकरणों और समुदायों के साथ मिलकर हमारे शहरों और मानव बस्तियों को नवीनीकृत करने और योजना बनाने के लिए काम करेगा, ताकि सामुदायिक सामंजस्य और व्यक्तिगत सुरक्षा को बढ़ावा दिया जा सके और नवाचार और रोजगार को बढ़ावा दिया जा सके।

3.4 औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण

औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण, सामान्य रूप से औद्योगिक दृष्टिकोण (Industrial Sector Approach, commonly referred to as Industry Approach) के रूप में संदर्भित एस डी जी (सतत विकास लक्ष्यों) के कार्यान्वयन और उपलब्धि को संबोधित करने में व्यापार की भूमिका को सूचित करता है। औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण एक तरह से एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण के अंतर्गत आता है, क्योंकि सतत विकास के तीन घटकों को एक साथ प्राप्त करना है। यहां तक कि यदि एक घटक की उपेक्षा की जाती है, तो यह सकारात्मक प्रभाव को नकारने वाले अन्य दो पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। निजी क्षेत्र को विकास के उद्देश्यों के लिए कई तरीकों से योगदान करने की क्षमता के साथ एक भागीदार के रूप में रेखांकित किया गया है, जो है:

- आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देना;
- निवेश और वित्त प्रदान करना; तथा
- वैश्विक चुनौतियों के लिए अभिनव समाधानों को आकार देने के लिए आवश्यक संसाधनों और ज्ञान को सांझा करना।

एस डी जी जलवायु परिवर्तन, जल प्रबंधन और स्वच्छता और सामान शिक्षा सहित वैश्विक चुनौतियों को पूरा करने के लिए विश्व के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। निजी क्षेत्र एस डी जी को प्राप्त करने के लिए सहायता कर सकते हैं, क्योकि उनके पास सतत समाधानों के व्यवसायीकरण की क्षमता होती है (व्यन् और जोन्स-Wynn and Jones, 2020)। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों ने निजी औद्योगिक घरानों से एस डी जी के अनुसार, अपना कार्यनीतिक ढांचा तैयार करने का आग्रह किया है।

सतत औद्योगिक विकास (एस आई डी-Sustainable Industrial Development-SID) का अर्थ है कि व्यवसाय और उद्योग को उत्पादन संरचनाओं और इसके उत्पाद मिश्रण का समायोजित करना होगा (यूरोपीय आयोग-European Commission, 1999), जिसके लिए औद्योगिक नीति को प्रक्रिया में सहायता करनी चाहिए। पर्यावरण, औद्योगिक नीतियों और उद्योग की भूमिका को बढ़ावा देने के बीच एक महत्वपूर्ण परस्पर संबंध एस आई डी को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण मूलभूत तत्व है। औद्योगिक नीतियां और

पर्यावरण एस डी के लिए दो महत्वपूर्ण घटक हैं, जिसके परिणामस्वरूप नवाचार और औद्योगिक प्रतिस्पर्धा का स्तर बढ़ा है। इससे रोजगार के और अधिक अवसर खुलेंगे और सामाजिक–आर्थिक विकास में सहायता मिलेगी।

उपभोक्ता नैतिक और सतत उत्पादों से अवगत हो गए हैं और उन्हें जितने अधिक विकल्प मिलेंगे, कंपनिया उतना ही अधिक लाभ कमा सकेंगी। कुशल और नवीन ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के विकास में अत्यधिक संभावनाएं हैं, साथ ही ग्रीनहाउस गैस (Greenhouse Gas) उत्सर्जन और कचरे की कमी भी है। एस डी के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कुछ अन्य क्षेत्र स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता, वित्त और संचार उत्पाद हैं। प्रकृति/पर्यावरण और समाज को जोड़ने वाले कई सैद्धांतिक ढांचे को सततता के दिशा–निर्देश में बनाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण उद्योग,जो सहायता कर सकता है वह वित्त उद्योग है, जो अनिश्चित्तता या सततता से उत्पन्न होने वाले मुद्दों पर प्रतिक्रिया देने की अपेक्षा एक अग्रणीय भूमिका में है। कुछ औद्योगिक क्षेत्र, जो एस डी जी से संबंधित हो सकते हैं, वे हैं:

- एस डी जी का सतत विकास लक्ष्य 12 (सतत उपभोग और उत्पादन) के साथ खुदरा (Retail) उद्योग पर ध्यान देता है व निर्माताओं (Manufacturers) से सतत उत्पादों को स्रोतों से खरीद कर अपनी कंपनी के द्वारा उपभोक्ताओं की आपूर्ति करता है। उदाहरण के लिए फैब इन्डिया (Fab India) श्रमिकों को प्रत्यक्ष अपनी सामग्री का स्रोत बनाता है और अपनी दुकानों की श्रंखला के द्वारा इन्हें बेचता है;
- बेकिंग उद्योग वित्तीय उत्पादों को प्रदान कर सकते हैं, जो कई लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं, जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है।
- एस डी जी 7 के साथ सौर पैनल (Solar Panels) जैसे ऊर्जा कुशल एयर कंडीशनर, स्मार्ट बल्ब, नवीकरणीय ऊर्जा समाधान (Energy Efficient Airconditioners, Smart Bulbs, Renewable Energy Solutions) का उपयोग किया जाता है; तथा
- एस डी जी 4 के साथ शिक्षा उद्योग (स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय) पर जोर दिया जाता है।

उपर्युक्त उदाहरण दर्शाते हैं कि एस डी जी (SDGs) को व्यवस्थित परस्पर संबंधों के माध्यम से कैसे प्राप्त किया जा सकता है।

औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण में एस डी जी प्राप्त करने के तरीके:

दो मुख्य तरीके, जिनके माध्यम से एस डी जी प्राप्त किए जा सकते हैं: वे जिम्मेदार उद्यमशीलता और पर्यावरण–दक्षता हैं। उन्हें संक्षेप में नीचे समझाया गया है:

i) **जिम्मेदार उद्यमशीलता (Responsible Entrepreneurship):** संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, कंपनियां अपने संचालन का प्रबंधन कर सकती हैं, ताकि पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित करते हुए आर्थिक विकास और प्रतिस्पर्धा को मजबूत किया जा सके। यह विश्व भर में विभिन्न कंपनियों की रणनीतियों और संचालन में देखा जा सकता है, जिन्होंने उपभोक्ता जागरूकता के कारण स्वैच्छिक परिवर्तन के लिए सरकारी नियामक दबाव के अंतर्गत कार्यों से विकास किया है। इस लक्ष्य को केवल पर्यावरणीय दक्षता के नए दृष्टिकोणों का उपयोग करते हुए जिम्मेदार उद्यमशीलता के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, ताकि पर्यावरण संबंधी चिंताओं को उनकी प्रबंधन कार्यनीतियों और योजनाओं में एकीकृत किया जा सके।

एस डी जी के क्रियान्वयन में पर्यावरण–दक्षता, जीवन चक्र विचार और सतत उत्पाद रचना (Eco-efficiency, Lifecycle Thinking and Sustainable Product Design)

जैसी तकनीकें सहायता करती हैं। कंपनियां पर्यावरणीय कार्यवाही की लागत और लाभों का मूल्यांकन करने और पर्यावरण लेखांकन और पर्यावरण रिपोर्टिंग के माध्यम से अपने शेयरधारकों को प्रस्तुतियां (Presentations) देने के लिए लागत लाभ विश्लेषण का संचालन करती हैं। अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम कार्यों ने प्रदर्शन, मूल्यांकन और बेंचमार्क प्राप्त करने के लिए संकेतक तैयार करने में सहायता की है।

ii) **पर्यावरण–दक्षता (Eco-efficiency):** जिम्मेदार उद्यमशीलता में व्यावसायिक रणनीति के रूप में पर्यावरण–दक्षता शामिल है, क्योंकि यह आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का एक संयोजन है। पर्यावरण दक्षता कार्यनीति, का उद्देश्य गैर–नवीकरणीय संसाधनों, कचरे आदि को कम करना है, जिसके परिणामस्वरूप, वस्तुओं और सर्विसों की सेवा तीव्रता में वृद्धि हुई है। सरकारें भी पर्यावरण–दक्षता की कार्यनीति का पालन करती हैं और इसे एस डी नीति की कार्यनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व बना दिया गया है।

उद्योग के लिए पर्यावरण प्रबंधन के सिद्धांत

पर्यावरण प्रबंधन के लिए सिद्धांतों को अंतर्राष्ट्रीय चैंबर ऑफ कॉमर्स (International Chamber of Commerce) (वूलर्ड-Woolard, 1992) द्वारा तैयार किया गया है, ताकि सुधारों को आगे बढ़ाने और एस डी के कारणों का समर्थन करने के लिए एक आधार के रूप में उपयोग किया जा सके। उन्हें संक्षेप में नीचे दिया गया है:

i) **सामूहिक प्राथमिकता (Corporate Priority):** सामूहिक क्षेत्र को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके संचालन के लिए नीतियों, कार्यक्रमों और कार्यों को पर्यावरण प्रबंधन के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

ii) **एकीकृत प्रबंधन (Integrated Management):** ये नीतियों, कार्यक्रम और अभ्यास प्रबंधन कार्यों का एक अभिन्न अंग होना चाहिए।

iii) **सुधार की प्रक्रिया (Process of Improvement):** व्यवसायों को विश्व–भर में अपनी प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। निम्नलिखित का उपयोग पर्यावरणीय प्रदर्शन के विषय में है:

- तकनीकी विकास;
- वैज्ञानिक समझ;
- उपभोक्ता की जरूरत; तथा
- सामाजिक अपेक्षाएँ।

iv) **कर्मचारी शिक्षा (Employee Education):** कर्मचारियों को शिक्षित, प्रशिक्षित और प्रेरित रखा जाना चाहिए, ताकि वे पर्यावरण के अनुकूल कार्य कर सकें।

v) **पूर्व–आकलन (Prior Assessment):** उत्पादों और सेवाओं के विनिर्माण और उपभोग का आकलन अंतिम उपयोगकर्ता को उनके अंतिम आपूर्ति से पहले किया जाना चाहिए, ताकि पर्यावरण और सततता संबंधित चिंताओं का समाधान किया जा सके।

vi) **ग्राहक सलाह (Customer Advice):** ग्राहकों को उत्पादों के सुरक्षित उपयोग, परिवहन, भंडारण और व्यवस्था पर सलाह दी जानी चाहिए।

vii) **सुविधाएं और संचालन (Facilities and Operations):** ऊर्जा और सामग्रियों का कुशल उपयोग होना चाहिए; नवीकरणीय संसाधनो का सतत उपयोग होना चाहिए; और प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभाव में कमी होनी चाहिए। प्रभावी कचरा प्रबंधन भी किया जाना चाहिए।

viii) **निवारक दृष्टिकोण (Precautionary Approach):** उद्योग–प्रधान, विपणन और उत्पादों के उपयोग या नवीनतम तकनीकी और वैज्ञानिक स्वभाव के अनुसार गतिविधियों के संचालन में कंपनियों द्वारा अपरिवर्तनीय पर्यावरणीय क्षति से बचने के लिए देखभाल की जानी चाहिए।

ix) **अनुसंधान (Research):** कंपनियों को कच्चे माल, उत्पादों, प्रक्रियाओं, उत्सर्जन और अपशिष्टों में पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोध करना चाहिए, जो उनके संचालन में कार्यरत हैं। यदि कोई प्रतिकूल प्रभाव पाया जाता है, तो इसे ठीक किया जाना चाहिए और दृष्टिकोण का पुनः समायोजन किया जाना चाहिए।

x) **प्रौद्योगीकी का हस्तांतरण (Transfer of Technology):** जिन कंपनियों के पास पर्यावरण के अनुकूल तकनीक है, उन्हें उन लोगों तक प्रौद्योगीकी स्थानांतरित करनी चाहिए, जिनके पास इस तक पहुंच नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र का कथन है कि समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा देना एस डी की कुंजी है। आर्थिक विकास, आर्थिक विविधीकरण और मूल्यवर्धन के प्रमुख स्रोत के रूप में इसने विकासशील देशों के लिए औद्योगिक विकास के सूक्ष्म महत्व पर जोर दिया है। इसने विकास और नौकरियों, संसाधनों और ऊर्जा दक्षता, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन, ज्ञान–साझाकरण, नवाचार और सामाजिक समावेश जैसी प्रमुख चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए समावेशी और सतत औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इस संबंध में, संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (United Nations Industrial Development Organisation–UNIDO) सहित संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर प्रासंगिक सहयोग, बुनियादी ढांचे के विकास, समावेशी और सतत औद्योगिकरण और नवाचार के बीच संबंधों को आगे बढ़ाने में सहायता कर सकता है।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. सतत विकास के सार्वभौमिक सिद्धांतों पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2. सतत विकास के लिए यथास्थिति दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3. सतत विकास के लिए सामुदायिक क्षमता निर्माण दृष्टिकोण के आयामों को समझाए।

.....

.....

.....

.....

4. सतत विकास के लिए औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.5 एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण

एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण (Integrated Systems Approach- ISA-आई एस ए) का तात्पर्य एस डी की कार्यनीतियों और योजनाओं की रचना करने और अपनाने से है, जो पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक आयामों को एकीकृत करते हैं और उनके संपर्क को मान्यता देते हैं। संयुक्त राष्ट्र विभाग के आर्थिक और सामाजिक मामलों की (UN Department of Economic and Social Affairs UN-DESA) अपनी प्रकाशित रिपोर्ट में कहा कि एकीकरण, समावेश और सुसंगतता की कमी थी, क्योंकि राष्ट्र अधिकतर आर्थिक विकास और गरीबी को कम करने पर ध्यान केंद्रित करते थे। पर्यावरण और सतत विकास के मुद्दों के संबंध में समाजों की जटिल समस्याओं के समाधान की अपेक्षा नियोजन दृष्टिकोण जैसे बुखारी (Silos) में काम करता है।सरकारों को प्रणालियों और उनकी उप–प्रणालियों के बीच के परस्पर संपर्क पर विचार करने की आवश्यकता है, उदाहरण के लिए पानी, ऊर्जा और पर्यावरण–प्रणाली और उनके प्रभाव जैसे भविष्य में जलवायु परिवर्तन। इसने यह भी कहा कि पारंपारिक क्षेत्र–आधारित दृष्टिकोण और उपकरण इस उद्देश्य के लिए उचित नहीं है, क्योंकि चुनौतियां प्रकृति में अधिक जटिल और प्रणालीगत है। यह एस डी योजना और रणनीति तैयार करने (यू एन, UN, *op.cit.*) में एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण के महत्व का आधार है।

कुछ विद्वानों और कार्यनीतिकारों ने अलग दृष्टिकोण के रूप में एक परिवर्तन दृष्टिकोण (Transition Approach) दिया है, लेकिन वास्तव में परिवर्तन आई एस ए का एक भाग है। जब तक पारंपरिक तरीकों से परिवर्तन नहीं होता है, एस डी जी (सतत विकास लक्ष्य) कार्यावली का 2030 के किसी भी तरह से निकट पहुंचना कठिन होगा। परिवर्तन के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित क्षेत्र नियम दिए गए हैं:

- सहायक राजनीतिक प्रणाली;
- प्रभावी नियोजन एजेंसियां;
- जानकारी तक पहुंच;
- मजबूत संयुक्त राष्ट्र प्रणाली;
- निरंतर समन्वय;
- मीडिया और नागरिक समाज के लिए क्षमता निर्माण;
- बहु–पार्श्व (Multilateral) एजेंसियों में सदस्यता; तथा
- स्कूलों में शिक्षा।

परिवर्तन में मुद्दे (Issues in Transition): परिवर्तन भी एक आसान प्रक्रिया नहीं है और इसमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। एस डी के प्रति बाधा डालने वाले कुछ प्रमुख कारक हैं:

- हितधारकों की कमजोर भागीदारी;
- भ्रष्टाचार;

- भय और असुरक्षा;
- वित्त और ऋण की कमी;
- अस्थिरता और आंतरिक/बाहरी संघर्ष;
- ज्ञान में अंतराल; परिवर्तन का विरोध;
- पारदर्शिता की कमी;
- नागरिक समाज को मान्यता;
- डेटाबेस की कमी; तथा
- युवा रोजगार।

एस डी के प्रति परिवर्तन में बाधा डालने वाले उपयुक्त कारकों को अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और राष्ट्रों द्वारा नीतियों के निर्माण और उन्हें एस डी जी के लिए लागू करने से पूर्व विचार करना चाहिए। बुखारी में अर्थात अलग–अलग काम करने से होने वाली नकारात्मक प्रतिक्रिया का कारण एक प्रणाली दृष्टिकोण आवश्यक है, अर्थात, अलगाव, उदाहरण के लिए सामाजिक और पर्यावरणीय विचार के बिना आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।

आई एस ए का महत्व

निम्नलिखित कारणों से एस डी को लागू करने के लिए आई एस ए (ISA) सबसे अच्छा समाधान है:

i) **समग्र (Holistic):** पृथ्वी जीवन–समर्थन प्रणाली में भूमि, जलवायु और पानी सम्मिलित है, जिसमें मानव निवास संपूर्णता का एक भाग है। सामाजिक और आर्थिक दोनों रूप से, विनाश–सवर्नाश वाले जलवायु परिवर्तन के रूप में पर्यावरण–श्रंखला को समग्र रूप से देखने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, बाढ़ या सूखे से अकाल और बीमारियां होती हैं, जो समाज पर संपूर्ण रूप से प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। गरीब और गरीब हो जाता है और अमीर सामाजिक अन्याय के प्रमुख और अमीर बन जाते है।

ii) **स्थानीय विचारधारा (Local Consideration):** किसी देश या क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति की अपनी विशिष्ट समस्याएं होती हैं और एक भी नीति एस डी जी को प्रभावी ढंग से लागू नहीं कर सकती है। भूगोल, अवधि, सांस्कृतिक मापदंडों आदि की गणना के स्थान के विषय में डेटा (आंकड़े) होना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, वैश्विक प्रभाव को स्थानीय व्यक्तिगत प्रयासों से व्यवहार में नहीं लाया जा सकता है।

iii) **सहक्रिया द्वारा संयुक्त प्रयास (Combined Efforts via Synergism):** सहक्रिया का अर्थ है दो या दो से अधिक एजेंसियों के संयुक्त प्रयास, जो आई एस ए में बेहतर परिणाम के लिए एक से अधिक एस डी जी के लिए कार्य करते हैं। एक से अधिक एस डी जी की एक साथ उपलब्धि के लिए लक्षित करने पर लागत–बचत हो सकती है। यूरोपीय संघ ने एक अध्ययन में अनुमान लगाया कि एकीकृत जलवायु कानून स्वास्थ्य लागत और पर्यावरण क्षरण (भविष्य पृथ्वी- Future Earth, 2019) से संबंधित प्रत्यक्ष लागतो में प्रतिवर्ष 50 बिलियन बचा सकता हैं।

आई एस ए (ISA) का कार्यान्वयन

भविष्य पृथ्वी समूह (Future Earth) एक अंतरराष्ट्रीय एजेंसी है, जो वैश्विक सततता के त्वरण तेजी के लिए अनिश्चित रचना और समाधान का काम करती है। इसने संभावित एस डी जी नीतियों के प्रभावों का आकलन करने में सरकारों की सहायता करने के लिए सात बिंदु पैमाने का प्रस्ताव दिया। एस डी जी की परस्पर क्रिया के मूल्यांकन के लिए सात संकेतक हैं:

एस डी जी सहभागिता की गणना करने के लिए एक मापक

परस्पर–क्रिया	नाम	स्पष्टीकरण
+3	अविभाज्य (Indivisible)	दूसरे लक्ष्य की उपलब्धि के लिए अलंघनीय संपर्क
+2	सुदृढ़ (Reinforcing)	दूसरे लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक
+1	स्मर्थकारी (Enabling)	उन स्थितियों का सृजन करना, जो एक और लक्ष्य को आगे बढ़ाती है
0	स्थाई (Consistent)	कोई महत्वपूर्ण सकारात्मक या नकारात्मक बातचीत नहीं
–1	बाधा–कर्ता (Constraining)	एक अन्य लक्ष्य पर सीमित विकल्प
–2	विरोध–कर्ता (Counteracting)	दूसरे लक्ष्य के साथ संघर्ष करना
–3	रद्द करना (Cancelling)	दूसरी लक्ष्य तक पहुंचना असंभव बनाना

स्रोतः (निल्सन, एम., Nilsson, M., *et al*., 2016)

भविष्य पृथ्वी द्वारा दिया गया उदाहरण वायु प्रदूषण को कम करने के सात–बिंदु पैमाने की व्याख्या करने के लिए उपयुक्त है। प्रणाली दृष्टिकोण एस डी जी पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करने का प्रस्ताव नहीं करता है, लेकिन सामाजिक–पारिस्थितिक लचीलापन जैसी प्रणाली के व्यापक–स्तरीय विशेषताओं को स्वीकार करता है। क्षेत्रों, अभिनेताओं और देशों में गतिशील संपर्क विकसित किए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, वित्त क्षेत्र में, उच्च आय वाले देशों में निजी कंपनियों के लिए टैक्स ब्रेक (सरकार द्वारा कर रियायतें या लाभ की अनुमति) की स्थापना की जा सकती है, जो उत्पादों और सेवाओं के निर्माण के लिए निम्न आय वाले देशों में बहुत लंबी अवधि के निवेश करते हैं (उदाहरण तिमाही की अपेक्षा दशकों से मापी गई प्राप्ति–(Returns)) उन साझेदारियों के साथ मिलकर, जो उनकी अर्थव्यवस्थाओं को विकसित करने में सक्षम बनाते हैं। क्षेत्रों, अभिनेताओं और देशों में इस तरह के संबंधों में सुधार से व्यवस्थित एस डी जी कार्यान्वयन को बेहतर बनाने के लिए कई प्रकार के रचनात्मक साधनों का पता चल सकता है। (स्टेफोर्ड–स्मिथ. एम-Stafford-Smith, M. *et al*.)

यदि इसे सफलतापूर्वक लागू नहीं किया गया तो एस डी जी निष्फल है और अब तक जो तरीका सबसे अच्छा उभरकर आया है वह एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण है। पैरा 6 में 2020 एजेंडा (कार्यावली) का कथन है कि यह अभिभाज्य है, इस अर्थ में कि इसे लागू किया जाना चाहिए।

3.6 मानव विकास दृष्टिकोण

मानव विकास (Human Development) का तात्पर्य मानव की भलाई से है, जो किसी भी समाज या सरकार के लिए सफल होने के लिए एक अभिन्न लक्ष्य है। 98 प्रतिशत विश्व कल्याण सर्वेक्षण के अनुसार, विश्व–भर में मानव कल्याण को व्यक्तिपरक कल्याण (Subjective Well-being -SWB-एस डब्ल्यू बी) कहा जाता है। क्योंकि खुशी और कल्याण के लिए व्यक्तियों की अपनी धारणा है। वर्ल्ड हैप्पीनेंस रिपोर्ट (World Happiness Report-WHR) संयुक्त राष्ट्र सतत समाधान नेटवर्क (Sustainable Solutions Network) द्वारा बनाई गई है। मानव विकास एक प्रक्रिया है और एक ही समय में, एक परिणाम, चयन की व्यापक संभावनाओं के परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना है। इसे विस्तार के विकल्पों की प्रक्रिया के रूप में सबसे आसान तरीके से परिभाषित किया जा सकता

हैः प्रतिदिन, एक व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकल्पों की एक श्रंखला बनाता है। मानव विकास का अंतिम लक्ष्य अधिक से अधिक धन अर्जित करना या अधिक आर्थिक विकास प्राप्त करना नहीं है, बल्कि प्रत्येक मनुष्य के लिए विकल्पों का विस्तार है (मानव विकास रिपोट- Human Development Report, 2001)

वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट (WHR) 2020, जो कि आठवीं रिपोर्ट है, पर्यावरण के सामाजिक, शहरी और प्राकृतिक पहलुओं पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करती है। WHR का उद्देश्य एस डब्ल्यू बी या व्यक्तिपरक कल्याण को मापने और समझने के एक विज्ञान की समीक्षा करना और 150 से अधिक देशों में जीवन की गुणवत्ता को पता लगाने के लिए जीवन संतुष्टि के सर्वेक्षण उपायों का उपयोग करना है। उनका मुख्य लक्ष्य खुशी के लिए सामाजिक वातावरण का मूल्यांकन करना है।

WHR (डब्ल्यू एच आर) में ध्यान केंद्रित करने के मुख्य क्षेत्रः

प्रमुख क्षेत्र जिन पर ध्यान केंद्रित हैं, निम्नलिखित हैंः

i) **खुशी बहाल करने के लिए सामाजिक वातावरण (Social Environment for Happiness)**: रिपोर्ट सामाजिक वातावरण के विभिन्न पहलुओं की खुशी और माप की व्याख्या करने के लिए छह(6)कारकों का उपयोग करती है। वे हैंः

- ऐसा कोई होना जिस पर भरोसा किया जा सके;
- प्रमुख जीवन निर्णय लेने की स्वतंत्रता की भावना होना;
- उदारता;
- विश्वास;
- औसत खुशी पर असमानता के प्रभाव; तथा
- एक अच्छा सामाजिक वातावरण असमानता को कम करने के लिए कैसे काम करता है।

ii) **शहरी खुशी (Urban Happiness)**: शहर के जीवन की खुशी की तुलना एक ही देश के शहरों के बीच की गई है। डब्ल्यू एच आर (WHR) ने पाया कि शहर की रैंकिंग और देश की रैंकिंग अनिवार्य रूप से समान थी और शहर के निवासी शहरों से बाहर रहने वाले लोगों की तुलना में अधिक खुश थे, हालांकि शहरी खुशी का लाभ कभी–कभी नकारात्मक था।

iii) **सतत प्राकृतिक पर्यावरण (Sustainable Natural Environment)**: लोग अपने प्राकृतिक पर्यावरण के बारे में अधिक जागरूक और सचेत हो रहे हैं और इसकी रक्षा करना चाहते हैं। WHR ने अपने सर्वेक्षण से उल्लेख किया कि विभिन्न प्रदूषकों का जीवन मूल्यांकन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यद्यपि वनों का जीवन मूल्यांकन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, लेकिन भावनाओं पर उनका कोई प्रभाव नहीं है। लंदन में किए गए उनके सर्वेक्षण के अनुसार, प्राकृतिक वातावरण और लोगों के बीच खुशी के संबंध में, यह पाया गया कि लोगों ने अधिकतर खुश होने की सूचना दी, जब वे एक नदी, नहर, सार्वजनिक पार्कों के निकट थे या घर में खाली बैठने की तुलना में पक्षी देखना, सार्वजनिक पार्कों में चलना जैसी कुछ गतिविधियां कर रहे थे आदि।

iv) **सतत विकास और मानव कल्याण (Sustainable Development and Human Well-Being):** WHR ने एस डी (सतत विकास) और कल्याण के बीच संबंधों की जानकारी दी है। SWB (व्यक्तिपरक कल्याण), जैसाकि पहले उल्लेख किया गया है, कल्याण का एक उपाय है और सर्वेक्षण की प्रतिक्रियाएं आय और विकास जैसे आर्थिक उपायों की तुलना में कल्याण के भावनात्मक उपायों

से भिन्न हो सकती हैं। कल्याण के संबंध में एस डी जी का मूल्यांकन, मानव विकास सूचकांक, आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक, वैश्विक शांति सूचकांक, वैश्विक प्रतिस्पर्धा सूचकांक, पर्यावरण संरक्षण सूचकांक और प्रति व्यक्ति जी डी पी (Human Development Index, Index of Economic Freedoms, Global Peace Index, Global Competitiveness Index, Environmental Protection Index -EPI and Gross Domestic Product-GDP per capita) जैसे अन्य संकेतकों को जोड़ा गया था। मानव विकास सूचकांक तीन संकेतकों को देखकर देश के भीतर कल्याण के स्तर को मापता है:

- **जीवन प्रत्याशा संकेतक (Life Expectancy Indicators):** जन्म के समय जीवन प्रत्याशा को संदर्भित करता है;
- **शैक्षिक प्राप्ति संकेतक (Educational Attainment Indicators):** व्यस्क साक्षरता दर और सकल नामांकन अनुपात (Adult Literacy Rate and Gross Enrolment Ratio) को संदर्भित करता है; तथा
- जी डी पी द्वारा प्रति व्यक्ति जीवन के मानक को मापा जाता है। (Standard of Living–measured by GDP per capita)

सर्वेक्षण के परिणामों से पता चला है कि एस डी जी सूची EPI और GDP प्रति व्यक्ति के साथ–साथ महत्वपूर्ण रहती है। इसलिए, मानव विकास दृष्टिकोण सतत विकास के संदर्भ में प्रगति करने और लोगों और पृथ्वी ग्रह को लाभ पहुंचाने में सहायता करता है। यह दृष्टिकोण यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि प्रतिबंधित बजटों को ध्यान में रखते हुए किस सतत विकास लक्ष्य (SDGs) पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए, हालांकि सभी एस डी जी महत्वपूर्ण हैं।

3.7 हरित लेखा दृष्टिकोण

सभी राष्ट्र एक ''हरित अर्थव्यवस्था'' (Green Economy) बनाने का प्रयास कर रहे हैं, जो पर्यावरणीय जोखिम और पारिस्थितिक दुर्लभता को कम करने के साथ मानव कल्याण और सामाजिक औचित्य का प्रतीक है। विकासशील देशों में, एस डी और हरित अर्थव्यवस्था के मुद्दे ने ध्यान आकर्षित किया है। हरित लेखा दृष्टिकोण, राष्ट्रीय खातों को संदर्भित करता है, जो पर्यावरणीय बाहरी कारक को शामिल करता है। वे पर्यावरण पर हमारे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कार्यों के प्रभाव को समझने में हमारी सहायता करते हैं। हरित लेखा की अवधारणा पर्यावरणीय क्षति पर विचार करती है, जो मानव जाति की गतिविधियों के कारण होती है, लेकिन पारंपरिक लेखा प्रणाली में शामिल नहीं हैं। पारंपरिक राष्ट्रीय लेखा प्रणाली एस डी मुद्दों को पूरा नहीं करती है। एस डी के कामकाज में हरित लेखा दृष्टिकोण को एकीकृत करने के लिए एक अंतरण मॉडल दृष्टिकोण (Transfer Model Approach) को पॉल पी. क्रेग और हेरोल्ड ग्लासर (Paul P. Craig and Harold Glasser) द्वारा प्रस्तावित करके इस मुद्दे का समाधान निकाला गया था, हालांकि,सतत विकास की खोज में कई अध्ययन और मॉडल सामने आए हैं।

दृष्टिकोण स्टॉक पर बल देता है और जैव–भूभौतिकीय पहलुओं के साथ–साथ हरित लेखा के लिए अर्थ और संदर्भ देता है। सतत उपयोग पूंजी को ध्यान में रखते हुए ब्याज खर्च करने को संदर्भित करता है।जैव–भूभौतिकीय शर्तों में कुछ आधारभूत स्थितियों की गारंटी दी जानी चाहिए, जिनमें स्टॉक और प्रवाह शामिल है, उदाहरण के लिए, निवास स्थान, अच्छा भोजन, स्वच्छ पानी आदि।

एस डी (सतत विकास) के सिद्धांत

हरमन डेली (Herman Daly), एक अर्थशास्त्री, ने एस डी का मार्गदर्शन करने के लिए दो सिद्धांत दिए, जो हैं:

i) पुनः उत्पादक (निरंतर उपज) की तुलना में पैदावार दरें समान या कम होनी चाहिए; तथा

ii) अपशिष्ट उत्सर्जन दर को पारिस्थितिक तंत्र की प्राकृतिक आत्मसात क्षमता के समान या उससे कम होना चाहिए, जिसमें वे उत्सर्जित होते हैं।

यह सिद्धांत अपने जैव–भूभौतिकीय कारकों के कारण पारंपरिक आर्थिक संकेतकों से अलग हैं। हरित लेखांकन केवल नवीकरणीय संसाधनों से संबंधित नहीं हो सकता। अंतरण मॉडल दृष्टिकोण कई विश्व विचारों और अनिश्चितता को शामिल करने का सुझाव देता है (Craig, 1994)।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. सतत विकास के लिए एकीकृत दृष्टिकोण के बारे में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2. सतत आजीविका के लिए मानव विकास दृष्टिकोण पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3. सतत विकास के लिए हरित लेखा दृष्टिकोण का विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4. सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन पर भारत की प्रतिक्रिया पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.8 निष्कर्ष

सतत विकास लक्ष्यों को बड़े पैमाने पर तैयार किया गया है, जो वर्तमान पीढ़ी के पर्यावरण, सामाजिक, और आर्थिक जरूरतों की चिंता, अगली पीढ़ियों के भविष्य को नुकसान पहुंचाए बिना करते हैं। इसलिए, यह एक अंतरराष्ट्रीय प्रयास है, जो एक अंतः

पीढ़ीगत और सांस्कृतिक क्षेत्र का विस्तार करता है। एस डी के 2030 कार्यावली को कई दृष्टिकोणों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, हालांकि सबसे अच्छा तरीका एकीकृत दृष्टिकोण है, जो आकार लेने के लिए समकालिक प्रयासों के साथ अपनी रणनीति में तीन घटकों को शामिल करता है। एस डी को प्राप्त करने के लिए एक एजेंडा (कार्यावली) बनाने का मूल उद्देश्य 17 लक्ष्यों और 169 प्रयोजनों को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे देशों की रैंकिंग के लिए एक अंतरराष्ट्रीय प्रणाली का निर्माण करना है। भारत ने भी समग्र दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए एस डी जी के साथ स्वयं को संरेखित किया है, जोकि एकीकृत दृष्टिकोण है, जिसे 'त्रिपक्षीय तल दृष्टिकोण (Triple Bottom Line Approach) भी कहा जाता है।

सुसंगत विकास और सामाजिक समावेश की पहल के माध्यम से, भारत गरीबी को कम करने, शिक्षा के स्तर में सुधार, उग्रता के साथ बुनियादी ढांचे की क्षमताओं का विस्तार करने, हमारी समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण और सतत विकास के लिए साझेदारी बनाने में सक्षम रहा है। गरीबी–मौद्रिक और बहुआयामी, हाल ही के वर्षों में बड़े पैमाने पर गिर गई है। 500 मिलियन से अधिक लोगों को सम्मिलित करने वाले स्वास्थ्य बीमाकृत राशि कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक सरकारी तौर पर प्रारंभ किया गया है। अक्टूबर 2014 से 100 मिलियन से अधिक घरेलू शौचालय बनाए गए हैं। हमारे सभी गाँव और 99 प्रतिशत से अधिक हमारे घरों का विद्युतीकरण किया गया है। 2017 और 2019 के आकलन के बीच हमारा वन क्षेत्र सम्मिलित किया गया है। भारत के तकनीकी सहायता कार्यक्रम विश्व भर के 160 देशों तक पहुँचाते हैं। हम पिछले पाँच वर्षों में विश्व बैंक की 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग या व्यापार करने में सुगमता रैंकिंग (World Bank's Ease of Doing Business Ranking) में 79 स्थानों से आगे बढ़े हैं, यह स्थान 2014 में 142 से बढ़कर 2019 में 63 हो गया है। फ्रांस के साथ संयुक्त रूप से, भारत ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance) के गठन की सुविधा प्रदान की है, जिसमें देशों को एक साथ लाया गया है,जो सौर ऊर्जा में उग्रता के साथ निवेश करने के लिए अच्छी तरह से तैनात हैं। ये प्रगति के कुछ उदाहरण है (नीति आयोग-NITI Aayog, 2021)। इस इकाई ने सतत विकास के प्रमुख दृष्टिकोणों पर विस्तार से चर्चा की है।

3.9 शब्दावली

बेटनीक (BATNEEC): इसका अर्थ है अत्यधिक कीमतों को आवश्यक बनाए बिना बेहतर उपलब्ध तकनीकें (Best Available Techniques not Entailing Excessive Costs)। सामान्य रूप से इसे 'उत्तम उपलब्ध तकनीक' (BEST Available Technology) कहा जाता है। इसे 1984 में आरंभ किया गया था। इसका अर्थ है कि किसी विशेष प्रक्रिया जैसे प्रदूषण को कम करने के लिए आउटपुट (पैदावार) मानकों को पूरा करना। इस तकनीक का उपयोग पर्यावरण नीतियों के निर्माण में किया जाता है।

जैव–भूभौतिकी (Bio-geophysics): भूभौतिकी एक उप–अनुशासन से संबंधित है कि कैसे पौधों, सूक्ष्मजीव गतिविधियों और अन्य जीवों ने भूवैज्ञानिक सामग्रियों को परिवर्तित किया है और करते हैं। साथ ही वे कैसे भू–भौतीकीय हस्ताक्षर को प्रभावित करते हैं।

सामुदायिक क्षमता निर्माण दृष्टिकोण (Community Capacity Building or CCB Approach): सी सी बी दृष्टिकोण गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या में कौशल विकास और ज्ञान के आधार में वृद्धि का प्रस्ताव रखता है। उन्हें समुदाय में लाभप्रद शामिल होने के लिए कौशल और ज्ञान के साथ सक्षम होने की आवश्यकता है, ताकि वे समाज में योगदान दे सकें।

पर्यावरण दक्षता (Eco-efficiency): पर्यावरण दक्षता कार्य–नीति का उद्देश्य गैर–नवीकरणीय संसाधनों, कचरे आदि को कम करना है, जिसके परिणामस्वरूप वस्तुओं और सेवाओं की सर्विस तीव्रता में वृद्धि हुई है।

समग्र दृष्टिकोण (Holistic Approach): पृथ्वी की जीवन–समर्थन प्रणाली में भूमि, जलवायु और पानी शामिल है, जिसमें मानव आवास संपूर्णतता का एक हिस्सा है।

जिम्मेदार उद्यमशीलता (Responsible Entrepreneurship): संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, कंपनियां अपने संचालन का प्रबंधन कर सकती हैं, ताकि पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित करते हुए आर्थिक विकास और प्रतिस्पर्धा को मजबूत किया जा सके।

3.10 संदर्भ लेख

Craig, P.P. & Glasser, H. (1994), *Assigning Economic Value to Natural Resources.* The Academies Press, USA.

European Commission. (1999). *Sustainable Industrial Development*. Retrieved from https://ec.europa.eu/environment/archives/action-programme/pdf/sec991729_en.pdf.

Future Earth. (n.d.). A Systems Approach: Imperative to Achieve the Sustainable Development Goals. Retrieved from https://futureearth.org/wp-content/uploads/2019/06/SDG-systems_issue-brief.pdf

Hopwood, B., Mellor, M. O'Brien, G. (2005). Sustainable Development: Mapping Different Approaches. *Sustainable Development.*13(1), 38-52.

Montaldo, C.R.B. (2013). *Sustainable Development Approaches for Rural Development and Poverty Alleviation & Community Capacity Building for Rural Development and Poverty Alleviation*. Retrieved from https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/877LR%20Sustainable%20Development%20v2.pdf

NITI Aayog. (2020). *Decade of Action Taking SDGs from Global to Local*. Retrieved from https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/26279VNR_2020_India_Report.pdf

ShyamRoy, M. (2017). Green Accounting for Sustainable Development: Case Study of Industry Sector in West Bengal.*The Journal of Industrial Statistics.*6 (1), 57-71.

Stafford-Smith, M. et al. (2017). Integration: The Key to Implementing the Sustainable Development Goals.*Sustainability Science*. 12, 911-919.

UN. (2015). Report of the Capacity Building Workshop and Expert Group Meeting on Integrated Approaches to Sustainable Development Planning and Implementation. Retrieved from https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/8506IASD%20Workshop%20Report%2020150703.pdf

UN. (2015). Transforming our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development. Retrieved from https://sdgs.un.org/publications/transforming-our-world-2030-agenda-sustainable-development-17981

United Nations Development Programme. (2001). *Human Development Report 2001, Making New Technologies Work for Human Development.* Retrieved from http://hdr.undp.org/sites/default/files/reports/262/hdr_2001_en.pdf

Woolard, E.S. (1992). An Industry Approach to Sustainable Development. *Issues in Science and Technology*. 8(3), 29-33.

Wynn, M. & Jones, P. (2020). *The Sustainable Development Goals: Industry Sector Approaches.* Routledge Publishers, USA.

3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**
   - सिद्धांतों की विशेषता सार्वभौमिक होनी चाहिए, केवल विकासशील देशों की ही नहीं, बल्कि सभी देशों के सामने आने वाली चुनौतियों को सम्मिलित करना चाहिए।
   - सतत विकास के लिए व्यापक रूप से सहमत वैश्विक रणनीति को व्यक्त करना चाहिए।
   - इसमें ऐसे प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए, जो एम डी जी में पूरी तरह से शामिल नहीं थे।
   - यह एस डी के तीन आयामों को दर्शाते हुए व्यापक होने चाहिए।
   - संभवत 2030 की समय सीमा को देखते हुए दीर्घावधि के कार्य–क्षेत्र में होते हुए निकट अवधि के बेंचमार्क को शामिल करना चाहिए।
   - संसाधनों के कार्यान्वयन में और उसे जुटाने में सभी हितधारकों को शामिल करना चाहिए।
   - वैज्ञानिक प्रमाणों को विकसित करने के लिए इस लक्ष्यों की समीक्षा के लिए कार्य–क्षेत्र प्रदान करने चाहिए।
2. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**
   - अधिक वृद्धि एस डी को बढ़ावा देगी और काराधान की प्रगतिशील प्रकृति को कम करने के लिए सरकारों के निर्णय का समर्थन करेगी।
   - व्यवसाय स्थिरता का चालक है।
   - एस डी प्राप्त करने लिए सबसे अच्छे साधन जानकारी में वृद्धि, बदलते मूल्य; नई प्रौद्योगिकियाँ और नवाचार है।
   - बाजार, कराधान और सब्सिडी में परिवर्तन की अच्छी तरह से जानकारी देकर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए सतत प्रक्रियाओं का उपयोग करेंगे।
   - सरकारों की कम भूमिका से उन नए पूँजीपतियों का उदय होगा, जो एस डी प्राप्त करने के लिए समाविष्ट नागरिकता और नैतिक व्यवसाय में लिप्त होंगे।
   - एक तरफ सुशासन में वृद्धि और दूसरी ओर भ्रष्टाचार में कमी से सततता के करीब पहुंचने में सहायता मिलेगी।
   - ई आई ए (पर्यावरणीय प्रभाव आकलन) जैसी तकनीकें; ई एम ए एस (ईको–मैनेजमेंट और ऑडिट सिस्टम) पर्यावरणीय प्रबंधन और लेखा प्रणाली।
3. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

   सी सी बी में ABCD मॉडल को लागू किया जा सकता हैः–

- **संसाधनः** वित्तीय संपत्ति, प्राकृतिक संसाधन (वन, वन्यजीव); और पशुधन सतत आजीविका प्रदान कर सकते हैं। हवा और पानी को साफ करने, पुनः चक्र और नवीनीकृत करने में उनका सांस्कृतिक और पर्यावरणीय महत्व है।
- **सामाजिक बंधनः** सामाजिक बंधन और सामुदायिक बंधन गरीबों को सहायता प्रदान करने में समुदाय के निवेश को प्रोत्साहित करते हैं।
- **मानव संपत्तिः** मानव संपत्ति व्यक्तियों में कौशल को संदर्भित करता है, जो उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और मजदूरी प्राप्त करा सकती है।

4. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

- निजी क्षेत्र को विकास के उद्देश्यों के लिए कई तरीकों से योगदान करने की क्षमता के साथ एक भागीदार के रूप में उजागर किया गया है।
- सतत औद्योगिक विकास का अर्थ है कि व्यापार और उद्योग को उत्पादन संरचनाओं और इसके उत्पाद मिश्रण को समायोजित करना होगा।
- औद्योगिक क्षेत्र दृष्टिकोण में एस डी जी प्राप्त करने के जिम्मेदार तरीके उद्यमशीलता और पर्यावरण–दक्षता हैं।
- उद्योग के लिए पर्यावरण प्रबंधन के सिद्धांतः

  i) सामूहिक प्राथमिकता

  ii) एकीकृत प्रबंधन

  iii) सुधार की प्रक्रिया

  iv) कर्मचारी शिक्षा

  v) पूर्व मूल्यांकन

  vi) ग्राहक सलाह

  vii) सुविधाएं और संचालन

  viii) निवारक दृष्टिकोण

  ix) अनुसंधान

  x) प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण

बोध प्रश्न 2

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

- एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण एस डी कार्यनीतियों और योजनाओं की रचना करने और अपनाने को संदर्भित करता है,जो पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक आयामों को एकीकृत करता है और उनके संबंधों को पहचानता है।
- संयुक्त राष्ट्र ने परिवर्तन के लिए क्षेत्र दिए हैं।
- परिवर्तन में समस्याएं।
- एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण का महत्व।
- एकीकृत प्रणाली दृष्टिकोण का कार्यान्वयन।

2. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

- मानव विकास मानव कल्याण को संदर्भित करता है, जो किसी भी समाज या सरकार को प्राप्त करने के लिए एक अभिन्न लक्ष्य है।
- वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट (WHR) संयुक्त राष्ट्र के सतत समाधान नेटवर्क द्वारा बनाई गई है। मानव विकास एक प्रक्रिया है और एक ही समय में, एक परिणाम, चयन की व्यापक संभावनाओं के परिणामों पर ध्यान केंद्रित करती है।
- इसे विकल्पों के विस्तार की प्रक्रिया के रूप में सबसे आसान तरीके से परिभाषित किया जा सकता हैः प्रतिदिन, एक व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकल्पों की एक श्रंखला बनाता है। मानव विकास का अंतिम लक्ष्य अधिक से अधिक धन अर्जित करना या अधिक आर्थिक विकास प्राप्त करना नहीं है, बल्कि प्रत्येक मनुष्य के लिए विकल्पों का विस्तार है।
- WHRs में ध्यान केंद्रण के मुख्य क्षेत्र।

3. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

- सभी देश एक ''हरित अर्थव्यवस्था'' बनाने का प्रयास कर रहे हैं, जो पर्यावरणीय जोखिम और पारिस्थितिक दुर्लभता को कम करने के साथ–साथ मानव कल्याण और सामाजिक औचित्य का प्रतीक है।
- हरित लेखांकन की अवधारणा पर्यावरणीय क्षति पर विचार करती है, जो मानव जाति की गतिविधियों के कारण होती है, लेकिन पारंपरिक लेखांकन प्रणाली में शामिल नहीं है।
- अर्थशास्त्री, हरमन डैली ने एस डी के मार्गदर्शन के लिए दो सिद्धांत दिए हैं, जो हैः
  - पैदावार दर पुनः उत्पादक दरो (निरंतर उपज) के समान या उससे कम होनी चाहिए।
  - अपशिष्ट उत्सर्जन की दर पारिस्थितिक तंत्र की प्राकृतिक आत्मसात क्षमताओं के बराबर या उससे कम होनी चाहिए; जिसमें वे उत्सर्जित होते हैं।

4. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**

- भारत में भी समग्र दृष्टिकोण का पालन करते हुए एस डी जी के साथ स्वयं को संरेखित किया है, अर्थात, एकीकृत दृष्टिकोण, जिसे त्रिपक्षीय तट रेखा दृष्टिकोण भी कहा जाता है।
- सतत विकास और सामाजिक समावेश की पहल के माध्यम से, भारत गरीबी को कम करने, शिक्षा के स्तर में सुधार, उग्रता से बुनियादी ढांचे की क्षमताओं का विस्तार करने, हमारी समृद्ध जैव–विविधता के संरक्षण और सतत विकास के लिए साझेदारी बनाने में सक्षम रहा है। गरीबी–मौद्रिक और बहुआयामी, हाल ही के वर्षों में बड़े पैमाने पर गिर गई है।
- 500 मिलियन से अधिक लोगों को सम्मिलित करने वाले स्वास्थ्य बीमा कवरेज (Coverage) कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक सरकारी–तौर पर आरंभ किया गया है।

- अक्टूबर 2014 से 100 मिलियन से अधिक घरेलू शौचालय बनाए गए हैं। हमारे सभी गांवों और हमारे 99 प्रतिशत से अधिक घरों में विद्युतीकरण है।
- हमने पिछले पाँच वर्षो में विश्व की सुगमता से व्यवसाय करना रैंकिंग में 79 स्थानों की छलांग लगाई है। 2014 में 142 से बढ़कर 2019 में 63 हो गई है। फ्रांस के साथ संयुक्त रूप से, भारत ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन बनाने की सुविधा प्रदान की है, जो सभी देशों को एक साथ लाया है वे देश जो सौर ऊर्जा में उग्रता से निवेश करने के लिए अच्छी तरह से तैनात हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 सतत् विकास के लक्ष्य*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों से सतत् विकास लक्ष्यों तक

4.3 सतत् विकास लक्ष्यों का स्वरूप

4.4 निष्कर्ष

4.5 शब्दावली

4.6 संदर्भ लेख

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बाते समझ सकेंगे :

- सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों का वर्णन;
- सतत् विकास लक्ष्यों का स्वरूप; और
- भारत के संदर्भ में सतत् विकास लक्ष्य।

4.1 प्रस्तावना

संयुक्त राष्ट्र (यू एन-UN) सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य (Millennium Development Goals-MDGs-एम डी जी) के आठ लक्ष्य हैं, जिनको संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों ने 2015 तक हासिल करने के इच्छा व्यक्त की थी। संयुक्त राष्ट्र मिलेनियम घोषणा सितंबर 2000 में हस्ताक्षरित की गई थी, जिसमें दुनिया के नेताओं ने गरीबी, भूख, बीमारी, अशिक्षा, पर्यावरण में गिरावट और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव के विरुद्ध लड़ने की प्रतिबद्धता व्यक्त की थी। एम डी जी की सफलता का मूल्यांकन करने के लिये 1980 के स्तर का संदर्भ लिया गया था (डब्ल्यू एच ओ-WHO-2018)। एम डी जी को दुनिया भर के समाजों के बेहतरी के लिए संसाधनों के वैष्विक विकास में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर माना जाता है। लक्ष्य समयबद्ध थे और इनको 2000 से 2015 तक दुनिया की आबादी द्वारा सही गई विभिन्न समस्याओं के लिए एक वैश्विक रिपोर्ट कार्ड के रूप में माना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में समय अवधि की समाप्ति पर लक्ष्यों का एक नया सेट अपनाया, जिसे सतत् विकास लक्ष्य (एस डी जी) कहा गया। यू.एन. के 192 सदस्यों ने एजेंडा 2030 को पूरा करने के समझौते को प्राप्त करने का वादा किया।17 एस डी जी (Sustainable Development Goals-SDGs) हैं, जिन पर इस इकाई में चर्चा की जाएगी, जिसमें कुल 169 लक्ष्य हैं। उन्हें इस कारण से अपनाया गया कि जलवायु परिवर्तन की वजह से होने वाली समस्याओं के कारण दुनिया–भर में सतत् विकास को महत्त्व मिला था। कोविड–19 (COVID-19) महामारी ने यह अनिवार्य कर दिया है कि हम, मनुष्य के रूप में, एक सतत पर्यावरण और विकास की दिशा में काम करें। एस डी

* योगदानः डॉ अनुपमा पुरी महाजन, पूर्व उतर–डॉक्टोरल शोधकर्त्ता, लोक प्रशासन विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविध्यालय, शिमला

जी को एकीकृत समाधान के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए, ताकि इनके तीन घटक–आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण– एक साथ प्राप्त किये जा सकें,क्योंकि वे सभी परस्पर–संबंधित और परस्पर–निर्भर हैं। आइए अब हम एम डी जी और एस डी जी के स्वरूप को समझते हैं।

4.2 सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों से सतत् विकास लक्ष्यों तक

संयुक्त राष्ट्र द्वारा परिभाषित वैश्विक विकास एजेंडे में आठ एस डी जी शामिल हैं, जोकि निम्नलिखित हैः

1. गरीबी और भूख को मिटाना;
2. सभी को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना;
3. जेन्डर समानता को बढ़ावा देना और महिलाओं का सशक्तीकरण;
4. बाल मृत्यु दर में कमी लाना;
5. मातृ स्वास्थ्य में सुधार;
6. एच आई वी/एड्स (HIV/AIDS), मलेरिया और अन्य बीमारियों का मुकाबला ना करना;
7. पर्यावरणीय सततता सुनिश्चित करना; और
8. विकास के लिए एक वैश्विक साझेदारी विकसित करना।

2015 में, चूंकि एम डी जी के लिए निर्धारित समय अवधि समाप्त हो गई, इसलिए वैश्विक विकास के लिए एक नया एजेंडा तैयार किया गया,जिसे एजेंडा 2030 कहा गया और इसके लक्ष्यों को सतत् विकास लक्ष्य (एस डी जी) कहा गया। एम डी जी और एस डी जी के बीच कुछ अंतर हैं, जिन्हें संक्षेप में नीचे दिया गया है :

- **शून्य लक्ष्य (Zero Goals):** एम डी जी के लक्ष्यों को आधे रास्ते पहुँचना था, लेकिन एस डी जी को काम पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन लक्ष्यों से आशा की गई है कि शून्य स्तर को प्राप्त किया जाए। उदहारण के लिए, शून्य भूख व मृत्यु रोकी जा सकने वाली शून्य शिशु मृत्यु।
- **सार्वभौमिक लक्ष्य (Universal Goals):** जब एम डी जी पर निर्णय लिया गया था, तो अपनाई गई कार्य–नीति ''अमीरदाताओं द्वारा प्राप्तकर्ताओं'' के लिए मदद देने की थी, लेकिन दुनिया तब से अब एक लंबा सफर तय कर चुकी है। संयुक्त राष्ट्र ने महसूस किया कि विकसित देशों में भी समस्याएं मौजूद हैं और महत्त्वपूर्ण समस्या अमीर और गरीब देशों की अपेक्षा बढ़ती असमानताओं की है। इसलिये एस डी जी सभी राष्ट्रों के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं।
- **व्यापक (Comprehensive):** एम डी जी की तुलना में एस डी जी अधिक व्यापक हैं, क्योंकि वे अधिक केंद्रित क्षेत्रों के लिए हैं।
- **भूख (Hunger):** भूख खत्म करने के लिए महिलाओं को सशक्त करने, सभी को इस काम में साथ में लाने और स्थानीय सरकारों के साथ साझेदारी बनाने, इन तीन स्तंभों को महत्व दिया गया है। एस डी जी को जेन्डर समानता और लोगों की भागीदारी के लिए सभी स्तरो ंपर एम डी जी से बेहतर पाया गया है।
- **समावेशिता (Inclusivity):** एम डी जी को एक सोपानकर्मित (Top-down) प्रक्रिया के माध्यम से तैयार किया गया, जबकि एस डी जी को 100 से अधिक देशो ंऔर लाखो ंऑनलाइन (Online) नागरिकों के इनपुट के साथ परामर्श द्वारा तैयार किया गया।

- **भूख और गरीबी (Hunger and Poverty):** 'गरीबी' और खाद्य तथा पोषण सुरक्षा 'एस डी जी मे ंदो अलग–अलग लक्ष्य हैं, जबकि उन्हें एम डी जी में एक साथ जोड़कर लिया गया था।
- **आर्थिक सहायता (Funding):** एम डी जी मे ंपूँजीप्राप्ति या आर्थिक सहायता की कोई संकल्पना नही ंथी और यह अमीर विकसित देशों के दानदाताओं की सहायता पर निर्भर थी। एस डी जी सततता, समावेशी आर्थिक विकास और देशों की राजस्व सृजन क्षमताओ ंको मज़बूत करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, ताकि वे अपनी सामाजिक चुनौतियों से निपट सकें।
- **शांति स्थापित करना (Peace Building):** शांति समाज में आर्थिक रूप से और साथ ही समृद्ध और विकसित होने के लिए एक आवश्यक तत्व है। जिन देशों को अच्छी तरह से शासित किया गया है वे शांतिपूर्ण परिस्थितियों में आर्थिक रूप से समृद्ध बनें हैं। एस डी जी में शांति एक लक्ष्य के रूप में है, जबकि एम डी जी ने इस पर ध्यान केंद्रित नही ंकिया था।
- **डेटा क्रांति (Data Revolution):** सतत् विकास के लिए निगरानी, मूल्यांकन और जवाबदेही आवश्यक है। एस डी जी का एक अन्य लक्ष्य आय, आयु, नस्ल, जातीयता और प्रवासी स्थिति, विकलांगता, भौगोलिक स्थिति और राष्ट्रीय संदर्भ में अन्य विशेषताओं के आधार पर उच्चकोटि और विश्वसनीय डाटा (Data) की उपलब्धता को बढ़ाना है।
- **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (Quality Education):** एम डी जी को सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करना था, लेकिन इसमे ंउसकी गुणवत्ता सम्मिलित नही ंकी। दूसरी ओर, एस डी जी ने शिक्षा की गुणवत्ता ध्यान केंद्रित करने मे ंप्रगति की है और इसका आकलन करने के लिए संकेतक विकसित किए हैं।

एम डी जी और एस डी जी के उपरोक्त विश्लेषण से, यह स्पष्ट है कि एस डी जी बेहतर रूप से तैयार किए गए हैं,लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि कार्य सफलतापूर्वक किया गया है। इसके विपरीत, यह अभी शुरू हुआ है और 2030 तक लक्ष्यों को प्राप्त किया जाना है, जो एक मुश्किल काम है। महामारी कोविड–19 की चपेट में आने से पहले ही विश्व अर्थव्यवस्था मंदी का सामना कर रही थी, और अब उसे पटरी पर लाने के लिए कठोर प्रयास करने होंगे। वर्तमान पीढ़ियों या अतीत की किसी पीढ़ी ने किसी महामारी को कभी नही ंदेखा है और इस संबंध में इसका सामना करने की उनके पास कोई मिसाल भी नहीं है।1919 में स्पैनिश फलू (Spanish Flu) विश्व मे महामारी के रूप में फैला था। 100 वर्ष बाद फिर से एक महामारी आई है, जिस कारण देशों को इससे निपटने के लिए अपने आपदा प्रबंधन कानूनों में संशोधन करना पड़ा है और अब उन्हें अर्थव्यवस्थाओं के पुनरुद्धार से निपटना है, ताकि एस डी जी पर पुनः ध्यान केंद्रित किया जा सके।

बोध प्रश्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से अपना उत्तर मिलाइए।

1. सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों से सतत् विकास लक्ष्यों तक के परिवर्तन पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

4.3 सतत् विकास लक्ष्यों का स्वरूप

यह एंथ्रोपोसीन युग (Anthropocene Age) है, यानी मानव द्वारा संचालित पृथ्वीग्रह का युग। मानवीय गतिविधि वैश्विक परिस्थिति के तंत्र कार्यों को इस प्रकार आगे बढ़ा रही है कि उसके परिणाम स्वरूप आपदाएँ आ सकती हैं। यह एक विशेष प्रकार का युग है, जिससे कि पृथ्वी प्रणालियों पर कार्बन, नाइट्रोजन और जल चक्र का अत्यधिक दबाव है। ऐसे कई पर्यावरणीय संकट हैं, जो पृथ्वी की आबादी पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। द्वीपों के जलमग्न होने, बाढ़ या अकाल जैसी आपदाओं के कारण लोगों का सामूहिक पलायन और विस्थापन होता है। इन चुनौतियों ने अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों को एहसास कराया है कि ग्रह को जीवित रखने के लिए पोषण की ज़रूरत है और इसे एजेंडा निर्धारित करके ही बचाया जा सकता है।

वर्ष 2015 में, संयुक्त राष्ट्र ने एजेंडा 2030 की स्थापना की थी, जिसमें 17 एस डी जी और उसके 169 लक्ष्य निर्धारित किए गए, जिसके लिए 193 सदस्य राष्ट्रों ने प्रतिज्ञा की और वर्ष 2016 में इन्हें लागू किया गया। इकाई के इस खंड में एस डी जी के बारे मे भारत के विशेष संदर्भ में, स्वैच्छिक राष्ट्रीय समीक्षा (Voluntary National Review -VNR),जो नीति आयोग द्वारा यू एन के लिए तैयार की गई है, के अनुसार विचार किया जाएगा। यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि भारत किस प्रकार इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर रहा है, क्योंकि पूरी मानवता के एक छठे (17 प्रतिशत) लोग यहां निवास करते हैं।

भारत संपूर्ण समाज के सिद्धांत (Whole of Society) का उपयोग करता है, जिसमें एस डी जी के कार्यान्वयन और मूल्यांकन के लिए केंद सरकार के साथ सभी 37 उप–सरकारों, स्थानीय सरकारों (700 से अधिक जिलो, नागरिक समाज संगठनों, समुदायों और निजी क्षेत्र के साथ केंद्र सरकार की भागीदारी शामिल है। चूंकि एस डी जी के संबंध में 2030 के अंत की तारीख आने से पहले दुनिया के आखिरी दशक में प्रवेश कर लिया था, इसलिए इसे ''कार्रवाई का दशक''(Decade for Action) कहा गया। भारत एस डी जी इंडिया इंडेक्स (SDG India Index) बनाने वाला पहला राष्ट्र है, और इसको एक मज़बूत एस डी जी स्थानीय करण मॉडल (SDG Localisation Model) विकसित किया गया है (नीति आयोग, 2020)।

नीचे दिए गए एस डी जी भारतीय परिप्रेक्ष्य से एस डी जी के स्थानीय कारक लिये गये हैं :

एस डी जी 1 : कोई गरीबी नहीं–गरीबी को हर जगह और उसके सभी स्वरूपों में समाप्त होना है (No poverty - End poverty in all its forms everywhere)

जैसा कि हम पहला लक्ष्य पढ़ते हैं, 2030 तक हर जगह और हर स्वरूप में गरीबी को समाप्त करना एक असंभव और चुनौतीपूर्ण काम लगता है। भारत आजीविका के लिए कम होते अवसरों के माहौल में प्रभावी कार्य–नीति तैयार करने में सफल रहा है। इसने अपने सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product -GDP-जी डी पी) को लगातार बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है। वर्ष 2018–2023 के बीच वृद्धि दर को 8 प्रतिशत बढ़ाया है, लेकिन महामारी कोविड–19 ने इसे एक बड़ा झटका दिया है। सरकार ने समाज के कमज़ोर वर्गों के लिए लक्षित कार्य क्रमों के साथ बहुस्तरीय कार्य–नीति का पालन करते हुए निम्नलिखित कार्य किये हैं:

i) संरचनात्मक और समर्थ सेवाओं का विकास करना;

ii) उत्पादकता क्षमता बढ़ाना;

iii) कौशलों का विकास करना;

iv) सहायक उद्यमशीलता विकसित करना; तथा

v) प्राकृतिक और अन्य आपदाओं से जोखिम को कम करने के उद्देश्य से सामाजिक सुरक्षा के उपायों को विकसित करना।

नीचे दिए गए उपायों को अपनाकर भारत 2030 तक गरीबी को धीरे–धीरे समाप्त करने का प्रयास कर रहा है :

- **सामाजिक सुरक्षा और सुरक्षा जाल (Social Protection and Safety Nets):** राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम अपनी प्रमुख योजनाओं जैसे महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गांरटी अधिनियम (मनरेगा-MNREGA) के माध्यम से कमजोर वर्गों (बुजुर्गों, विकलांगों, बच्चों, महिलाओं और विधवाओं) की सहायता करता है, जिसके द्वारा प्रति परिवार को एक वर्ष में 100 दिनों के काम की अनुमति दी जाती है। इसके द्वारा वित्त वर्ष 2019–2020 में रोजगार दर में लगभग 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कोविड–19 के बाद श्रमिकों के लाभ के लिए अतिरिक्त INR 400 बिलियन आवंटित किया गया था।

- **बुनियादी सेवाओं तक पहुँच (Access to Basic Services):** भारत में गरीबी दूर करने के काम में अन्य मापदंडों को भी शामिल किया गया है, जैसे कल्याणकारी कार्य, पोषण, स्वास्थ्य सुविधाओं, पेयजल और स्वच्छता तक पहुंच; किफायती आवास; बिजली; खाना पकाने में सफाई; सड़कें और उपयोगी सुविधाएं। प्रधानमंत्री जन–धन योजना (Pradhan Mantri Jan-Dhan Yojana) और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (Pradhan Mantri Gareeb Kalyan Yojana) जैसी योजनाओं के तहत एक और क्षेत्र जिस पर ध्यान केंद्रित किया गया है, वह है बैंकों से न जुड़ी हुई आबादी को बैंकिंग, ऋण, बीमा और पेंशन तक पहुंच प्रदान करने के लिए वित्तीय सुविधाएं उपलब्ध कराना।

- **आजीविका के अवसरों को मज़बूत करना और पारिस्थितिकी तंत्र को कुशल बनाना (Strengthening Livelihood Opportunities and Skilling Ecosystem):** चूंकि कृषि भारतीय जनसंख्या के 59 प्रतिशत लोगों को आजीविका प्रदान करने में तथा विकास व नौकरियों को बढ़ाने और गरीबी में कमी लाने में सहायक है। अतः भारत सरकार ने 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लिए काम करने का वादा किया, हालांकि यह महामारी के दौर में एक विशालकाय कार्य लगता है। इस क्षेत्र में मदद करने वाली कुछ योजनाएँ प्रधानमंत्री फलस बीमा योजना (Prime Minister's Crop Insurance Scheme) और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (Pradhan Mantri's Irrigation Scheme) हैं। अधिक उत्पादक रोजगार प्राप्त करने के लिए कौशल विकास के परितंत्र का विकास है। इस संबंध में की गई कुछ पहल निम्न प्रकार हैः

  i) उद्योग की मांगों के अनुसार कौशल पाठ्यक्रम को पुनः तैयार करना;

  ii) उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढाँचा बनाना;

  iii) स्टार्ट–अप (Start-up) के लिए ग्रामीण व्यवसाय मॉडल तैयार करना, आदि।

- **प्रगति की निगरानी (Monitoring Progress):** भारत एस डी जी इंडिया इंडेक्स के माध्यम से अपनी योजनाओं और परिणामों की निगरानी और मूल्यांकन करता है।

भविष्य में आने वाली चुनौतियों में क्षेत्रीय परिवर्तन, गरीबी का नारीवाद, तीव्र शहरीकरण; शिक्षा, रोजगार और मानव संसाधन विकास शामिल हैं।

एस डी जी 2 : शून्य भूख–भूख समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना, पोशण में सुधार करना और सतत् कृशि को बढ़ावा देना (Zero Hunger – End hunger, achieve food security, improve nutrition and promote sustainable agriculture)

खाद्य सुरक्षा गरीबी (एस डी जी–1) को दूर करने का अभिन्न अंग है, जिसमें पौष्टिक भोजन का प्रावधान किया गया है। भारत में कम पोषण के कारण 40 प्रतिशत बाल मृत्यु होती हैं। खाद्य सुरक्षा विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है जैसे :

i) घरेलू खाद्य उत्पादन;

ii) खाद्यान्न आयात करने की क्षमता; तथा

iii) खाद्यान्न तक पहुँच, जो घरों की खरीदने की क्षमता पर निर्भर है।

नीचे दिए गए उपाय भारत शून्य भूख के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कर रहा है :

- **खाद्य सुरक्षा (Food Security):** भारत में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (National Food Security Act -NFSA-एन एफ एस ए), 2013 के तहत कानूनी अधिकार के रूप में दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। उक्त अधिनियम के पारित होने के साथ कल्याणकारी कार्यों से हटाकर दृष्टिकोण अधिकारों के आधार पर स्थानांतरित किया गया। इसमें भारत की दो–तिहाई आबादी शामिल है, जिसमें महिलाओं को राशन कार्डों पर घर की वरिष्ठ महिला सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। अंत्योदय अन्न योजना (Antyodaya Anna Yojana -AAY-ए ए वाई) भूख मिटाने के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में सुविधा प्रदान करती है।

- **पोषण सुरक्षा (Nutrition Security):** भारत में बच्चे स्वच्छता, आनुवांशिकी, पर्यावरण और उपलब्ध भोजन जैसी समस्याओं के कारण पांच साल से कम उम्र में विकसित होने वाले अल्पपोषण (Malnutrition) का सामना करते हैं। इस क्षेत्र में मदद करने वाली कुछ योजनाएँ हैं, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना और किशोरियों के लिए योजनाएँ (Scheme for Adolescent Girls)।

- **कृषि उत्पादकता (Agricultural Productivity):** खाद्य सुरक्षा विभिन्न कारकों और कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के प्रयासों पर निर्भर करती है, जिससे किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में काम हो सकेगा। इसके विकास के लिए निम्न कारक हैं:

  i) बेहतर फसल उत्पादकता;

  ii) पशुधन उत्पादकता में वृद्धि;

  iii) लागत प्रभावी उत्पादन प्रक्रियाएं;

  iv) फसल की तीव्रता में वृद्धि;

  v) फसल विविधीकरण;

  vi) बेहतर कीमतें; तथा

  vii) गैर–कृषि व्यवसाय।

- **निगरानी (Monitoring):** भारत में अब तक सम्मिलित किए गए लक्ष्य की दूरी एस डी जी इंडिया इंडेक्स (SDG India Index) पर 0 से 100 के पैमाने पर 35 तक पहुंची है।

आगे की चुनौतियों हैं महिलाओं की पोषण संबंधी आवश्यकताएं, बच्चों का कम विकास, और एनीमिया; जलवायु–अनुकूली और संवहनीय कृषि (Nutritional requirements of women; stunted growth and anaemia; adaptive climate and sustainable agriculture)।

एस डी जी 3 : अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण–स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और सभी उम्र के लोगों के लिए व सभी के कल्याण को बढ़ावा देना (Good Health and Well-being – Ensure healthy lives and promote well-being for all at all ages)

भारत ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 के तहत स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में बहुत प्रगति की है। दुनिया में टीकों और दवाओं का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता होने के नाते, दुनिया भर में बीमारियों के खिलाफ इसके टीकाकरण कार्यक्रमों की प्रशंसा की गई है। एस डी जी 3 को प्राप्त करने के लिए विशेष पहलें शुरू की गई हैं। उनमें से कुछ हैं :

- **सार्वभौमिक और वहनीय स्वास्थ्य सेवा (Universal and Affordable Healthcare):** आयुश्मान भारत एक ऐसा कार्यक्रम है, जो बिना किसी जोखिम के समुदायों और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए समावेशी स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करता है। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के द्वारा 100 मिलियन कमजोर परिवारों को प्रतिवर्ष प्रति परिवार 5 लाख रुपये तक की स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने का प्रावधान है। इसमें कैशलेस (Cashless) इलाज के लिए 10 मिलियन लाभार्थी हैं।
- **वहनीय स्वास्थ्य सेवा (Affordable Healthcare):** सरकार सस्ती कीमतों पर दवाइयां उपलब्ध कराती है, जिससे मरीजों के दवाइयों पर खर्च में काफी कमी आई है।
- **मेडिकल मूलभूत सुविधाएँ (Medical Infrastructure):** जिसके लिये विश्व का डॉक्टर–मरीज अनुपात 1:1000 है, जबकि भारत में 1:1456 का अनुपात है। इस स्थिति में सुधार लाने के लिए, 2014 से, 141 नए मेडिकल कॉलेजों की मंजूरी दी गई है।
- **मातृ मृत्यु दर को कम करना (Reducing Maternal Mortality Ratio -MMR):** भारत 2014–2016 में 130 की मृत्युदर से 2015–17 में 122 तक, 6.15 प्रतिशत कम करने में सफल रहा। इसे 2030 तक 70 के लक्ष्य तक पहुंचाना है।
- **नवजात शिशु और पांच वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु को कम करना (Reducing Neo-natal and Under-five Mortality):** शिशु मृत्यु दर और नवजात शिशु की मृत्यु दर में क्रमशः 13: और 8: से अधिक की गिरावट आई है।
- **संक्रामक और गैर–संक्रामक रोगों को खत्म करना (Eliminating Communicable and Non-Communicable Diseases):** भारत में पोलियो (शून्य रोगियों), मलेरिया, टी बी और लसीका फाइलेरिया (Lymphatic Filariasis) जैसे सभी संचारी और गैर–संचारी रोगों में गिरावट देखी गई है।

भारत अपने एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर एस डी जी 3 की प्रगति में 0–100 के पैमाने पर 61वें स्थान पर रहा। इसके सामने अभी भी सभी क्षेत्रों में कई चुनौतियां हैं, जैसे :

i) वहनीयता (Affordability) और स्वास्थ्य देखभाल की लागत;

ii) स्वास्थ्य कार्यकर्ता घनत्व; तथा

iii) स्वास्थ्य जागरूकता की कमी।

स्वास्थ्य प्रणाली ने प्रभावी नियंत्रण, उपचार, निगरानी और ट्रैकिंग सिस्टम के साथ कोविड–19 महामारी का प्रबंधन करने के लिए अनुकरणीय लचीलापन दिखाया है।

एस डी जी 4 : गुणवत्ता–पूर्ण शिक्षा–समावेशी समानगुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना (Quality Education – Ensure inclusive equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all)

किसी को पीछे नहीं छोड़ना; आज के सतत् विकास के एजेंडे की यह स्पष्ट घोषणा है। इसके लिए मानव पूंजी की आवश्यकता है, ताकि सभी बच्चे माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। लक्ष्य किसी भी जाति, जेन्डर या रंग के आधार पर बिना किसी भेदभाव के गुणवत्ता–पूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। स्कूलों में बच्चों की संख्या, नामांकन और स्कूल में ही आते रहने में वृद्धि हुई है। शैक्षिक परिणामों के संदर्भ में शिक्षा की गुणवत्ता के संबंध में कुछ प्रमुख क्षेत्र विशेष रूप से, सार्वजनिक या लोक शिक्षा क्षेत्र में नीचे दिये जा रहे हैं :

- **प्रारंभिक वर्ष (Early Years)**: राष्ट्रीय प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा नीति (National Early Childhood Care and Education Policy, 2013) बच्चों के अस्तित्व, वृद्धि और विकास पर जोर देती है, ताकि वे पूर्व–प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सकें, जो कि स्कूली शिक्षा के लिए अभिन्न अंग है। आंगन बाड़ी केंद्रों और एकीकृत बाल विकास सेवा योजना के माध्यम से टीकाकरण, विकास निगरानी, पूरक पोषण, स्वास्थ्य जांच और निर्दिष्ट की गई सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

2. **प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा (Elementary and Secondary Education)**: 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (Right to Education-RTE-आर टी ई) अधिनियम, 2009 के तहत शिक्षा को एक मौलिक अधिकार बनाया गया था। यद्यपि नामांकन संख्या बढ़ने के तथा बच्चों के स्कूल छोड़ कर जाने का प्रतिशत लगातार कम हो रहा है, लेकिन उच्च माध्यमिक और उच्च शिक्षा स्तरों के लिए शुद्ध नामांकन अनुपात 51.77 प्रतिशत पर बहुत कम है। सरकार लगातार इस संख्या को बढ़ाने के साथ–साथ जेन्डर समानता लाने और स्कूलों में शौचालय और स्वच्छ पेयजल जैसी बुनियादी सेवाओं में सुधार लाने के लिए अथक (Tireless) प्रयास कर रही है।

3. **प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर बेहतर शैक्षिक परिणाम (Improved Educational Outcomes at Primary and Secondary Levels)**: शिक्षा के आधुनिकी करण के कार्यात्मक साक्षरता संख्यात्मकता; महत्त्वपूर्ण और संज्ञानात्मक सोच कौशल पर केंद्रित है; स्कूलों में प्रशिक्षित शिक्षकों और बच्चों में भाषा और गणित में प्रवीणता के स्तर में वृद्धि हुई है।

4. **उच्च शिक्षा (Higher Education)**: पिछले पांच वर्षों में विश्वविद्यालय स्तर के संस्थानों की संख्या में 37 प्रतिशत और कॉलेजों की संख्या में 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जेन्डर समता सूचकांक भी बढ़ा है। 2014–15 में 92 से बढ़कर 2018–19 में 100 हो गया है। दूसरों से पता चलता है कि महिलाओं के सीखने के अवसरों में सुधार हुआ है।

5. **कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा (Skill Development and Vocational Education)**: औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का एक मजबूत नेटवर्क युवाओं को दीर्घकालिक कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करता है। सरकारी योजना प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना सुनिश्चित करती है कि युवाओं को बेहतर आजीविका सुरक्षित करने के लिए उद्योग प्रासंगिक कौशल विकसित करने के लिए कौशल प्रशिक्षण दिया जाये।

6. **जेन्डर व विकलांगता संवेदनशील शैक्षिक सुविधाएं (Gender and Disability Sensitive Educational Facilities)**: भारत विकलांग बच्चों की ज़रूरतों के प्रति

संवेदनशील शैक्षणिक सुविधाओं की दिशा में काम कर रहा है, जैसे कि ढाल वाले रास्ते बनाना; विशेष स्वच्छता वाले कमरे; अपेक्षित शिक्षण सामग्री; जिससे कि एक समावेशी सीखने का माहौल है।

एस डी जी 4 को एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर 58 रैंक मिला है, जिसका मतलब है कि अभी लंबा रास्ता तय करना है। भारत को प्रमुख वैश्विक विश्वविद्यालय रैंकिंग के रैंक में प्रवेश करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार पर काम करना है।

एस डी जी 5 : जेन्डर समानता–जेन्डर समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और बालिकाओं को सशक्त बनाना (Gender Equality – Achieve gender equality and empower all women and girls)

भारत का संविधान जेन्डर की समानता को अपने सिद्धांतों में से एक के रूप में लेता है। भारत ने पिछले पांच वर्षों से जेन्डर अंतर को कम करने के लिए तेज गति से काम किया है। नीचे दिए गए प्रयास एस डी जी 5 को प्राप्त करने के लिए किए गए प्रयास हैं :

- **सामाजिक सुरक्षा और आजीविका (Social Protection and Livelihoods):** महिलाओं की आर्थिक भागीदारी सामाजिक सुरक्षा और आजीविका का अभिन्न अंग हैं। इसे मनरेगा (MNREGA) जैसी योजनाओं के साथ नई तकनीकों और कौशल विकास के माध्यम से संचालित किया जा रहा है, जिसमें कहा गया है कि महिलाओं को लाभकारी रोज़गार के लाभार्थियों को 33 प्रतिशत के बराबर होना चाहिए। दीन दयाल अंत्योदय योजना (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन) का उद्देश्य महिलाओं को जुटाना और संगठित करना, उनके कौशल को निर्मित करना, क्रेडिट (Credit) को आसानी से सुलभ बनाना और उन्हें स्वयं सहायता समूहों से अवगत कराना है। भारत में 10 मिलियन बैंक–लिंक्ड (Bank-linked) सहायता समूह हैं, जिसमें 87.66 प्रतिशत महिलाओं का नाम है।
- **कौशल विकास और वित्तीय समावेशन (Skilling and Financial Inclusion):** प्रधानमंत्री जन–धन योजना वित्तीय समावेशन को मजबूत करने में सहायक रही है, क्योंकि बैंक खाते खोले गए है। खातों में से 54 प्रतिशत महिलाओं के हैं। 97 प्रतिशत महिलाओं ने दीर्घकालिक कौशल विकास पाठ्यक्रमों में दाखिला लिया।
- **राजनीतिक और आर्थिक भागीदारी (Political and Economic Participation):** महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगातार बढ़ रहा है, यद्यपि यह अब भी कम है। यह 2014 के 11.4 प्रतिशत से बढ़कर 2019 में 14.4 प्रतिशत हो गया है। अधिक महिलाएं मतदान प्रक्रिया में भाग ले रही हैं और पुरुषों के मुकाबले बढ़कर 68 प्रतिशत हो गई हैं।
- **सामाजिक सशक्तीकरण (Social Empowerment):** बालिकाओं का अनुपात बालकों की तुलना में निम्न है, जो चिंता का विषय है। इस संबंध में जागरूकता लाने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (Save and Educate Girl Child) जैसे अभियान चलाये जा रहे हैं।

एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर एस डी जी की रैंक 42 है। भारत को नीचे दिए गए क्षेत्रों में अपनी कमर कसने और बेहतर कार्य करने की आवश्यकता है :

i) जेन्डर आधारित डेटा सिस्टम को मजबूत करना;

ii) ग्रामीण और शहरी महिलाओं के संबंध में संसाधनों तक पहुंच;

iii) महिलाओं की उद्यमशीलता को बढ़ावा देना; और

iv) महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में सुधार।

एस डी जी 6 : स्वच्छ जल और स्वच्छता–सभी के लिए पानी और स्वच्छता की उपलब्धता और सतत प्रबंधन निश्चित करना (Clean Water and Sanitation – Ensure availability and sustainable management of water and sanitation for all)

भारत में विश्व के ताजे जल संसाधनों का 4 प्रतिशत है, जबकि इसकी आबादी विश्व की 17 प्रतिशत है। पानी की मांग 2030 तक दोगुनी हो जाएगी, जबकि स्वच्छता की लड़ाई कई वर्षों से लड़ी जा रही है और 5 साल से कम उम्र के बच्चों की जल–जनित बीमारियों के कारण मृत्यु हो जाती है। भारत को खुले में शौच मुक्त घोषित किया गया है, लेकिन यह एक सतत् संघर्ष है। नीचे दिए गए उपाय एस डी जी 6 के संबंध में लिये जा रहे हैं:

1. **सभी के लिए सुरक्षित और सस्ता पीने का पानी (Safe and affordable drinking water for all):** जल के संचालन और इसकी चुनौतियों का पता लगाने के लिए जल शक्ति का एक नया और एकीकृत मंत्रालय गठित किया गया है। लगभग 96 प्रतिशत परिवारों के पास सुरक्षित पेय जल है। जल शक्ति अभियान जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और जल निकायों के नवीकरण के लिए काम कर रहा है।

2. **पानी की गुणवत्ता (Water quality):** केंद्रीय जल आयोग द्वारा बहु–आयामी कार्य–नीति से ग्राउंड या जमीनी और सतह के पानी के मुद्दों का सामना किया जा रहा है। प्रदूषण के कारण नदियों को साफ किया जा रहा है।

3. **सफाई व्यवस्था और स्वच्छता सभी के लिए (Sanitation and hygiene for all):** स्वच्छ भारत मिशन (स्वच्छ जल अभियान) की प्रमुख पहल ने 109 मिलियन घरेलू और सामुदायिक शौचालयों का निर्माण किया है। 2017 से 2019 तक शौचालयों की संख्या 88.8 प्रतिशत से 97.22 प्रतिशत हो गई है।

एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर भारत एस डी जी 6 के लिये 88 रैंक पर है। भारत को पानी पर स्थानीय डेटा सिस्टम, जेन्डर भेद के आधार पर शौचालयों का रखरखाव व उन तक पहुंच, स्वच्छता कर्मचारियों को पुनः कौशल सिखाना और उनके लक्षित सुधार को पूरा करना; और खुले में शौच के खिलाफ स्वच्छता व्यवहार में बदलाव लाने जैसी चुनौतियों से निपटना होगा।

एस डी जी 7 : सस्ती या वहनीय और स्वच्छ ऊर्जा–सभी के लिए सस्ती, विश्वसनीय, सतत और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना (Affordable and Clean Energy – Ensure access to affordable, reliable, sustainable and modern energy for all)

एस डी जी 7 का उद्देश्य बिजली और स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन की सार्वभौमिक पहुंच और ऊर्जा दक्षता को बढ़ाना है। सौर या सूर्य, पवन, जल और अपशिष्ट से ऊर्जा रूपांतरण जैसे अक्षय विकल्पों को संभव बनाकर भारत के ऊर्जा मिश्रण में विविधता लाई जा रही है। *प्रधानमंत्री सहज बिजली हर–घर योजना–सौभाग्य* (प्रत्येक घर को बिजली मिलती है) के तहत, भारत के 603,175 गाँवों में लगभग सभी घरों का विद्युतीकरण किया गया है। नीचे दिए गए उपाय भारत में एस डी जी 7 को प्राप्त करने के लिए किए गए उपाय हैं। संक्षेप में:

- **बिजली तक सार्वभौमिक पहुंच (Universal access to electricity):** संरचनात्मक सुधारों के माध्यम से विश्वसनीय, सस्ती और निरंतर बिजली की आपूर्ति की जा रही है, जिसमें आपूर्ति कोड और प्रदर्शन मानकों; बिजली वितरण कंपनियों के विनियमन और वित्तीय पुनर्गठन को लागू किया जा रहा है। भारत ने बिजली

मिलने के पैरामीटर पर बिजनेस करने में आसानी के लिए 2014 की 137 वीं रैंक के स्थान पर से 2019 में 22वीं रैंक के स्थान पर छलांग लगाई है।

- **नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy):** नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता 2014 से 2020 तक लगभग 75 प्रतिशत बढ़ गई है और भारत ने 2019 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा आयोजित जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन में अपनी ऊर्जा का 40 प्रतिशत नवीकरणीय होने का वादा किया है।
- **स्वच्छ ऊर्जा–पकाने योग्य ऊर्जा (Clean energy-cooking energy):** घरों में स्वच्छ खाना पकाने की ऊर्जा का प्रतिशत 2015 में 63 प्रतिशत से बढ़कर 2018 में 96 प्रतिशत हो गया है। इसे सुविधाजनक बनाने के लिए कई कार्यक्रम लागू किए गए हैं।
- **ऊर्जा दक्षता (Energy efficiency):** सरकार ने घरेलू बिजली की खपत को कम करने के लिये घरेलू उपकरणों को लक्षित करने के लिए मानकों और लेबलिंग (Labelling) को लागू किया है। कम आय वाले परिवारों को एल पी जी सिलेंडर की व्यापक आपूर्ति ने कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कम करने में काफी मदद की है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करना (Strengthening international cooperation):** भारत नवीकरणीय ऊर्जा समाधान खोजने में अग्रणी है, उदाहरण के लिए, तकनीकी सहयोग पर जर्मनी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर। भारत ने सौर ऊर्जा कार्यक्रमों को बढ़ाने के लिए अभिनव नीतियों, वित्तीय साधनों और क्षमता निर्माण के उपायों पर काम करने के लिए फ्रांस के साथ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना की है।

एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर भारत 70 वें स्थान पर है। इस लक्ष्य में इसकी चुनौतियां निम्न–कार्बन ऊर्जा सुरक्षा (low-carbon energy security) प्राप्त करना है; घरेलू प्रौद्योगिकी विकास और विनिर्माण क्षमता में वृद्धि और ऊर्जा सस्ती बनाना।

एस डी जी 8 : सभ्य कार्य और आर्थिक विकास–सभी के लिए सतत् समावेशी और सतत् आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार और सभ्य कार्य को बढ़ावा देना (Decent Work and Economic Growth – Promote sustained, inclusive and sustainable economic growth, full and productive employment and decent work for all)

भारत आर्थिक समृद्धि कार्य–नीति के प्रमुख स्तंभ के रूप में दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा उद्यमशीलता का पारिस्थितिकी तंत्र है। आर्थिक विकास सतत् विकास के प्रमुख घटकों में से एक है और भारत की अर्थव्यवस्था 2014 के बाद से 7 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, लेकिन महामारी वैश्विक अर्थव्यवस्था के समान ही है। नीचे दिए गए कदम एस डी जी 8 की उपलब्धि के संदर्भ में उठाए जा रहे हैं :

- **लघु उद्यमों के लिए वित्त–पोषण (Funding small enterprises):** स्टार्ट–अप इंडिया (Start-up India) आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है। प्रक्रिया सरलीकरण और वित्त–पोषण सहायता ने कंपनियों को खोलने में आसानी की है। लघु इकाइयों का विकास और उनकी बेहतरी की योजना (Micro Units Development and Refinance Scheme -MUDRA) के अंतर्गत योजनानुसार माइक्रों और सूक्ष्म उद्यम क्षेत्र को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।
- **संरचनात्मक सुधार (Structural reforms):** सभ्य कार्य के लक्ष्य के करीब पहुंचने के लिए कई संरचनात्मक सुधार किए गए हैं जैसे:

i) दि इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (The Insolvency and Bankruptcy Code– 2016) का अधिनियमन (ऋण चूक से संबंधित प्रक्रियाओं को सरल करता है और ऋण उपलब्धता को बढ़ाता है;

ii) कॉर्पोरेट कर को कम किया गया है; और

iii) माल और सेवा कर अधिनियम (Goods and Services Tax Act] 2016) अधिनियमित किया गया है (विनिर्माण लागत कम कर देता है और कम उपभोक्ता कीमतों के परिणाम स्वरूप अप्रत्यक्ष करों की संख्या को कम कर देता है।

- **व्यापार करने में आसानी (Ease of doing business):** भारत ने विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए अपना मेक–इन–इंडिया कार्यक्रम 2014 में शुरू किया, जिसके अंतर्गत निर्माण कार्य भारत में ही किया जाना था। इसने नौकरियों और अर्थ–व्यवस्था को बढ़ाने में मदद की है। यह नियामक प्रक्रिया को सरल बनाने और अप्रचलित कानूनों को समाप्त करने के लिए शुरू किया गया था। व्यापार करने में आसानी इंडेक्स (Ease-of-doing-business Index, 2019) में भारत 63वें स्थान पर है।
- **सभ्य कार्य और श्रम कल्याण (Decent work and labour welfare):** 40 केंद्रीय अधिनियम और कई राज्य स्तरीय अधिनियम श्रम अधिकारों को बढ़ावा देते हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कार्य–स्थल श्रमिकों के लिए सुरक्षित और विश्वसनीय हैं।
- **परिस्थितितंत्र को कौशल बनाना (Skilling ecosystem):** भारत की लगभग 33 प्रतिशत जनसंख्या युवा (15–24 वर्ष) है, इसलिए भारत ने 2015 में 'स्किल इंडिया कार्यक्रम' (Skill India Programme) शुरू किया, जो अल्पकालिक व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है। इससे मासिक मजदूरी में वृद्धि हुई है।

भारत एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर 64 स्थान पर है, जिसका तात्पर्य है कि एस डी जी 8 के बारे में चुनौतियों को दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करनी है। इस लक्ष्य में कुछ प्रमुख चुनौतियां हैं:

i) कृषि उत्पादकता में वृद्धि;

ii) रोजगार के वैकल्पिक चैनल बनाना;

iii) मौजूदा 76.9 प्रतिशत साक्षरता दर में सुधार;

iv) स्वास्थ्य संकेतक जैसे मृत्यु दर, जीवन–प्रत्याशा इत्यादि में सुधार करना; और

v) श्रम प्रणाली को औपचारिक बनाना, ताकि कानूनों के तहत श्रम सुरक्षा कानूनों में अधिक श्रमिक सम्मिलित हों।

एस डी जी 9 :उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा–लचीले बुनियादी ढांचे का निर्माण, समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा देना और नवाचार को बढ़ावा देना (Industry, Innovation and Infrastructure – Build resilient infrastructure, promote inclusive and sustainable industrialisation; and foster innovation)

भारत औद्योगीकरण को एक प्रभावी साधन मानता है, जिसके माध्यम से पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव के साथ उच्चसमृद्धि प्राप्त की जाती है। यह नवाचार और आधुनिक बुनियादी ढांचे के साथ संभव है, जो सतत् विकास सुनिश्चित करता है। भारत में एस डी जी 9 को प्राप्त करने के लिए मुख्य पहलें बहुत संक्षेप में नीचे दी जा रही है :

- **सुधार करने में आसानी (Ease of doing reforms):** 7000 से अधिक सुधार सरकारी प्रक्रियाओं को सरल बनाने और व्यवसायों पर समय और लागत के बोझ

को कम करने के लिए किए गए हैं, जिससे भारत की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (Ease of Doing Business) रैंक 2019 में 79 स्थान से 63 पर आ गया है।

- **डिज़ाइन और नवाचारी पारिस्थितिकी तंत्र (Design and innovation ecosystem):** अनुसंधान और विकास (Research and Development- R&D-आर एंड डी) पर खर्च का हिस्सा वर्ष 2015–16 में 3.52 से बढ़कर वर्ष 2017–18 में 11 प्रतिशत हो गया है। पेटेंट (Patent) किए जाने वाले डिज़ाइनों की संख्या में बड़ी संख्या में वृद्धि हुई है। भारत 44 देशों के साथ सक्रिय अनुसंधान एवं विकास सहयोग में लगा हुआ है।
- **स्टार्ट–अप पारिस्थितिकी तंत्र (Start-up ecosystem):** स्टार्ट–अप नवीन और अपरिक्षित व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन करता है, जो समय के साथ बेहद आकर्षक और उपयोगी हो जाते हैं। इन स्टार्ट–अप को पहचानने, पोषित करने और तेज़ी से बढ़ाने के लिए समर्थन की आवश्यकता है।
- **अवसंरचना विकास (Infrastructure development):** अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए अवसंरचना विकास आवश्यक है। सड़कों के निर्माण के लिए भारत ने 'भारत माता कार्यक्रम' प्रारंभ किया है, जो कि गलियारों, फीडर मार्गों, गलियारों की दक्षता में सुधार और अंतर्राष्ट्रीय कनेक्टिविटी (Connectivity) बढ़ाने की दिशा में किया गया कार्य है। इससे 2014–15 में प्रतिदिन 17 किलो मीटर सड़क की वृद्धि हुई, जो कि वर्ष 2018–19 में बढ़कर 29.7 किलो मीटर प्रतिदिन तक बढ़ा दी गई। इसके अलावा, 13 प्रमुख बंदरगाहों की कार्गो हैंडलिंग (Cargo Handling) क्षमता में 89 प्रतिशत की वृद्धि की गई।
- **दूरसंचार (Telecommunications):** संचार प्रौद्योगिकियों को कनेक्टिविटी और इंटरनेट (Connectivity and Internet) की गति के बारे में पहली श्रेणी का होना चाहिए। भारत ने 5G लॉन्च करने और इंटरनेट और टेलीफोन लिंक के लिए केबलों (Cables) के अपने नेटवर्क को बढ़ाने में कामयाबी हासिल की है।

महामारी ने उस तीव्र आर्थिक विकास पर ब्रेक लगा दिया है, जो भारत प्राप्त कर रहा था। भारत SDG इंडिया इंडेक्स पर 65 वें स्थान पर है और SDG 9 के लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए इसमें सुधार करना आवश्यक है :

i) सतत् औद्योगिक विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में वृद्धि; और

ii) औद्योगिक अपशिष्ट जल प्रबंधन को संबोधित करना।

एस डी जी 10 : कम असमानताएं–देशों के भीतर और देशों में आपस में असमानता को कम करना (Reduced Inequities – reduce inequality within and among countries)

एस डी जी 10 का उद्देश्य आय, जेन्डर, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में समानता प्राप्त करना है। यह देशों को, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में निर्णय लेने में और विकासशील देशों के लिए प्रतिनिधित्व और आवाज़ बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। भारत के पास किसी भी असमानता की जांच करने के लिए एक मजबूत कानूनी ढांचा है, लेकिन वास्तविकता लक्ष्य से कहीं दूर है। एस डी जी 10 को प्राप्त करने के लिए मुद्दों से निपटने के लिए कई पहल और कदम उठाए जा रहे हैं, जो नीचे संक्षेप में दिए गए हैं :

i) **आय वृद्धि को बढ़ावा देना (Promoting income growth):** समाज के कमजोर वर्गों के बीच आय सृजन उन्हें मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था के करीब लाएगा।

मनरेगा सुनिश्चित रोज़गार देने में मदद करता है, जबकि कई अन्य योजनाएं हैं, जिनके तहत लाभार्थियों को आधार कार्ड (विशिष्ट पहचान संख्या-Unique Identification Number) के आधार पर प्रत्यक्ष लाभ अंतरण प्रणाली के माध्यम से उनके बैंक खातों में नकद जमा प्रदान की जा रही है।

ii) **अवसरों और परिणामों की समानता को बढ़ावा देना (Promoting equality of opportunities and outcomes):** स्कूलों में ड्रॉप आउट (Dropout) दरों में कमी और जेन्डर असमानता सूचकांक पर जेन्डर असमानता में कमी आई है। जाति या जेन्डर की परवाह किए बिना सभी के लिए समान अवसर बनाने के लिए सभी के लिए शिक्षा महत्त्वपूर्ण है।

iii) **विशेषीकृत विकास कार्य मे डिज़ाइन तैयार करना (Designing specialised development programmes):** बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएं विषमताओं को कम करने के लिए समाज के कमज़ोर वर्गों के समूहों को लक्षित करने के लिये शुरू किए गए हैं, जो कि महिलाओं (Support to Training and Employment Programme for Women-STEP-एस टी ई पी) के लिए प्रशिक्षण और रोज़गार कार्यक्रम का समर्थन करते हैं तथा दिव्यांग व्यक्तियों के लिये दीनदयाल पुनर्वास योजना द्वारा इन विषमताओं को दूर करने का प्रयास करते हैं।

iv) **सामाजिक संरक्षण के उपाय (Social protection measures):** स्वास्थ्य और शिक्षा सहित सामाजिक सुरक्षा, पेंशन के रूप में, कमज़ोर वर्गों को कई योजनाओं के माध्यम से दी जा रही हैं।

v) **वित्तीय समावेशन (Financial inclusion):** 6.1 मिलियन ग्रामीण महिलाओं को 6.1 मिलियन उद्यमिता–आधारित एस एच जी में जुटाने के साथ भारत में स्व–सहायता समूहों (Self-Help Groups- SHG–एस एच जी) की संख्या बढ़ रही है।

vi) **सतत् प्रवासन और प्रवासियों के लिए एक समर्थन प्रणाली को बढ़ावा देना (Promoting sustainable migration and a migrant-friendly support system):** श्रम आपूर्ति और मांग के मात्रात्मक और गुणात्मक पहलुओं के बीच एक अंतर है। बाज़ार की अनिश्चितताओं और अब विशेष रूप से महामारी कोविड–19 के कारण प्रवासी श्रमिकों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

एस डी जी इंडिया इंडेक्स एस डी जी 10 को 64 के स्तर पर रखता है, जिसका अर्थ है कि समाज में असमानताओं को कम करने के लिए बहुत–से काम करने हैं। एस डी जी 10 को प्राप्त करने के लिए जिन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है, वे हैं :

i) जेन्डर, सामाजिक श्रेणी, आय के स्तर, धर्म और क्षेत्र के आधार पर अलग–अलग बेहतर डेटा उपलब्ध कराना;

ii) भारत में बुजुर्गों की आबादी 8.6% है, इनको सामाजिक सुरक्षा प्रक्रियाओं और उपायों की आवश्यकता को पूरा करना;

iii) माल और सेवाओं के सार्वजनिक या लोक वितरण की सेवा का बेहतर प्रशासन और कार्यान्वयन करवाना; और

iv) बेहतर ढंग से प्रबंधित शहरी बुनियादी सेवा प्रणालियाँ, विविध और पारिश्रमिक संबंधी आजीविका प्रणालियों का विकास करना।

एस डी जी 11 : सतत् शहर और समुदाय–शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और सतत बनाएं (Sustainable Cities and Communities – Make cities and human settlements inclusive, safe, resilient and sustainable)

भारत सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं, मिशनों, कार्यक्रमों और पहलों के माध्यम से जो कि एस डी जी 11 के साथ हैं, समावेशी और सतत शहरीकरण को बढ़ावा देती हैं, साथ ही भागीदारी, एकीकृत और सतत मानव निपटान योजना और प्रबंधन के लिए क्षमता विकसित कर रही है। एस डी जी 11 के लिए भारत सरकार द्वारा की जा रही पहल हैं :

- **सभी के लिए आवास (Housing for all):** प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी आवास) यथावत् स्लम पुनर्विकास, क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी (Credit Linked Subsidy) योजना और निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी सुनिश्चित करता है। वित्त वर्ष 2019–20 के अंत तक, 11.2 मिलियन आवासों की मांग में से 3.2 मिलियन आवास पूरे हो चुके हैं।
- **सतत शहरीकरण और गतिशीलता (Sustainable urbanisation and mobility):** राष्ट्रीय शहरी परिवहन नीति गैर–मोटर चालित परिवहन नवाचारों के साथ पर्यावरण के अनुकूल सतत परिवहन पर ध्यान देती है। सतत परिवहन को बढ़ावा देने के लिए चुनिंदा शहरों में सतत् शहरी परिवहन परियोजना भी लागू की जा रही है। आपदा जोखिम लचीले शहरों और ऊर्जा संरक्षण भवन कोड का पालन किया जा रहा है।

एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर एस डी जी 11 की रैंक 53 पर है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिन चुनौतियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, वे हैं :

i) शहरी स्थानीय निकायों की कमजोर क्षमता–उनकी वित्तीय स्वायत्तता, कराधान की शक्तियां और फंड उत्पत्ति (Fund Generation) क्षमताएं;

ii) वायु प्रदूषण;

iii) बड़े शहरों में बड़े पारिस्थितिक पदचिन्ह हैं; और

iv) भीड़ और परस्पर जुड़ी समस्याएं।

एस डी जी 12 : जिम्मेदार खपत और उत्पादन–सतत खपत और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करें (Responsible Consumption and Production – Ensure sustainable consumption and production patterns)

संसाधन उपयोग दक्षता, हरित रोजगार, बुनियादी सेवाओं तक समान पहुंच और गुणवत्ता–पूर्ण बेहतर जीवन, सतत उपभोग, उत्पादन के लिए अभिन्न अंग हैं। भारत ने सतत खपत और उत्पादन (के 10 वर्षीय) कार्यक्रम की रूपरेखा के ढांचे का समर्थन किया है। नीचे दी गई कुछ पहलें एस डी जी 12 को प्राप्त करने के लिए अपनायी जा रही हैं :

- **सतत खाद्य प्रणाली (Sustainable food systems):** कृषि उत्पादकता के ऊपर भूमि स्वास्थ्य कार्ड और सतत् कृषि में राष्ट्रीय मिशन जैसे कार्यक्रमों के तहत ध्यान केंद्रित किया गया है। जलवायु स्मार्ट कृषि समाधान का एक हिस्सा है, जबकि सतही और वर्षा के जल संचयन को विकसित और बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **संसाधन दक्षता (Resource efficiency):** भारत, जो कि सामग्री का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है, संसाधन दक्षता बढ़ाने और माध्यमिक कच्चे माल के उपयोग

को बढ़ाने पर ज़ोर दे रहा है, ताकि विकास को पर्यावरणीय प्रभावों से अलग कर सके। राष्ट्रीय संसाधन दक्षता नीति में *चार* महत्त्वपूर्ण तत्व शामिल हैं :

i) अभी तक प्रयोग में लाए गये संसाधनों की सतत् खपत;

ii) कुशल चक्रीय दृष्टिकोण के साथ उच्च सामग्री उत्पादकता;

iii) अपशिष्ट का न्यूनतमीकरण; और

iv) रोज़गार के अवसरों का सृजन।

- **सतत् निर्माण और इमारतें (Sustainable construction and buildings):** हरित इमारतें और निर्माण सिद्धांत अब प्रवृत्ति है और भारत ऊर्जा और पर्यावरण डिज़ाइन में नेतृत्व (LEED -Leadership in Energy and Enironmental Design) की वैश्विक सूची में तीसरे (2018 के अनुसार) रैंक पर है। सरकार ने हरित आवास मूल्यांकन (GRIHA-Green Rating for Habitat Assessment) और ऊर्जा संरक्षण भवन कोड (Energy Conservation Building Code-ECBE) के लिए ग्रीन रेटिंग की स्थापना की है।
- **सार्वजनिक अधिप्राप्ति (Public procurement):** लोक संगठनों ने अपने खरीद निर्णयों में पर्यावरण ऊर्जा दक्षता मानदंडों को नियोजित किया है।
- **सतत् पर्यटन (Sustainable tourism):** 2019 में, पर्यटन में सभी रोजगार का 8.1 प्रतिशत हिस्सा था, हालांकि, 2020 वर्ष को महामारी वर्ष के रूप में लिखा जा सकता है। भारत ने टूर ऑपरेटरों (Tour Operators), आवास और समुद्र तटों, मेडों (Backwaters) और झीलों और नदियों के लिए व्यापक सतत् पर्यटन मानदंड (Comprehensive Sustainable Tourism Criteria) का संचालन किया है;
- **अपशिष्ट प्रबंधन (Waste management):** 'एहतियात' और प्रदूषण भुगतान' के आधार पर भारत ने एक सतत् विकास ढांचा तैयार किया।

एस डी जी 12 एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर 55 की रैंक पर है। चुनौतियों और आगे बढ़ने के तरीकों में निम्नलिखित शामिल हैं :

i) सतत् आपूर्ति श्रृंखला;

ii) जनसंख्या वृद्धि के कारण सतत् अपशिष्ट प्रबंधन; और

iii) उत्पादित भोजन की बर्बादी रोकें (खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार 40 प्रतिशत भोजन बर्बाद होता है)।

एस डी जी 13 :जलवायु कार्रवाई–जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करें (Climate Action – Take urgent action to combat climate change and its impacts)

जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक 2020 में भारत को प्रति व्यक्ति उत्सर्जन और ऊर्जा के प्रयोग और 2°C से नीचे नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के आधार पर शीर्ष 10 देशों में स्थान दिया गया है। भारत निम्नलिखित उपाय कर रहा है :

i) नीतियां, रणनीतियाँ और योजना में जलवायु कार्रवाई;

ii) भारत और वैश्विक जिम्मेदारिया;

iii) स्वच्छ ऊर्जा उत्पन्न करना;

iv) उत्सर्जन की तीव्रता को कम करना; और

v) आपदा जोखिम में कमी और तैयारी में सुधार करना।

एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर एस डी जी 13, रैंक 60 पर है। भारत में निम्नलिखित मुद्दों को संबोधित करना चाहिए:

i) आपदा तन्यकता (Resilience);

ii) हरित प्रौद्योगिकी; और

iii) ऊर्जा जरूरतों को पूरा करना।

एस डी जी 14 : पानी के नीचे का जीवन–सतत् विकास के लिए महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और वहनीय या सतत उपयोग (Life below Water – Conserve and sustainably use the oceans, seas and marine resources for sustainable development)

भारत नियमित रूप से तेल, समुद्री माल, सीवेज और कचरे के साथ–साथ जहाजों द्वारा वायु प्रदूषण से संभावित प्रदूषण की निगरानी करता है। नीचे दिए गए एस डी जी 14 के संबंध में किए जा रहे प्रयास हैं :

i) समुद्री प्रदूषण की रोकथाम;

ii) मैंग्रोव और प्रवाल भित्तियों (Mangroves and Coral Reefs) का संरक्षण;

iii) समुद्री और तटीय पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करना; और

iv) सतत समुद्री मछली पकड़ने को बढ़ावा देना।

एस डी जी 14 अपने नौ–तटीय राज्यों के लिए एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर 23 से 65 के बीच रैंक करता है। चुनौतियों और आगे बढ़ने के तरीकों में निम्नलिखित प्रमुख बिंदु शामिल हैं :

i) मछली पकड़ने को बनाए रखने के लिए तट रेखा के पार बेहतर सततता;

ii) भारतीय तट के आस–पास मछली पकड़ने में स्थिरता प्रथाओं का प्रवर्धन;

iii) प्रमाणन, ऑडिटिंग और लेबलिंग (Certification, Auditing and Labelling) को उन्नत कर के मछली संचालन में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बाज़ार खोजना;

iv) उन्नत और समय परवित्त; और

v) मशीनी कृत नौकाओं को अपनाने के कारण मछुआरों की ऋण ग्रस्तता की समस्या का समाधान।

एस डी जी 15 : जमीन पर जीवन (Life on Land)

एस डी जी 15 स्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के सतत उपयोग की रक्षा, पुर्नस्थापना और बढ़ावा देने, लगातार जंगलों का प्रबंधन, विविधीकरण का सामना, भूमि क्षरण को रोकना और भूमि पुनः ठीक बनाना और जैवविविधता हानि को रोकने पर ध्यान केंद्रित करता है। सरकार ने मुख्य रूप से वनों के संरक्षण, विकास और प्रबंधन के लिए तीन रणनीतियों को अपनाया है–प्राकृतिक और कृत्रिम उत्थान, संरक्षण और प्रबंधन के माध्यम से वनीकरण। सरकार इसके प्रयासों में वृद्धि कर रही है :

i) वनों का प्रबंधन;

ii) आर्द्रभूमि (Wetlands) और जल निकायों का संरक्षण;

iii) वन्य जीवों की रक्षा करना;

iv) मरुस्थलीकरण का सामना; तथा

v) जैवविविधता का संरक्षण।

एस डी जी 15 का इंडिया इंडेक्स पर रैंक 66 है। भारत को हरित औद्योगीकरण के विकल्प जैसे क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही भू–पारिस्थितिक क्षेत्र के लिए कौशल विकास; जीव प्रजातियों (Faunal) की रक्षा के लिए दीर्घकालिक कार्यक्रम भी।

एस डी जी 16 : शांति, न्याय और मजबूत संस्थान (Peace, Justice and Strong Institutions)

एस डी जी 16 सतत् विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समाजों के संवर्धन, सभी के लिए न्याय तक पहुंच का प्रावधान और सभी स्तरों पर प्रभावी, जवाबदेह और समावेशी संस्थानों के निर्माण पर ध्यान देता है। भारत इसके लिए निम्नलिखित क्षेत्रों में काम कर रहा है :

i) हिंसा को कम करना;

ii) न्याय तक पहुंच;

iii) जवाबदेह और पारदर्शी संस्थाएं;

iv) शासन में नैतिकता; तथा

v) सभी के लिए कानूनी पहचान।

एस डी जी इंडिया इंडेक्स पर एस डी जी 16 के लिये भारत 72 रैंक पर है। सरकार को अपराधों और हिंसा से संबंधित आंकड़ों के उन्नयन सभी क्षेत्रों में समाज का डिजिटीकरण (Digitisation); और डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के क्षेत्रों में अधिक सक्रिय कदम उठाने चाहिए।

एस डी जी 17 : लक्ष्यों के लिए साझेदारी (Partnerships for the Goals)

भारत सतत् विकास के लिए वैश्विक साझेदारी के कार्यान्वयन और पुनरोद्धार के साधनों को मज़बूत करने की दिशा में काम कर रहा है। घ्यान–केन्द्रण के क्षेत्र हैं :

i) घरेलू संसाधन जुटाने को (Mobilisation) बढ़ाना;

ii) लोक व्यय में सुधार;

iii) उद्यमिता और निजी क्षेत्र को बढ़ावा देना;

iv) दक्षिण–दक्षिण सहयोग को मज़बूत करना;

v) गठबंधन आधारित दृष्टिकोण; और

vi) डेटा में सुधार, निगरानी और जवाबदेही।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. सतत् विकास लक्ष्य क्या हैं ? एस डी जी 1 से 5 के संबंध में भारत में उन्हें प्राप्त करने के लिए जो प्रयास हो रहे हैं, उनकी चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2. एस डी जी 6 : स्वच्छ जल और स्वच्छता पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

.....

.....

.....

.....

3. भारत के विशेष संदर्भ में एस डी जी 7, 8, 9 और 10 के बारे में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

4. भारत के संदर्भ में 11 से 17 तक एस डी जी पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.4 निष्कर्ष

स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था की समस्याओं से निपटने के लिए एक महामारी–ग्रस्त विश्व में एस डी जी और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सहयोग 2030 की ओर विश्व स्तर पर एक साथ बढ़ने के लिए आवश्यक है, हालांकि प्रत्येक देश को विशेष रूप से व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रौद्योगिकी और विज्ञान प्रतिदिन नई छलांग लगा रहे हैं, जो किसी अग्रणीय प्रौद्योगिकियों के समुचित संचालन के लिए सरकारों की संस्थागत क्षमताओं के निर्माण की आवश्यकता को बढ़ा रहे हैं। भारत के सिद्धांत वसुधैव कुटुम्बकम को, जिसका अर्थ है कि दुनिया एक है, एस डी जी में दर्शाया गया है। 'किसी को पीछे नहीं छोड़ना' के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, भारत में एस डी जी के कार्यान्वयन और हस्तक्षेप महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। इसे स्वीकार करते हुए, देश ने जान–बूझ कर सभी प्रमुख हितधारकों को साथ में लेकर 'संपूर्ण सरकार' से 'whole of government' 'संपूर्ण समाज के दृष्टिकोण' 'whole of society' के प्रतिमान को अपनाया है। इस इकाई ने सतत विकास लक्ष्यों पर विस्तार से चर्चा की।

4.5 शब्दावली

एंथ्रोपोसीन युग (Anthropocene Age): यह एंथ्रोपोसीन युग है, यानी मानव द्वारा संचालित ग्रह। मानव गतिविधि वैश्विक पारिस्थिति की तंत्र कार्यों को आगे बढ़ा रही है, जिसके परिणामस्वरूप आपदाएं हो सकती हैं।

कार्यवाई के लिए दशक (Decade for Action): एस डी जी के बारे में 2030 के अंत की तारीख से पहले दुनिया ने आखिरी दशक में प्रवेश किया है, इसलिए इसे ''कार्यवाई के लिए दशक'' कहा गया है।

दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना (Deendayal Disabled Rehabilitation Scheme): इस मंत्रालय की छत्रछाया में केंद्रीय क्षेत्र की योजना, जिसे ''विकलांग व्यक्तियों के लिए स्वैच्छिक कार्यवाही को बढ़ावा देने की योजना'' कहा जाता है, जिसको 1.4.2013 में संशोधित किया गया था। इसका नाम बदलकर ''दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना (DDRS)'' कर दिया गया। हालांकि, 2003 में योजना का संशोधन होने पर, 1999 के लागत मानदंड अपरिवर्तित रहे। मूल्य वृद्धि की भरपाई के लिए लागत मानदंडो में संशोधन अनिवार्य हो गया है। औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index–CPI) 1999 से 2007 तक 38 प्रतिशत बढ़ा है। मानदेय, आवर्ती वस्तुओं और व्यय की गैर–आवर्ती मदों के लिए लागत मानदंडों को

संशोधित करने का निर्णय लिया गया है। इस योजना को भी इस सीमा तक संशोधित किया गया है कि मॉडल परियोजनाओं की सीमा–क्षेत्र का विस्तार हुआ है।

इस योजना के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- समान अवसर, समानता, सामाजिक न्याय और विकलांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के लिए सक्षम वातावरण बनाना।
- विकलांग लोगों (समान अवसर और अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम 1995 के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए स्वैच्छिक कार्यवाही को प्रोत्साहित करना।

एकीकृत बाल विकास सेवा योजना (Integrated Child Development Services-ICDS): निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ शुरू की गई थीः

i) 0–6 वर्ष के आयु–वर्ग के बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार करना;

ii) बच्चे के उचित मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और सामाजिक विकास की नीव रखना;

iii) मृत्यु दर, रोगों की संख्या, कुपोषण और स्कूल छोड़ने की घटनाओं को कम करना;

iv) बाल विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न विभागों के बीच नीति और कार्यान्वयन का प्रभावी समन्वय प्राप्त करना; और

v) उचित पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से बच्चे के सामान्य स्वास्थ्य और पोषण संबंधित जरूरतों को पूरा करने के लिए मां की क्षमता में वृद्धि करना।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, छह सेवाओं का एक पैकेज है, अर्थातः

i) पूरक पोषण

ii) टीकाकरण;

iii) स्वास्थ्य जांच;

iv) परामर्श सेवाएं;

v) पूर्व–विद्यालय गैर औपचारिक शिक्षा; और

vi) पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा।

मनरेगा (Mahatma Gandhi National Rural Employment Gaurantee Act-MGNREGA): इसे ''ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सुरक्षा बढ़ाने के उद्देश्य से वित्तीय वर्ष में कम से कम 100 दिनों की गारंटी मजदूरी रोजगार प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था, जिसके व्यस्क सदस्य अकुशल शारीरिक कार्य करने के लिए स्वेच्छा से काम करते हैं। मनरेगा का अन्य उद्देश्य स्थायी संपत्ति (जैसे सडकें, नहरें, तालाब कुएं) बनाना है। आवेदक के निवास के 5 किलोमीटर के भीतर रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा, और न्यूनतम मजदूरी का भुगतान किया जाएगा। यदि आवेदन करने के 15 दिनों के भीतर काम नहीं दिया जाता है, तो आवेदक बेरोजगारी भत्ते के हकदार हैं। इस प्रकार, मनरेगा के तहत रोजगार एक कानूनी अधिकार है।

राष्ट्रीय खाद्य् सुरक्षा अधिनियम (National Food Security Act) 2013: भारत में खाद्य् सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मुख्य रूप से लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (Targeted Public Distribution System–TPDS) के माध्यम से लगभग दो–तिहाई परिवारों के लिए आर्थिक सहायता–प्राप्त कीमतों पर अनाज उपलब्ध करा रहे हैं।

प्रधानमंत्री जन धन योजना (Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana -PMJDY): सरकार इस योजना के साथ वित्तीय समावेशन की रूपरेखा स्थापित करने के लिए

सामने आई, जो लोगों को औपचारिक ऋण प्रणाली में जाने के लिए प्रोत्साहित करती है। जीरो बैलेंस (Zero Balance) खाते का प्रावधान और रु पे कार्ड (Ru Pay Card) जैसी सुविधाओं के लिए निम्न वर्ग के लोगों के बीच काफी लोकप्रियता बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री जन धन योजना के उद्देश्य हैं:

- देश के सभी घरों को बैंकिंग सुविधाओं से आवरित (Cover) करना, और प्रत्येक परिवार के लिए एक बैंक खाता खोलना।
- नागरिकों को औपचारिक ऋण का एकीकृत ढांचा प्रदान करना।
- एक ही स्थान पर प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (Direct Benefit Transfer -DBT) मोड के माध्यम से सब्सिडी का हस्तांतरण सुनिश्चित करना।
- बिना बैंक की जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बुनियादी बचत बैंक खाता, प्रेषण सुविधा, बीमा और पेंशन जैसी विभिन्न प्रकार की बैंकिंग सेवाओं की पेशकश करना।
- जनसंख्या के लिए वित्तीय सुरक्षा के जाल का विस्तार करना।
- राष्ट्र के भीतर वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना।
- लोगों को सूक्ष्म बीमा सुविधाएं प्रदान करना।
- ओवरड्राफ्ट खातों में कमियों को दूर करने के लिए क्रेडिट गारंटी फंड बनाना।
- सरकार और बैंक रहित जनसंख्या के बीच प्रत्यक्ष संबंध करना, इस प्रकार साहूकारों और बिचौलियों की आवश्यकता को समाप्त करना।
- व्यक्तियों के बीच बचत करने की आदत को बढ़ावा देना।
- लोगों को देश की बैंकिंग प्रणाली द्वारा दी जा रही वित्तीय सेवाओं के बारे में बताने के लिए वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम की यात्रा प्रांरभ करना।
- प्रत्येक गांव से 5 कि.मी. की दूरी के भीतर बैंकिंग सेवाएं व बैंकिंग बाजार उपलब्ध करवाना।
- सस्ती कीमतों पर वित्तीय उत्पादों की पहुंच सुनिश्चित करना।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana-PMFBY): नई फसल बीमा योजना ''एक राष्ट्र– एक योजना'' (**One nation- One scheme**) विषय के अनुरूप है। इसमें पिछली सभी योजनाओं की सर्वोत्तम विशेषताओं को शामिल किया गया है और साथ ही, पिछली सभी कमियों/कमजोरियों को दूर किया गया है। PMFBY मौजूदा दो योजनाओं राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना (National Agricultural Insurance Scheme-NAIS) के साथ–साथ संशोधित NAIS की जगह लेगा। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के उद्देश्य हैं:

- प्राकृतिक आपदाओं, कीटों और बीमारियों के परिणाम स्वरूप किसी भी अधिसूचित फसल के खराब होने की स्थिति में किसानो को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- किसानों की खेती में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए उनकी आय को स्थिर करना।
- किसानों को नवीन और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- कृषि क्षेत्र में ऋण का प्रवाह सुनिश्चित करना।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (Pradhan Mantri Garib Kalyan Yojana): इस वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कराधान कानून (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2016 के अन्य प्रावधानों के साथ शुरू किया गया था। यह वित्त मंत्रालय के तहत 17 दिसंबर 2016 से लागू हुआ था।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana): इस योजना के व्यापक दृष्टि देश के सभी कृषि खेतों में सुरक्षात्मक सिंचाई के कुछ साधनों तक पहुंच सुनिश्चित करना है व 'प्रतिबूंद अधिक फसल का उत्पादन करना है। इस प्रकार बहुत वांछित ग्रामीण समृद्धि लाना है। योजना के उद्देश्य हैं:

- क्षेत्रीय स्तर पर सिंचाई में निवेश का अभिसरण प्राप्त करना (जिला स्तर की तैयारी और, यदि आवश्यक हो, उप–जिला स्तरीय जल उपयोग योजनाएं)।
- खेत पर पानी की भौतिक पहुंच बढ़ाना और सुनिश्चित सिंचाई (हर खेत को पानी) के तहत खेती–योग्य क्षेत्र का विस्तार करना।
- उपयुक्त प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं के माध्यम से पानी का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए जल स्रोत, वितरण और इसके कुशल उपयोग का एकीकरण।
- अपव्यय को कम करने और अवधि और सीमा दोनों में उपलब्धता बढ़ाने के लिए कृषि जल उपयोग दक्षता में सुधार।
- यथार्थता सिंचाई और अन्य जल बचत प्रौद्योगिकियों को अपनाने में वृद्धि (प्रति बूंद अधिक फसल)।
- जल भृतों के पुनः भरण को बढ़ाना और स्थायी जल संरक्षण प्रथाओं को शुरू करना।
- मिट्टी और जल संरक्षण, भूजल के पुनः जनन, अपवाह को रोकने, आजीविका के विकल्प उपलब्ध कराने और अन्य NRM गतिविधियों की दिशा में जल विभाजन दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए वर्षा सिंचित क्षेत्रों का एकीकृत विकास सुनिश्चित करना।
- किसानों और जमीन स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए जल संचयन, जल प्रबंधन और फसल संरेखण से संबंधित विस्तार गतिविधियों को बढ़ावा देना।
- परि–शहरी (Peri-urban) कृषि के लिए उपचारित नगरपालिका अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग की व्यवहार्यता का पता लगाना।
- सिंचाई में अधिक से अधिक निजी निवेश आकर्षित करना।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (Pradhan Mantri Matru Vandana Yojana-PMMVY): यह एक मातृत्व लाभ कार्यक्रम है, जिसे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अनुसार, देश के सभी जिलों के निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ लागू किया गया है:

- नकद प्रोत्साहन राशि के रूप में वेतन हानि के लिए आंशिक मुआवजा प्रदान करना, ताकि महिला पहले जीवित बच्चे के जन्म से पूर्व और बाद में पर्याप्त आराम कर सके।
- प्रदान किए गए नकद प्रोत्साहन राशि से गर्भवती महिलाओं और स्तन–पान कराने वाली माताओं (Pregnant Women and Lactating Mothers-PW&LM) में बेहतर स्वास्थ्य चाहने वाले व्यवहार को बढ़ावा मिलेगा।

4.6 संदर्भ लेख

WHO. (2019). Millennium Development Goals. Retrieved from https://www.who.int/topics/millennium_development_goals/en/

NITI Aayog. (2020). India VNR, Decade of Action – Taking SGDs from Global to Local.New Delhi, India: NITI Aayog.

The Hunger Project. (2015). Open Working Group on Sustainable Development Goals. Retrieved from https://www.who.int/topics/millennium_development_goals/en/

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बाते शामिल होनी चाहियेः**
   - शून्य लक्ष्य
   - सार्वभौमिक लक्ष्य
   - व्यापकता
   - भूख
   - समावेशिता
   - भूख और गरीबी
   - वित्त उपल्बध कराना
   - शांति स्थापित करना
   - डेटा क्रांति
   - श्रेष्ठ शिक्षा

बोध प्रश्न 2

1. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहियेः**
   - एस डी जी 1 : कोई गरीबी नहीं–गरीबी अपने सभी रूपों में और हर जगह समाप्त हो।
   - एस डी जी 2 : शून्य भूख–भूख समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना, पोषण में सुधार करना और सतत कृषि को बढ़ावा दें।
   - एस डी जी 3 : अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण–स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करें और सभी उम्र के लोगों के लिए कल्याण को बढ़ावा दें।
   - एस डी जी 4 : गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा–समावेशी समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करें और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा दें।
   - एस डी जी 5 : जेन्डर समानता–जेन्डर समानता प्राप्त करें और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाए।

2. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहियेः**
   - एस डी जी 6 : स्वच्छ जल और स्वच्छता–सभी के लिए पानी और स्वच्छता की उपलब्धता और स्थायी प्रबंधन सुनिश्चित करना।

- सभी के लिए सुरक्षित और वहनीय पीने का पानी
- पानी की गुणवत्ता
- सभी के लिए स्वच्छता

3. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिये:**

- एस डी जी 7 : सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा–सभी के लिए सस्ती, विश्वसनीय, सतत और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
- एस डी जी 8 : काम और आर्थिक विकास–निरंतर, समावेशी और सतत् आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार और सम्मान पूर्ण काम को बढ़ावा देना।
- एस डी जी 9 :उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा–लचीले बुनियादी ढांचे का निर्माण, समावेशी और सतत औद्योगीकरण और नवाचार को बढ़ावा देना।
- एस डी जी 10 : कम असमानताएं–देशों के भीतर और आपस की असमानता को कम करना।

4. **आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिये:**

- एस डी जी 11 : सतत शहर और समुदाय–शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और सतत बनाएं।
- एस डी जी 12 : जिम्मेदार खपत और उत्पादन–सतत खपत और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करें।
- एस डी जी 13 : जलवायु कार्रवाई–जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करें।
- एस डी जी 14 : पानी के नीचे का जीवन–सतत् विकास के लिए महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और सावधानी से उपयोग करें।
- एस डी जी 15 : जमीन पर जीवन
- एस डी जी 16 : शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएं
- एस डी जी 17 : लक्ष्यों के लिए साझेदारी